7. दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह सन्ध्या-सुन्दरी परी सी
धीरे-धीरे-धीरे।
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है ?
(a) उपमा (b) रूपक
(c) मानवीकरण (d) इनमें से कोई नहीं
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

8. तीन बेर खाती थी वे तीन बेर खाती हैं में कौन-सा अलकार है ?
(a) अनुप्रास (b) श्लेष (c) यमक (d) अन्योक्ति
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

9. अब अलि रही गुलाब में, अपत कटीली डार में कौन-सा अलंकार है ?
(a) उपमा (b) उत्प्रेक्षा
(c) अन्योक्ति (d) अतिशयोक्ति
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

10. अति मलीन वृषभानुकुमारी।
अधोमुख रहति, उरध नहि चितवत, ज्यों गथ हारे थकित जुआरी।
छूटे चिहुर बदन कुम्हिलानो, ज्यों नलिनी हिमकर की मारी॥
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है ?
(a) अनुप्रास (b) उत्प्रेक्षा (c) रूपक (d) उपमा
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

11. नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल।
अली कली ही सौं बिंध्यौं, आगे कौन हवाल॥
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा अलकार है ?
(a) रूपक (b) विशेषोक्ति
(c) अन्योक्ति (d) अतिशयोक्ति
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

12. कबिरा सोई पीर है, जे जाने पर पीर।
जे पर पीर न जानई, सो काफिर बेपीर॥
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?
(a) यमक (b) रूपक (c) पुनरुक्ति (d) श्लेष
(बैंक परीक्षा, 2002)

13. संदेसनि मधुवन-कूप भरे में कौन-सा अलंकार है ?
(a) रूपक (b) वक्रोक्ति
(c) अन्योक्ति (d) अतिशयोक्ति *(रेलवे, 2002)*

14. पट-पीत मानहुं तड़ित रुचि, सुचि नौमि जनक सुतावरं में कौन-सा अलंकार है ?
(a) उपमा (b) रूपक
(c) उत्प्रेक्षा (d) उदाहरण *(रेलवे, 2002)*

15. रहिमन जो गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारै लगै, बढ़े अंधेरो होय॥
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा अलकार है ?
(a) उपमा (b) रूपक
(c) यमक (d) श्लेष
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

16. ध्वनि-मयी कर के गिरि-कंदरा,
कलित-कानन-केलि-निकुंज को।
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है ?
(a) छेकानुप्रास (b) वृत्त्यनुप्रास
(c) लाटानुप्रास (d) यमक *(रेलवे, 2003)*

17. कुन्द इन्दु सन देह, उमा रमन वरुण अमन में कौन-सा अलंकार है ?
(a) श्लेष (b) उपमा (c) अनुप्रास (d) रूपक
(बी० एड०, 2004)

18. जहाँ बिना कारण के कार्य का होना पाया जाए वहाँ कौन-सा अलंकार होता है ?
(a) विरोधाभास (b) विशेषोक्ति
(c) विभावना (d) भ्रांतिमान *(बी० एड०, 2004)*

19. जहाँ उपमेय में अनेक उपमानों की शंका होती है वहाँ कौन-सा अलंकार होता है ?
(a) यमक (b) श्लेष (c) भ्रांतिमान (d) संदेह
(बी० एड०, 2005)

20. भारत के सम भारत है में कौन-सा अलंकार है ?
(a) रूपक (b) अनन्वय (c) उपमा (d) यमक
(बी० एड०, 2005)

21. पूत कपूत तो क्यों धन संचय।
पूत सपूत तो क्यों धन संचय॥
प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा अलकार है ?
(a) छेकानुप्रास (b) लाटानुप्रास
(c) वृत्त्यनुप्रास (d) अन्त्यानुप्रास
(बी० एड०, 2005)

22. उसी तपस्वी से लंबे थे, देवदार दो चार खड़े।
इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ?
(a) अनुप्रास (b) प्रतीप (c) रूपक (d) यमक
(बी० एड०, 2005)

23. "बिनु पद चलै सुनै बिनु काना।
कर बिनु कर्म करै विधि नाना॥"
इस चौपाई में अलंकार है—
(a) विषम (b) विभावना (c) असंगति (d) तद्गुण
(राजस्व निरीक्षक, 2010)

24. जहाँ उपमेय का निषेध करके उपमान का आरोप किया जाता है, वहाँ होता है—
(a) रूपक अलंकार (b) उत्प्रेक्षा अलंकार
(c) अपह्नुति अलंकार (d) उपमा अलंकार
(राजस्व निरीक्षक, 2010)

25. किस पंक्ति में अपह्नुति अलंकार है ?
(a) इसका मुख चंद्र के समान है
(b) चंद्र इसके मुख के समान है
(c) इसका मुख ही चंद्र है
(d) यह चंद्र नहीं मुख है *(राजस्व निरीक्षक, 2010)*

26. निम्नलिखित में कौन-सा शब्दालंकार नहीं है ?
(a) श्लेष (b) वीप्सा (c) उपमा (d) वक्रोक्ति
(नेट/जे.आर.एफ., 2015)

उत्तरमाला

1. (a)	2. (a)	3. (c)	4. (c)	5. (b)	6. (a)	7. (a)	8. (c)	9. (c)	10. (d)	11. (c)	12. (a)
13. (d)	14. (a)	15. (d)	16. (b)	17. (b)	18. (c)	19. (d)	20. (b)	21. (b)	22. (b)	23. (b)	24. (c)
25. (d)	26. (c)										

★★★

हिन्दी साहित्य : मुख्य तथ्य
(Hindi Literature : Main Facts)

22

काव्य

आदिकाल (650 ई०–1350 ई०)

- हिन्दी साहित्येतिहास के विभिन्न कालों के नामकरण का प्रथम श्रेय जार्ज ग्रियर्सन को है।
- हिन्दी साहित्येतिहास के आरंभिक काल के नामकरण का प्रश्न विवादास्पद है। इस काल को ग्रियर्सन ने 'चारण काल', मिश्र बंधु ने 'प्रारंभिक काल', महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'बीज वपन काल', शुक्ल ने 'आदिकाल: वीर गाथाकाल', राहुल सांकृत्यायन ने 'सिद्ध—सामंत काल', राम कुमार वर्मा ने 'संधिकाल' व 'चारण काल', हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'आदिकाल' की संज्ञा दी है।
- आदिकाल में तीन प्रमुख प्रवृत्तियाँ मिलती हैं—धार्मिकता, वीरगाथात्मकता व शृंगारिकता।
- प्रबंधात्मक काव्यकृतियाँ : रासो काव्य, कीर्तिलता, कीर्तिपताका इत्यादि।
  मुक्तक काव्यकृतियाँ : खुसरो की पहेलियाँ, सिद्धों-नाथों की रचनाएँ, विद्यापति की पदावली इत्यादि।
- विद्यापति ने 'कीर्तिलता' व 'कीर्तिपताका' की रचना अवहट्ट में और 'पदावली' की रचना मैथिली में की।
- आदिकाल में दो शैलियाँ मिलती हैं डिंगल व पिंगल। डिंगल शैली में कर्कश शब्दावलियों का प्रयोग होता है जबकि पिंगल शैली में कर्णप्रिय शब्दावलियों की। कर्कश शब्दावलियों के कारण डिंगल शैली अलोकप्रिय होती चली गई। जबकि कर्णप्रिय शब्दावलियों के कारण पिंगल शैली लोकप्रिय होती चली गई और आगे चलकर इसका ब्रजभाषा में विगलन हो गया।
- 'पृथ्वी राज रासो' कथानक रूढ़ियों का कोश है। *[कथानक रूढ़ि (Motif)—एक प्रकार का प्रतीक जिसके साथ एक पूरी की पूरी कथा जुड़ी हो।]*
- अपभ्रंश में 15 मात्राओं का एक 'चउपई' छंद मिलता है। हिन्दी ने चउपई में एक मात्रा बढ़ाकर 'चौपाई' के रूप में अपनाया अर्थात् चौपाई 16 मात्राओं का छंद है।
- आदिकाल में 'आल्हा' छंद *(31 मात्रा)* बहुत प्रचलित था। यह वीर रस का बड़ा ही लोकप्रिय छंद था।
- दोहा, रासा, तोमर, नाराच, पद्धति, पज्झटिका, अरिल्ल आदि छंदों का प्रयोग आदिकाल में मिलता है।
- चौपाई के साथ दोहा रखने की पद्धति 'कडवक' कहलाती है। कडवक का प्रयोग आगे चलकर भक्ति काल में जायसी और तुलसी ने किया।
- अमीर खुसरो को 'हिन्द-इस्लामी समन्वित संस्कृति का प्रथम प्रतिनिधि' कहा जाता है।
- आदिकालीन साहित्य के तीन सर्वप्रमुख रूप हैं—सिद्ध-साहित्य, नाथ-साहित्य एवं रासो साहित्य।
- सिद्धों द्वारा जनभाषा में लिखित साहित्य को 'सिद्ध-साहित्य' कहा जाता है। यह साहित्य बौद्ध धर्म के वज्रयान शाखा का प्रचार करने हेतु रचा गया।
- सिद्धों की संख्या 84 मानी जाती है। तांत्रिक क्रियाओं में आस्था तथा मंत्र द्वारा सिद्धि चाहने के कारण इन्हें 'सिद्ध' कहा गया। 84 सिद्धों में सरहपा, शबरपा, कण्हपा, लुइपा, डोम्भिपा, कुक्कुरिपा आदि प्रमुख हैं। सरहपा प्रथम सिद्ध है। इन्हें सहजयान का प्रवर्तक कहा जाता है।
- सिद्ध कवियों की रचनाएँ दो रूपों में मिलती हैं 'दोहा कोष' और 'चर्यापद'। सिद्धाचार्यों द्वारा रचित दोहों का संग्रह 'दोहा कोष' के नाम से तथा उनके द्वारा रचित पद 'चर्या पद' के नाम से प्रसिद्ध हैं।
- सिद्ध-साहित्य की भाषा को अपभ्रंश एवं हिन्दी के संधि काल की भाषा मानी जाती है इसलिए इसे 'संधा' या 'संध्या' भाषा का नाम दिया जाता है।
- 10वीं सदी के अंत में शैव धर्म एक नये रूप में आरंभ हुआ जिसे 'योगिनी कौल मार्ग', 'नाथ पंथ' या 'हठयोग' कहा गया। इसका उदय बौद्ध-सिद्धों की वाममार्गी भोग-प्रधान योगधारा की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ।
- अनुश्रुति के अनुसार 9 नाथ हैं—आदि नाथ *(शिव)*, जलंधर नाथ, मछंदर नाथ, गोरखनाथ, गैनी नाथ, निवृति नाथ आदि। लेकिन नाथ-साहित्य के प्रवर्तक गोरखनाथ ही थे।
- बौद्ध-सिद्धों की वाणी में पूर्वीपन का पुट है तो शैव-नाथों की वाणी में पश्चिमीपन का।
- 'रासो' शब्द की व्युत्पत्ति को लेकर विद्वानों में मतभेद है।
- रासो-काव्य को मुख्यत: 3 वर्गों में बाँटा जाता है—
  1. वीर गाथात्मक रासो काव्य : पृथ्वीराज रासो, हम्मीर रासो, खुमाण रासो, परमाल रासो, विजयपाल रासो।
  2. शृंगारपरक रासो काव्य : बीसल देव रासो, संदेश रासक, मुंज रासो।
  3. धार्मिक व उपदेशमूलक रासो काव्य : उपदेश रसायन रास, चन्दनबाला रस, स्थूलिभद्र रास, भरतेश्वर बाहुबलि रास, रेवन्तगिरि रास।
- पृथ्वीराज रासो (चंदबरदाई) : रासो काव्य परंपरा का प्रतिनिधि व सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ, आदिकाल का सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रंथ, काव्य-रूप—प्रबंध, रस—वीर व शृंगार, अलकार—अनुप्रास व यमक (चंदबरदाई के प्रिय), छंद—विविध छंद (लगभग 68), गुण—ओज व माधुर्य, भाषा—राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा, शैली—पिंगल।
- पृथ्वीराज रासो में चौहान शासक पृथ्वीराज के अनेक युद्धों और विवाहों का सजीव चित्रण हुआ है।
- पृथ्वीराज रासो एक अर्द्धप्रामाणिक रचना है।
- परमाल रासो (जगनिक) : मूल रूप से उपलब्ध नहीं है लेकिन इसका एक अंश उपलब्ध है जिसे 'आल्हा खंड' कहा जाता है। इसका छंद आल्हा या वीर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

- संदेश रासक (अब्दुल रहमान) — एक विरह काव्य है।
- रासो काव्य की सामान्य विशेषताएँ 1. ऐतिहासिकता व कल्पना का सम्मिश्रण 2 प्रशस्ति काव्य 3 युद्ध व प्रेम का वर्णन 4 वैविध्यपूर्ण भाषा 5 डिंगल पिंगल शैली का प्रयोग 6 छंदों का बहुमुखी प्रयोग
- *चंदबरदाई* दिल्ली के चौहान शासक पृथ्वी राज-III चौहान के सामंत व राजकवि थे।
- *अमीर खुसरो* का मूल नाम अबुल हसन था। दिल्ली के सुल्तान जलालुद्दीन खल्जी ने उनकी कविता से खुश होकर उन्हें 'अमीर' का खिताब दिया और 'खुसरो' उनका तखल्लुस (उपनाम) था। इस प्रकार वे बन गए—अमीर खुसरो। बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे अरबी, फारसी, तुर्की, संस्कृत एवं हिन्दी के विद्वान थे। उन्होंने फारसी में ऐतिहासिक साहित्यिक पुस्तकें लिखी, ब्रजभाषा में गीतो कव्वालियों की रचना की और खड़ी बोली में पहेलियाँ-मुकरियाँ बुझाई। संगीत के क्षेत्र में उन्हें कव्वाली, तराना गायन शैली एवं सितार वाद्य यंत्र का जन्मदाता माना जाता है।
- *विद्यापति* बिहार के दरभंगा जिले के बिसफी गाँव के रहनेवाले थे। उन्हें मिथिला के महाराजा कीर्ति सिंह और शिव सिंह का संरक्षण प्राप्त था।
- जिस रचना के कारण विद्यापति 'मैथिल कोकिल' कहलाए वह उनकी मैथिली में रचित 'पदावली' है। यह मुक्तक काव्य है और इसमें पदों का संकलन है। पूरी पदावली भक्ति व शृंगार की धूपछांही है।

प्रसिद्ध पंक्तियाँ

- बारह बरस लौं कूकर जीवै अरु तेरह लौं जिये सियार/बरस अठारह क्षत्रिय जीवै आगे जीवन को धिक्कार —*जगनिक*
- भल्ला हुआ जो मारिया बहिणी म्हारा कंतु/लज्जेजंतु वयस्सियहु जइ भग्गा घरु एंतु *(अच्छा हुआ जो मेरा पति युद्ध में मारा गया; हे बहिन! यदि वह भागा हुआ घर आता तो मैं अपनी समवयस्काओं (सहेलियों) के सम्मुख लज्जित होती।)* —*हेमचंद्र*
- बालचंद विज्जावइ भाषा/दुनु नहीं लग्गै दुज्जन भाषा *(जिस तरह बाल चंद्रमा निर्दोष है उसी तरह विद्यापति की भाषा; दोनों का दुर्जन उपहास नहीं कर सकते)* —*विद्यापति*
- षटभाषा पुराणं च कुराणंग कथित मया *(मैंने अपनी रचना षटभाषा में की है और इसकी प्रेरणा पुराण व कुरान दोनों से ली है)* —*चंदबरदाई*
- 'मैंने एक बूंद चखी है और पाया है कि धाटियों में खोया हुआ पक्षी अब तक महानदी के विस्तार से अपरिचित था' *(संस्कृत साहित्य के संबंध में)* —*अमीर खुसरो*
- पंडिअ सअल सत्थ वक्खाणअ/देहहिं बुद्ध बसन्त न जाणअ। *[पंडित सभी शास्त्रों का बखान करते हैं परन्तु देह में बसने वाले बुद्ध (ब्रह्म) को नहीं जानते।]* —*सरहपा*
- जोइ जोइ पिण्डे सोई ब्रह्माण्डे *(जो शरीर में है वही ब्रह्माण्ड में है)* —*गोरखनाथ*
- गगन मंडल में ऊँधा कूवा, वहाँ अमृत का वासा/सगुरा होइ सु भरि भरि पीवै, निगुरा जाइ पियासा —*गोरखनाथ*
- काहे को बियाहे परदेस सुन बाबुल मोर *(गीत)*—*अमीर खुसरो*
- बड़ी कठिन है डगर पनघट की *(कव्वाली)*—*अमीर खुसरो*
- छाप तिलक सब छीनी रे मोसे नैना मिलाइके *(पूर्वी अवधी में रचित कव्वाली)* —*अमीर खुसरो*
- एक थाल मोती से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा/चारो ओर वह थाल फिरे, मोती उससे एक न गिरे *(पहेली)* —*अमीर खुसरो*
- नित मेरे घर आवत है रात गये फिर जावत है/फंसत अमावस गोरी के फंदा हे सखि साजन, ना सखि, चंदा *(मुकरी/कहमुकरनी)* —*अमीर खुसरो*
- खीर पकाई जतन से और चरखा दिया जलाय।
  आया कुत्ता खा गया, तू बैठी ढोल बजाय। ला पानी पिला।
  (ढकोसला) —*अमीर खुसरो*
- जेहाल मिसकीं मकुन तगाफुल दुराय नैना बनाय बतियाँ;/के ताब-ए-हिज्रां न दारम-ए-जां न लेहु काहे लगाय छतियाँ— प्रिय मेरे हाल से बेखबर मत रह, नजरों से दूर रहकर यूं बातें न बनाओ कि मैं जुदाई को सहने की ताकत नहीं रखता, मुझे अपने सीने से लगा क्यों नहीं लेते *(फारसी-हिन्दी मिश्रित गजल)* —*अमीर खुसरो*
- गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस/चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुँ देस *(अपने गुरु निजामुद्दीन औलिया की मृत्यु पर)* —*अमीर खुसरो*
  [नोट : सूफी मत में आराध्य (भगवान, गुरु) को स्त्री तथा आराधक (भक्त, शिष्य) को पुरुष के तौर पर देखने की रवायत है।]
- खुसरो दरिया प्रेम का, उल्टी वाकी धार।
  जो उबरा सो डूब गया, जो डूबा सो पार।।—अमीर खुसरो
- खुसरो पाती प्रेम की, बिरला बाँचे कोय।
  वेद कुरआन पोथी पढ़े, बिना प्रेम का होय।।—अमीर खुसरो
- खुसरो रैन सुहाग की जागी पी के संग।
  तन मेरो मन पीव को दोऊ भय एक रंग।। —अमीर खुसरो
- तुर्क हिन्दुस्तानियम मन हिंदवी गोयम जवाब
  (अर्थात मैं हिन्दुस्तानी तुर्क हूँ, हिन्दवी में जवाब देता हूँ।) —*अमीर खुसरो*
- "मैं हिन्दुस्तान की तूती ('तूती-ए-हिन्दुस्तान') हूँ। अगर तुम वास्तव में मुझसे जानना चाहते हो, तो हिंदवी में पूछो, मैं तुम्हें अनुपम बातें बता सकूँगा।" —*अमीर खुसरो*
- न लफ्जे हिंदवीस्त अज फारसी कम
  (अर्थात हिंदवी बोल फारसी से कम नहीं।)—*अमीर खुसरो*
- आध बदन ससि विहँसि देखावलि आध पिहिलि निज बाहु/कछु एक भाग बलाहक झाँपल किछुक गरासल राहु— नायिका ने अपना चेहरा हाथ से छिपा रखा है। कवि कहता है कि उसका चंद्रमुख आधा छिपा है और आधा दिख रहा है। ऐसा लगता है मानो चंद्रमा के एक भाग को बादल ने ढ़क रखा है और आधा दिख रहा है *('पदावली' से)* — *विद्यापति*
- 'आध्यात्मिक रंग के चश्मे आजकल बहुत सस्ते हो गये हैं। उन्हें चढ़ाकर जैसे कुछ लोगों को 'गीत गोविन्द' *(जयदेव)* के पदों में आध्यात्मिकता दिखती है वैसे ही 'पदावली' *(विद्यापति)* के पदों में।' —*रामचन्द्र शुक्ल*

- प्राइव मुणिहें वि भंतडी ते मणिअडा गणन्ति/अखइ निरामइ परम-पइ अज्जवि लउ न लहन्ति।—प्राय: मुनियों को भी भ्रांति हो जाती है, वे मनका गिनते हैं। अक्षय निरामय परम पद में आज भी लौ नहीं लगा पाते।
  —*हेमचन्द्र (प्राकृत व्याकरण)*
- पिय-संगमि कउ निद्दडी पिअहो परोक्खहो केंम/मइँ बिन्निवि विन्नासिया निद्द न एम्ब न तेम्ब—प्रिय के संगम में नींद कहाँ? प्रिय के परोक्ष में *(सामने न रहने पर)* नींद कहाँ? मैं दोनों प्रकार से नष्ट हुई? नींद न यों, न त्यों।
  —*हेमचन्द्र (प्राकृत व्याकरण)*
- जो गुण गोवइ अप्पणा पयडा करइ परस्सु/तसु हउँ कलजुगि दुल्लहहो बलि किज्जउँ सुअणस्सु।—जो अपना गुण छिपाए, दूसरे का प्रकट करे, कलियुग में दुर्लभ सुजन पर मैं बलि जाऊँ। —*हेमचन्द्र (प्राकृत व्याकरण)*
- माधव हम परिनाम निरासा —*विद्यापति*
- कनक कदलि पर सिंह समारल ता पर मेरु समाने—*विद्यापति*
- जाहि मन पवन न संचरई
  रवि ससि नहीं पवेस —*सरहपा*
- अवधू रहिया हाटे बाटे रूप विरष की छाया।
  तजिवा काम क्रोध लोभ मोह संसार की माया।।—*गोरखनाथ*
- पुस्तक जल्हण हाथ दै चलि गज्जन नृप काज —*चंदबरदाई*
- मनहु कला ससभान कला सोलह सो बन्निय —*चंदबरदाई*

आदिकालीन रचना एवं रचनाकार

रचनाकार	रचना
स्वयंभु	पउम चरिउ, रिट्ठणेमि चरिउ *(अरिष्टनेमि चरित)*
सरहपा	दोहाकोष
शबरपा	चर्या पद
कण्हपा	कण्हपाद गीतिका, दोहा कोश
गोरखनाथ *(नाथ पंथ के प्रवर्तक)*	सबदी, पद, प्राण सकली, सिष्या दासन
चंदबरदाई	पृथ्वीराज रासो *(शुक्ल के अनुसार हिन्दी का प्रथम महाकाव्य)*
शार्ङ्गधर	हम्मीर रासो
दलपति विजय	खुमाण रासो
जगनिक	परमाल रासो
नल्ह सिंह भाट	विजयपाल रासो
नरपति नाल्ह	बीसल देव रासो
अब्दुर रहमान	संदेश रासक
अज्ञात	मुंज रासो
देवसेन	श्रावकाचार
जिन दत्त सूरी	उपदेश रसायन रास
आसगु	चन्दनबाला रास
जिनधर्म सूरी	स्थूलिभद्र रास
शालिभद्र सूरी	भरतेश्वर बाहुबली रास
विजय सेन	रेवन्तगिरि रास
सुमतिगणि	नेमिनाथ रास
हेमचंद्र	सिद्ध हेमचन्द्र शब्दानुशासन
विद्यापति	पदावली *(मैथिली में)*, कीर्तिलता व कीर्तिपताका *(अवहट्ठ में)*, लिखनावली *(संस्कृत में)*
कल्लोल कवि	ढोला मारू रा दूहा
मधुकर	जयमयंक जस चंद्रिका
भट्ट केदार	जयचंद प्रकाश

पूर्व मध्य काल/भक्ति काल (1350 ई०–1650 ई०)

- भक्ति काल को हिन्दी साहित्य का स्वर्ण काल कहा जाता है।
- भक्ति काल के उदय के बारे में सबसे पहले जार्ज ग्रियर्सन ने मत व्यक्त किया। वे इसे 'ईसायत की देन' मानते हैं।
- ताराचंद के अनुसार भक्ति काल का उदय 'अरबों की देन' है।
- रामचन्द्र शुक्ल के मतानुसार, 'देश में मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर हिन्दू जनता के हृदय में गौरव, गर्व और उत्साह के लिए वह अवकाश न रह गया। उसके सामने ही उनके देव मंदिर गिराए जाते थे, देव मूर्तियाँ तोड़ी जाती थीं और पूज्य पुरुषों का अपमान होता था और वे कुछ भी नहीं कर सकते थे। ऐसी दशा में अपनी वीरता के गीत न तो वे गा ही सकते थे और न बिना लज्जित हुए सुन ही सकते थे। .... अपने पौरुष से हताश जाति के लिए भगवान की शरणागति में जाने के अलावा दूसरा मार्ग ही क्या था? .... भक्ति का जो सोता दक्षिण की ओर से धीरे-धीरे उत्तर भारत की ओर पहले से ही आ रहा था उसे राजनीतिक परिवर्तन के कारण शून्य पड़ते हुए जनता के हृदय क्षेत्र में फैलने के लिए पूरा स्थान मिला।'
- हजारी प्रसाद द्विवेदी के मतानुसार, 'मैं तो जोर देकर कहना चाहता हूँ कि अगर इस्लाम नहीं आया होता तो भी इस साहित्य का बारह आना वैसा ही होता जैसा आज है।...... बौद्ध तत्त्ववाद जो निश्चित ही बौद्ध आचार्यों की चिंता की देन था, मध्ययुग के हिन्दी साहित्य के उस अंग पर अपना निश्चित पदचिह्न छोड़ गया है जिसे संत साहित्य नाम दिया गया है। ...... मैं जो कहना चाहता हूँ वह यह है कि बौद्ध धर्म क्रमश: लोक धर्म का रूप ग्रहण कर रहा था और उसका निश्चित चिह्न हम हिन्दी साहित्य में पाते हैं।'
- समग्रत: भक्ति आंदोलन का उदय ग्रियर्सन व ताराचंद के लिए बाह्य प्रभाव, शुक्ल के लिए बाहरी आक्रमण की प्रतिक्रिया तथा द्विवेदी के लिए भारतीय परंपरा का स्वत: स्फूर्त विकास था।
- भक्ति आंदोलन की शुरुआत दक्षिण में हुई और उसके पुरस्कर्ता आलवार भक्त थे। बाद में वैष्णव आचार्यों—रामानुज, निम्बार्क, मध्व, विष्णु स्वामी—ने भक्ति को दार्शनिक आधार प्रदान किया। दार्शनिक विवेचन द्वारा पुष्टि पाकर दक्षिण भारत में भक्ति की बहुत उन्नति हुई और दक्षिण से चली हुई भक्ति की लहर 13वीं सदी ई. में महाराष्ट्र पहुँची। तदन्तर यह उत्तर भारत पहुँची। उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन के सूत्रपात का श्रेय रामानन्द को है *('भक्ति द्राविड़ उपजी, लाए रामानन्द')*। रामानंद ने उत्तर भारत में भक्ति को जन जन तक पहुँचाकर इसे लोकप्रिय बनाया।
- भक्ति आंदोलन का स्वरूप देशव्यापी था। दक्षिण में आलवार, नायनार व वैष्णव आचार्यों, महाराष्ट्र में वारकरी संप्रदाय *(ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ, तुका राम)*, उत्तर भारत में रामानंद, वल्लभ आचार्य, बंगाल में चैतन्य, असम में शंकरदेव *(महापुरुषीय धर्म—एक शरण संप्रदाय)*, उड़ीसा में पंचसखा *(बलरामदास, अनंतदास, यशोवंत दास, जगन्नाथ दास, अच्युतानंद)* आदि इसी बात को प्रमाणित करते हैं।
- भक्ति काव्य की दो काव्य धाराएँ हैं—निर्गुण काव्य धारा व सगुण काव्य धारा।

➢ निर्गुण काव्य-धारा की दो शाखाएँ हैं—ज्ञानाश्रयी शाखा/संत काव्य व प्रेमाश्रयी शाखा/सूफी काव्य। संत काव्य के प्रतिनिधि कवि कबीर हैं व सूफी काव्य के प्रतिनिधि कवि जायसी हैं।

➢ सगुण काव्य-धारा की दो शाखाएँ हैं—कृष्णाश्रयी शाखा/कृष्ण भक्ति काव्य व रामाश्रयी शाखा/राम भक्ति काव्य। कृष्ण भक्ति काव्य के प्रतिनिधि कवि सूरदास हैं व राम भक्ति काव्य के प्रतिनिधि कवि तुलसी दास हैं।

➢ प्रबंधात्मक काव्यकृतियाँ : पद्मावत, रामचरितमानस
मुक्तक काव्य कृतियाँ : गीतावली, कवितावली, कबीर के पद

➢ कबीर की रचनाओं में साधनात्मक रहस्यवाद मिलता है जबकि जायसी की रचनाओं में भावात्मक रहस्यवाद।

➢ निर्गुण काव्य की विशेषताएँ : 1. निर्गुण निराकार ईश्वर में विश्वास 2. लौकिक प्रेम द्वारा अलौकिक/आध्यात्मिक प्रेम की अभिव्यक्ति 3. धार्मिक रूढ़ियों व सामाजिक कुरीतियों का विरोध 4. जाति प्रथा का विरोध व हिन्दू-मुस्लिम एकता का समर्थन 5. रहस्यवाद का प्रभाव 6. लोक भाषा का प्रयोग।

➢ सगुण काव्य की विशेषताएँ : 1. अवतारवाद में विश्वास 2. ईश्वर की लीलाओं का गायन 3. भक्ति का विशिष्ट रूप *(रागानुगा भक्ति—कृष्ण भक्त कवियों द्वारा, वैधी भक्ति—राम भक्त कवियों द्वारा)* 4. लोक भाषा का प्रयोग

➢ कबीर ने अपने आदर्श-राज्य (Utopia) को 'अमर देस', रैदास ने 'बेगमपुरा' (ऐसा शहर जहाँ कोई गम न हो) एवं तुलसी ने 'राम-राज कहा है।

➢ 'संत काव्य' का सामान्य अर्थ है संतों के द्वारा रचा गया काव्य। लेकिन जब हिन्दी में 'संत काव्य' कहा जाता है तो उसका अर्थ होता है निर्गुणोपासक ज्ञानमार्गी कवियों के द्वारा रचा गया काव्य।

➢ संत कवि : कबीर, नामदेव, रैदास, नानक, धर्मदास, रज्जब, मलूकदास, दादू, सुंदरदास, चरनदास, सहजोबाई आदि।

➢ सुंदरदास को छोड़कर सभी संत कवि कामगार तबके से आते हैं; जैसे—कबीर *(जुलाहा)*, नामदेव *(दर्जी)*, रैदास *(चमार)*, दादू *(धुनकर)*, सेना *(नाई)*, सदना *(कसाई)*।

➢ संत काव्य की विशेषताएँ—धार्मिक : 1. निर्गुण ब्रह्म की संकल्पना 2. गुरु की महत्ता 3. योग व भक्ति का समन्वय 4. पंचमकार 5. अनुभूति की प्रामाणिकता व शास्त्र ज्ञान की अनावश्यकता 6. आडम्बरवाद का विरोध 7. संप्रदायवाद का विरोध; सामाजिक : 1. जातिवाद का विरोध 2. समानता के प्रेम पर बल; शिल्पगत : 1. मुक्तक काव्य-रूप 2. मिश्रित भाषा 3. उलटबाँसी शैली *(संधा/संध्याभाषा—हर प्रसाद शास्त्री)* 4. पौराणिक संदर्भों व हठयोग से संबंधित मिथकीय प्रयोग 5. प्रतीकों का भरपूर प्रयोग।

➢ रामचन्द्र शुक्ल ने कबीर की भाषा को 'सधुक्कड़ी भाषा' की संज्ञा दी है।

➢ श्यामसुंदर दास ने कई बोलियों के मिश्रण से बनी होने के कारण कबीर की भाषा को 'पंचमेल खिचड़ी' कहा है।

➢ बोली के ठेठ शब्दों के प्रयोग के कारण ही हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर को 'वाणी का डिक्टेटर' कहा है।

➢ 'प्रेमाख्यानक काव्य' का अर्थ है जायसी आदि निर्गुणोपासक प्रेममार्गी सूफी कवियों के द्वारा रचित प्रेम-कथा काव्य।

➢ प्रेमाख्यानक काव्य को प्रेमाख्यान काव्य, प्रेमकथानक काव्य, प्रेम काव्य, प्रेममार्गी *(सूफी)* काव्य आदि नामों से भी पुकारा जाता है।

➢ प्रेमाख्यानक काव्य की विशेषताएँ : 1. विषय वस्तु/कथावस्तु का प्रयोग 2. अवांतर/गौण प्रसंगों की भरमार व काव्येतर विषयों का समावेश 3. विभिन्न तरह के पात्र 4. प्रेम का आधिक्य 5. काव्य-रूप—कथा-काव्य 6. द्वंद्वात्मक काव्य-शिल्प *(लोक कथा व शिष्ट कथा का मेल)* 7. काव्य-भाषा—अवधी 8. कथा रूपक या प्रतीक काव्य 9. वियोग शृंगार/विरह शृंगार को अधिक महत्व *('पद्मावत' के एक अंश—नागमती का विरह वर्णन— को हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि कहा जाता है)*

➢ यों तो सभी प्रेमाख्यानों में सामान्य मानव की प्रेम कथाएं हैं लेकिन सूफियों का तर्क है कि इश्क मजाजी *(मानवीय प्रेम)* इश्क हकीकी *(दैविक प्रेम)* की सीढ़ी है।

➢ मलिक मुहम्मद जायसी जायस के रहने वाले थे। ये सिकंदर लोदी एवं बाबर के समकालीन थे।

➢ जायसी के यश का आधार है—'पद्मावत'।

➢ 'पद्मावत' प्रेम की पीर की व्यंजना करने वाला विशद प्रबंध काव्य है। यह चौपाई-दोहा में निबद्ध *(7 चौपाई के बाद 1 दोहा)* मसनवी शैली में लिखा गया है।

➢ 'पद्मावत' की कथा चितौड़ के शासक रतन सेन और सिंहलद्वीप की राजकन्या पद्मिनी की प्रेम कहानी पर आधारित है। इसमें ('पद्मावत' में) रतनसेन की पहली पत्नी नागमती के वियोग का अनूठा वर्णन किया गया है। 'पद्मावत' के नागमती-वियोग खंड को हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि माना जाता है।

➢ जिन भक्त कवियों ने विष्णु के अवतार के रूप में कृष्ण की उपासना को अपना लक्ष्य बनाया वे 'कृष्णाश्रयी शाखा' के कवि कहलाए।

➢ मध्य युग में कृष्ण भक्ति का प्रचार ब्रज मण्डल में बड़े उत्साह और भावना के साथ हुआ। इस ब्रज मण्डल में कई कृष्ण-भक्ति संप्रदाय सक्रिय थे। इनमें बल्लभ, निम्बार्क, राधा वल्लभ, हरिदासी *(सखी संप्रदाय)* और चैतन्य *(गौड़ीय)* संप्रदाय विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन संप्रदायों से जुड़े ढेर सारे कवि कृष्ण काव्य रच रहे थे।

➢ लेकिन जो समर्थ कवि कृष्ण काव्य को एक लोकप्रिय काव्य-आंदोलन के रूप में प्रतिष्ठित किया वे सभी बल्लभ संप्रदाय से जुड़े थे।

➢ बल्लभ संप्रदाय का दार्शनिक सिद्धांत 'शुद्धाद्वैत' तथा साधना मार्ग 'पुष्टि मार्ग' कहलाता है। पुष्टि मार्ग का आधार-ग्रंथ 'भागवत' *(श्रीमद्भागवत)* है।

➢ पुष्टि मार्ग में बल्लभाचार्य ने 4 कवियों *(सूरदास, कुंभनदास, परमानंद दास व कृष्णदास)* को दीक्षित किया। उनके मरणोपरांत उनके पुत्र विटठ्लनाथ आचार्य की गद्दी पर बैठे और उन्होंने भी 4 कवियों *(छीतस्वामी, गोविंदस्वामी, चतुर्भुजदास व नंददास)* को दीक्षित किया। विटठ्लनाथ ने इन दीक्षित कवियों को मिलाकर 'अष्टछाप' की स्थापना 1565 ई० में की। सूरदास इनमें सर्वप्रमुख हैं और उन्हें 'अष्टछाप का जहाज' कहा जाता है।

- निम्बार्क संप्रदाय से जुड़े कवि थे—श्री भट्ट, हरि व्यास देव; राधा बल्लभ संप्रदाय से संबद्ध कवि हित हरिवंश थे; हरिदासी संप्रदाय की स्थापना स्वामी हरिदास ने की और वे ही इस संप्रदाय के प्रथम और अंतिम कवि थे। चैतन्य संप्रदाय से संबद्ध कवि गदाधर भट्ट थे।
- कुछ कृष्ण भक्त कवि संप्रदाय निरपेक्ष भी थे; जैसे—मीरा, रसखान आदि।
- कृष्ण भक्ति काव्य धारा ऐसी काव्य धारा थी जिसमें सबसे अधिक कवि शामिल हुए।
- कृष्ण भक्ति काव्य की विशेषताएँ : 1. कृष्ण का ब्रह्म रूप में चित्रण 2. बाल-लीला व वात्सल्य वर्णन 3. शृंगार चित्रण 4. नारी मुक्ति 5. सामान्यता पर बल 6. आश्रयत्व का विरोध 7. लोक संस्कृति पर बल 8. लोक संग्रह 9. काव्य-रूप : मुक्तक काव्य की प्रधानता 10. काव्य-भाषा—ब्रजभाषा 11. गेय पद परंपरा।
- माता-पिता की जो ममता अपने संतान पर बरसती है उसे 'वात्सल्य' कहते हैं। सूर वात्सल्य चित्रण के लिए विश्व में अन्यतम कवि माने जाते हैं। इन्हीं के कारण, रसों के अतिरिक्त वात्सल्य को एक रस के रूप में मान्यता मिली।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की राय है, 'यद्यपि तुलसी के समान सूर का काव्य क्षेत्र इतना व्यापक नहीं कि उसमें जीवन की भिन्न-भिन्न दशाओं का समावेश हो पर जिस परिमित पुण्यभूमि में उनकी वाणी ने संचरण किया उसका कोई कोना अछूता न छूटा। शृंगार और वात्सल्य के क्षेत्र में जहाँ तक इनकी दृष्टि पहुँची वहाँ तक और किसी कवि की नहीं। इन दोनों क्षेत्रों में तो इस महाकवि ने मानो औरों के लिए कुछ छोड़ा ही नहीं।'
- भक्ति आंदोलन में कृष्ण काव्यधारा ही एकमात्र ऐसी धारा है जिसमें नारी मुक्ति का स्वर मिलता है। इनमें सबसे प्रखर स्वर मीरा बाई का है। मीरा अपने समय के सामंती समाज के खिलाफ एक क्रांतिकारी स्वर है।
- जिन भक्त कवियों ने विष्णु के अवतार के रूप में राम की उपासना को अपना लक्ष्य बनाया वे 'रामाश्रयी शाखा' के कवि कहलाए।
- कुछ उल्लेखनीय राम भक्त कवि हैं—रामानंद, अग्रदास, ईश्वर दास, तुलसी दास, नाभादास, केशवदास, नरहरिदास आदि।
- राम भक्ति काव्य धारा के सबसे बड़े और प्रतिनिधि कवि हैं तुलसी दास।
- राम भक्त कवियों की संख्या अपेक्षाकृत कम है। कम संख्या होने का सबसे बड़ा कारण है तुलसीदास का बरगदमयी व्यक्तित्व।
- यह सवर्णवादी काव्य धारा है इसलिए यह उच्चवर्ण में ज्यादा लोकप्रिय हुआ।
- राम भक्ति काव्य की विशेषताएँ : 1. राम का लोक नायक रूप 2. लोक मंगल की सिद्धि 3. सामूहिकता पर बल 4. समन्वयवाद 5. मर्यादावाद 6. मानवतावाद 7. काव्य-रूप—प्रबंध व मुक्तक दोनों 8. काव्य-भाषा—मुख्यतः अवधी 9. दार्शनिक प्रतीकों की बहुलता।
- राम भक्ति काव्य धारा आगे चलकर रीति काल में मर्यादावाद की लीक छोड़कर रसिकोपासना की ओर बढ़ जाती है।
- 'तुलसी का सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है।' *—हजारी प्रसाद द्विवेदी*
- 'भारतवर्ष का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर आया हो।' *—हजारी प्रसाद द्विवेदी*

प्रसिद्ध पंक्तियाँ

- संतन को कहा सीकरी सो काम?
  आवत जात पनहियाँ टूटी, बिसरि गयो हरिनाम।
  जिनको मुख देखे दुख उपजत, तिनको करिबे परी सलाम।
  —कुंभनदास
- नाहिन रहियो मन में ठौर
  नंद नंदन अक्षत कैसे आनिअ उर और *—सूरदास*
- हऊं तो चाकर राम के पटौ लिखौ दरबार,
  अब का तुलसी होहिंगे नर के मनसबदार। *—तुलसीदास*
- आँखड़ियाँ झाँई पड़ी, पंथ निहारि-निहारि
  जीभड़ियाँ झाला पड़याँ, राम पुकारि पुकारि। *—कबीर*
- तीरथ बरत न करौ अंदेशा। तुम्हारे चरन कमल मतेसा।।
  जह तह जाओ तुम्हारी पूजा। तुमसा देव और नहीं दूजा।।
  —जायसी
- तलफत रहति मीन चातक ज्यों, जल बिनु तृषानु छीजे
  अँखियां हरि दर्शन की भूखी। *—सूरदास*
- हे री मैं तो प्रेम दीवानी मेरा दरद न जाने कोई। *—मीरा*
- एक भरोसो एक बल एक आस विश्वास।
  एक राम घनश्याम हित, चातक तुलसीदास। *—तुलसीदास*
- गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागूँ पाई।
  बलिहारी गुरु आपने जिन गोविंद दियो बताई।। *—कबीर*
- पाँड़े कौन कुमति तोंहि लागे, कसरे मुल्ला बाँग नेवाजा।
  —कबीर
- बंदऊ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।
  महामोह तम पुंज जासु वचन रविकर निकर।।*—तुलसीदास*
- राम नांव ततसार है। *—कबीर*
- कबीर सुमिरण सार है और सकल जंजाल। *—कबीर*
- पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ पंडित भया न कोई।
  ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होई।। *—कबीर*
- आयो घोष बड़ो व्यापारी।
  लादि खेप गुन ज्ञान-जोग की ब्रज में आय उतारी। *—सूरदास*
- मूक होई वाचाल, पंगु चढई गिरिवर गहन।
  जासु कृपा सो दयाल द्रवउ सकल कली मल दहन।।
  —तुलसीदास
- सिया राममय सब जग जानी, करऊं प्रणाम जोरि जुग पानि।
  —तुलसीदास
- जांति-पांति पूछै नहीं कोई, हरि को भजै सो हरि का होई।
  —रामानंद
- साईं के सब जीव है कीरी कुंजर दोय।
  सब घाट साईयां सूनी सेज न कोय। *—कबीर*
- मैं राम का कुता मोतिया मेरा नाम। *—कबीर*
- बड़े न हुजै गुनन बिन, बिरद बड़ाई पाय।
  कहत धतूरे सो कनक, गहनो गढ़ो न जाय।।
  (बिरद = नाम, सो = सदृश, समान)
  —कबीर

➢ राम सो बड़ो है कौन, मोसो कौन छोटो ?
राम सो खरो है कौन, मोसो कौन खोटो। —*तुलसीदास*

➢ प्रभूजी तुम चंदन हम पानी। —*रैदास*

➢ सुखिया सब संसार है खावे अरु सोवे,
दुखिया दास कबीर है जागे अरु रोवै। —*कबीर*

➢ नारी नसावे तीन गुन, जो नर पासे होय।
भक्ति मुक्ति नित ध्यान में, पैठि सकै नहीं कोय।। —*कबीर*

➢ ढोल गंवार शूद्र पशु नारी, ये सब है तारन के आधिकारी।
—*तुलसीदास*

➢ पांणी ही तै हिम भया, हिम हवै गया बिलाई।
जो कुछ था सोई भया, अब कछू कह्या न जाइ।। —*कबीर*

➢ एक जोति थैं सब उपजा, कौन ब्राह्मण कौन सूदा। —*कबीर*

➢ एक कहै तो है नहीं, दोइ कहै तो गारी।
है जैसा तैसा रहे कहे कबीर उचारि।। —*कबीर*

➢ सतगुरु है रंगरेज मन की चुनरी रंग डारी —*कबीर*

➢ संसकिरत (संस्कृत) है कूप जल भाषा बहता नीर —*कबीर*

➢ अवधु मेरा मन मतवारा।
गुड़ करि ज्ञान, ध्यान करि महुआ, पीवै पीवनहारा।। —*कबीर*

➢ पंडित मुल्ला जो कह दिया।
झाड़ि चले हम कुछ नहीं लिया।। —*कबीर*

➢ पंडित वाद वदन्ते झूठा —*कबीर*

➢ पठत-पठत किते दिन बीते गति एको नहीं जानि। —*कबीर*

➢ मैं कहता हूँ आँखिन देखी/तू कहता है कागद लेखी। —*कबीर*

➢ गंगा में नहाये कहो को नर तरिए।
मछिरी न तरि जाको पानी में घर है।। —*कबीर*

➢ कंकड़ पाथड़ जोड़ि के मस्जिद लिये बनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे क्या बहरा हुआ खुदाय।। —*कबीर*

➢ जो तू बाभन बाभनि जाया तो आन बाट काहे न आया।
जो तू तुरक तुरकनि जाया तो भीतर खतना क्यों न कराया।।
—*कबीर*

➢ हिन्दु तुरक का कर्ता एके, ता गति लखि न जाय। —*कबीर*

➢ हिन्दुअन की हिन्दुआइ देखी, तुरकन की तुरकाइ
अरे इन दोऊ कहीं राह न पाई। —*कबीर*

➢ जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहने दो म्यान।। —*कबीर*

➢ जात भी ओछी, करम भी ओछा, ओछा करब करम हमारा।
नीचे से फिर ऊंचा कीन्हा, कह रैदास खलास चमारा।।
—*रैदास*

➢ झिलमिल झगरा झूलते बाकी रहु न काहु।
गोरख अटके कालपुर कौन कहावे साधु।। —*कबीर*

➢ दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना, राम नाम का मरम है आना
—*कबीर*

➢ शूरा सोइ *(सती)* सराहिए जो लड़े धनी के हेत।
पुर्जा-पुर्जा कटि पड़ै तौ ना छाड़े खेत।। —*कबीर*

➢ आगा जो लागा नीर में कादो जरिया झारि।
उत्तर दक्षिण के पंडिता, मुए विचारि विचारि।। —*कबीर*

➢ सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे,
अरथ अमित अति आखर थोरे। (तुलसी के अनुसार कविता की परिभाषा) —*तुलसी*

➢ गोरख जगायो जोग भगति भगायो लोग। *(कवितावली)*
—*तुलसी*

➢ गुपुत रहहु, कोऊ लखय न पावे, परगट भये कछु हाथ न आवे। गुपुत रहे तेई जाई पहुँचे, परगट नीचे गए विगुचे।।
—*उसमान*

➢ पहले प्रीत गुरु से कीजै, प्रेम बाट में तब पग दीजै। —*उसमान*

➢ रवि ससि नखत दियहि ओहि जोती,
रतन पदारथ माणिक मोती।
जहँ तहँ विहसि सुभावहि हँसी।
तहँ जहँ छिटकी जोति परगसी।। —*जायसी*

➢ बसहि पक्षी बोलहि बहुभाखा,
करहि हुलास देखिके शाखा। —*जायसी*

➢ तन चितउर, मन राजा कीन्हा।
हिय सिंघल, बुधि पदमिनी चीन्हा।।
गुरु सुआ जेहि पंथ दिखावा।
बिनु गुरु जगत को निरगुण पावा।।
नागमती यह दुनिया धंधा।
बांचा सोई न एहि चित्त बंधा।।
राघव दूत सोई सैतान।
माया अलाउदी सुल्तान।। —*जायसी*

➢ जहाँ न राति न दिवस है,
जहाँ न पौन न घरानि।
तेहि वन होई सुअरा बसा,
को रे मिलावे आनि।। —*जायसी*

➢ मानुस प्रेम भएउँ बैकुंठी
नाहि त काह छार भरि मूठि।
(प्रेम ही मनुष्य के जीवन का चरम मूल्य है, जिसे पाकर मनुष्य बैकुंठी हो जाता है, अन्यथा वह एक मुट्ठी राख नहीं तो और क्या है ?) —*जायसी*

➢ छार उठाइ लीन्हि एक मूठी,
दीन्हि उड़ाइ पिरिथमी झूठी। —*जायसी*

➢ सोलह सहस्त्र पीर तनु एकै, राधा जीव सब देह। —*सूरदास*

➢ पुख नछत्र सिर ऊपर आवा।
हौं बिनु नाँह मंदिर को छावा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरि।
मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी। —*जायसी*

➢ पिउ सो कहहू संदेसड़ा हे भौंरा हे काग।
सो धनि बिरहें जरि मुई तेहिक धुँआ हम लाग।। —*जायसी*

➢ जसोदा हरि पालने झुलावे/सोवत जानि मौन ह्वै रहि करि करि सैन बतावे/इहि अंतर अकुलाइ उठे हरि, जसुमती मधुरे गावे। —*सूरदास*

➢ सिखवत चलत जसोदा मैया
अरबराय करि पानि गहावत डगमगाय धरनी धरि पैंया।
—*सूरदास*

➢ मैया हौं न चरैहों गाय —*सूरदास*

➢ मैया री मोहिं माखन भावे —*सूरदास*

➢ मैया कबहि बढेगी चोटी —*सूरदास*

➢ मैया मोहि दाउ बहुत खिझायौ —*सूरदास*

➢ 'जिस तरह के उन्मुक्त समाज की कल्पना अंग्रेज कवि शेली ने की है ठीक उसी तरह का उन्मुक्त समाज है गोपियों का।'
—*आचार्य शुक्ल*

➢ 'गोपियों का वियोग-वर्णन, वर्णन के लिए ही है उसमें परिस्थितियों का अनुरोध नहीं है। राधा या गोपियों के विरह में वह तीव्रता और गंभीरता नहीं है जो समुद्र पार अशोक वन में बैठी सीता के विरह में है।'
—*आचार्य शुक्ल*

➢ अति मलीन वृषभानु कुमारी।/छूटे चिहुर वदन कुभिलाने, ज्यों नलिनी हिमकर की मारी।
—*सूरदास*

➢ ज्यों स्वतंत्र होई त्यों बिगड़हिं नारी
(जिमी स्वतंत्र भए बिगड़हिं नारी)
—*तुलसीदास*

➢ सास कहे ननद खिजाये राणा रह्यो रिसाय
पहरा राखियो, चौकी बिठायो, तालो दियो जराय। —*मीरा*

➢ संतन ठीग बैठि-बैठि लोक लाज खोई
—*मीरा*

➢ या लकुटि अरु कंवरिया पर
राज तिहु पुर को तजि डारो
—*रसखान*

➢ काग के भाग को का कहिये,
हरि हाथ सो ले गयो माखन रोटी
—*रसखान*

➢ मानुस हौं तो वही रसखान बसो संग गोकुल गांव के ग्वारन
—*रसखान*

➢ 'जिस प्रकार रामचरित का गान करने वाले भक्त कवियों में गोस्वामी तुलसीदास जी का स्थान सर्वश्रेष्ठ है उसी प्रकार कृष्णचरित गानेवाले भक्त कवियों में महात्मा सूरदास जी का। वास्तव में ये हिन्दी काव्यगगन के सूर्य और चंद्र हैं।'
—*आचार्य शुक्ल*

➢ रचि महेश निज मानस राखा
पाई सुसमय शिवासन भाखा
—*तुलसीदास*

➢ मंगल भवन अमंगल हारी
द्रवहु सुदशरथ अजिर बिहारी
—*तुलसीदास*

➢ सबहिं नचावत राम गोसाईं
मोहि नचावत तुलसी गोसाई
—*फादर कामिल बुल्के*

➢ 'बुद्ध के बाद तुलसी भारत के सबसे बड़े समन्वयकारी हैं'
—*जार्ज ग्रियर्सन*

➢ 'मानस *(तुलसी)* लोक से शास्त्र का, संस्कृत से भाषा *(देश भाषा)* का, सगुण से निर्गुण का, ज्ञान से भक्ति का, शैव से वैष्णव का, ब्राह्मण से शूद्र का, पंडित से मूर्ख का, गार्हस्थ से वैराग्य का समन्वय है।'
—*हजारी प्रसाद द्विवेदी*

➢ बहुरि वदन विधु अँचल ढाँकी, पिय तन चितै भौंह करि बांकी खंजन मंजु तिरीछे नैननि, निज पति कहेउ तिनहहिं सिय सैननि। *(ग्रामीण स्त्रियों द्वारा राम से संबंध के प्रश्न पूछने पर सीता का आंगिक लक्षणों से जवाब)*—*तुलसीदास*

➢ हे खग हे मृग मधुकर श्रेणी क्या तूने देखी सीता मृगनयनी
—*तुलसीदास*

➢ पूजिये विप्र शील गुण हीना, शूद्र न गुण गन ज्ञान प्रवीना
—*तुलसीदास*

➢ छिति, जल, पावक, गगन, समीरा
पंचरचित यह अधम शरीरा।
—*तुलसीदास*

➢ कत विधि सृजी नारी जग माहीं, पराधीन सपनेहु सुख नाहीं
—*तुलसीदास*

➢ अखिल विश्व यह मोर उपाया
सब पर मोहि बराबर माया।
—*तुलसीदास*

➢ काह कहौं छवि आजुकि भले बने हो नाथ।
तुलसी मस्तक तव नवै धरो धनुष शर हाथ।।—*तुलसीदास*

➢ सब मम प्रिय सब मम उपजाये
सबते अधिक मनुज मोहिं भावे
—*तुलसीदास*

➢ मेरी न जात-पाँत, न चहौ काहू की जात-पाँत —*तुलसीदास*

➢ सुन रे मानुष भाई,
सबार ऊपर मानुष सत्य
ताहार ऊपर किछु नाई।
—*चण्डी दास*

➢ बड़ा भाग मानुष तन पावा,
सुर दुर्लभ सब ग्रंथहिं गावा
—*तुलसीदास*

➢ 'जिस युग में कबीर, जायसी, तुलसी, सूर जैसे रससिद्ध कवियों और महात्माओं की दिव्य वाणी उनके अन्तःकरणों से निकलकर देश के कोने-कोने में फैली थी, उसे साहित्य के इतिहास में सामान्यतः भक्ति युग कहते हैं। निश्चित ही वह हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग था।' —*श्याम सुन्दर दास*

➢ 'हिन्दी काव्य की सब प्रकार की रचना शैली के ऊपर गोस्वामी तुलसीदास ने अपना ऊँचा आसन प्रतिष्ठित किया है। यह उच्चता और किसी को प्राप्त नहीं।' —*रामचन्द्र शुक्ल*

➢ जनकसुता, जगजननि जानकी।
अतिसय प्रिय करुणानिधान की।
—*तुलसीदास*

➢ तजिए ताहि कोटि बैरी सम जद्यपि परम सनेही। —*तुलसीदास*

➢ अंसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम बेल बोई।
—*मीरा*

➢ सावन माँ उमग्यो हियरा भणक सुण्या हरि आवण री।
—*मीरा*

➢ घायल की गति घायल जानै और न जानै कोई। —*मीरा*

➢ मोर पंखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरे पहिरौंगी।
ओढ़ि पिताबंर लै लकुटी बन गोधन ग्वालन संग फिरौंगी।
भावतो सोई मेरो रसखानि सो तेरे कहे सब स्वाँग करौंगी।
या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी।
—*रसखान*

➢ जब जब होइ धरम की हानी। बढहिं असुर महा अभिमानी।।
तब तब धरि प्रभु मनुज सरीरा। हरहिं सकल सज्जन भवपीरा।।
—*तुलसीदास*

➢ 'समूचे भारतीय साहित्य में अपने ढंग का अकेला साहित्य है। इसी का नाम भक्ति साहित्य है। यह एक नई दुनिया है।'
—*हजारी प्रसाद द्विवेदी*

➢ जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहिं।
प्रेम गली अती सांकरी, ता में दो न समाहि।।
—*कबीर*

➢ मो सम कौन कुटिल खल कामी
—*सूरदास*

➢ भरोसो दृढ़ इन चरनन केरो
—*सूरदास*

➢ धुनि ग्रमे उत्पन्नो, दादू योगेंद्रा महामुनि
—*रज्जब*

➢ सब ते भले विमूढ़ जन, जिन्हें न व्यापै जगत गति
—*तुलसीदास*

➢ केसव कहि न जाइ का कहिए।
देखत तब रचना विचित्र अति, समुझि मनहि मन रहिए।
('विनय पत्रिका')
—*तुलसीदास*

➢ पुष्टिमार्ग का जहाज जात है सो जाको कछु लेना हो सो लेउ —*विट्ठलदास*

➢ हरि है राजनीति पढि आए —*सूरदास*

➢ अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम।
दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।। —*मलूकदास*

➢ हाड़ जरै ज्यों लाकड़ी, केस जरै ज्यों घास।
सब जग जलता देख, भया कबीर उदास।। —*कबीर*

➢ विक्रम धँसा प्रेम का बारा, सपनावती कहँ गयऊ पतारा। —*मंझन*

➢ कब घर में बैठे रहे, नाहिंन हाट बाजार
मधुमालती, मृगावती पोथी दोउ उचार। —*बनारसी दास*

➢ मुझको क्या तू ढूँढे बंदे, मैं तो तेरे पास रे। —*कबीर*

➢ रुकमिनि पुनि वैसहि मरि गई
कुलवंती सत सो सति भई —*कुतबन*

➢ बलंदीप देखा अँगरेजा, तहाँ जाई जेहि कठिन करेजा—*उसमान*

➢ जानत है वह सिरजनहारा, जो किछु है मन मरम हमारा।
हिंदू मग पर पाँव न राखेऊ, का जो बहुतै हिंदी भाखेऊ।।
('अनुराग बाँसुरी') —*नूर मुहम्मद*

➢ यह सिर नवे न राम कू, नाहीं गिरियो टूट।
आन देव नहिं परसिये, यह तन जायो छूट।। —*चरनदास*

➢ सुरतिय, नरतिय, नागतिय, सब चाहत अस होय।
गोद लिए हुलसी फिरै, तुलसी सो सुत होय।। —*रहीम*

➢ मो मन गिरिधर छवि पै अटक्यो/ललित त्रिभंग चाल पै चलि कै, चिबुक चारु गड़ि ठटक्यो —*कृष्णदास*

➢ कहा करौ बैकुंठहि जाय
जहाँ नहिं नंद, जहाँ न जसोदा, नहिं जहँ गोपी, ग्वाल न गाय —*परमानंद दास*

➢ बसो मेरे नैनन में नंदलाल
मोहनि मूरत, साँवरि सूरत, नैना बने रसाल —*मीरा*

➢ लोटा तुलसीदास को लाख टका को मोल —*होलराय*

➢ साखी सबद दोहरा, कहि कहिनी उपखान।
भगति निरूपहिं निंदहि बेद पुरान।। —*तुलसीदास*

➢ माता पिता जग जाइ तज्यो
विधिहू न लिख्यो कछु भाल भलाई —*तुलसीदास*

➢ निर्गुण ब्रह्म को कियो समाधु
तव ही चले कबीरा साधु। —*दादू*

➢ अपना मस्तक काटिकै बीर हुआ कबीर —*दादू*

➢ सो जागी जाके मन में मुद्रा/रात-दिवस ना करई निद्रा—*कबीर*

➢ काहे री नलिनी तू कुम्हलानी/तेरे ही नालि सरोवर पानी। —*कबीर*

➢ कलि कुटिल जीव निस्तार हित वाल्मीकि तुलसी भयो —*नाभादास*

➢ नैया बिच नदिया डूबति जाय —*कबीर*

➢ भक्तिहिं ज्ञानहिं नहिं कछु भेदा —*तुलसी*

➢ प्रभुजी मोरे अवगुन चित्त न धरो —*सूर*

➢ अब लौ नसानो अब न नसैहों [अब तक का जीवन नाश (बर्बाद) किया। आगे न करूंगा।] —*तुलसी*

➢ अव्वल अल्लाह नूर उपाया कुदरत के सब बंदे —*कबीर*

➢ संत हृदय नवनीत समाना —*तुलसी*

➢ रामझरोखे बैठ के जग का मुजरा देख —*कबीर*

➢ निर्गुण रूप सुलभ अति, सगुन जान नहिं कोई।
सुगम अगम नाना चरित, सुनि मुनि-मन भ्रम होई।। —*तुलसी*

➢ स्याम गौर किमि कहौं बखानी।
गिरा अनयन नयन बिनु बानी।। —*तुलसी*

➢ दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे मांहि।
ज्यों रहीम नटकुंडली, सिमिट कूदि चलि जांहि।। —*रहीम*

➢ प्रेम प्रेम ते होय प्रेम ते पारहिं पइए —*सूर*

➢ तब लग ही जीबो भला देबौ होय न धीम।
जन में रहिबो कुँचित गति उचित न होय रहीम।। —*रहीम*

➢ सेस महेस गनेस दिनेस, सुरेसहुँ जाहि निरंतर गावैं।
जाहिं अनादि अनन्त अखंड, अछेद अभेद सुबेद बतावैं।। —*रसखान*

➢ बहु बीती थोरी रही, सोऊ बीती जाय।
हित ध्रुव बेगि विचारि कै बसि बृंदावन आय।। —*ध्रुवदास*

पूर्व-मध्यकालीन/भक्तिकालीन रचना एवं रचनाकार

(A) संत काव्य	
बीजक *(1. रमैनी 2. सबद 3. साखी; संकलन- धर्मदास)*	कबीरदास *(निर्गुण पंथ के प्रवर्तक)*
बानी	रैदास
ग्रंथ साहिब में संकलित *(संकलन-गुरु अर्जुन देव)*	नानक देव
सुंदर विलाप	सुंदर दास
रत्न खान, ज्ञानबोध	मलूक दास
(B) सूफी काव्य	
हंसावली	असाइत
चंदायन या लोरकहा	मुल्ला दाऊद
मधुमालती	मंझन
मृगावती	कुतबन
चित्रावती	उसमान
पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम, कन्हावत	जायसी
माधवानल कामकंदला	आलम
ज्ञान दीपक	शेख नबी
रस रतन	पुहकर
लखमसेन पद्मावती कथा	दामोदर कवि
रूप मंजरी	नंद दास
सत्यवती कथा	ईश्वर दास
इंद्रावती, अनुराग बाँसुरी	नूर मुहम्मद
(C) कृष्ण भक्ति काव्य	
सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी, भ्रमरगीत *(सूरसागर से संकलित अंश)*	सूरदास
फुटकल पद	कुंभन दास
परमानंद सागर	परममानंद दास
जुगलमान चरित्र	कृष्ण दास
फुटकल पद	छीत स्वामी
फुटकल पद	गोविंद स्वामी
द्वादशयश, भक्ति प्रताप, हितजू को मंगल	चतुर्भुज दास
रास पंचाध्यायी, भंवर गीत *(प्रबंध काव्य)*	नंद दास
युगल शतक	श्री भट्ट
हित चौरासी	हित हरिवंश
हरिदास जी के पद	स्वामी हरिदास
भक्त नामावली, रसलावनी	ध्रुव दास

बरसी जी का मायरा, गीत गोविंद टीका, राग भीराथाई गोविंद, राग सोरठ के पद

प्रेम वाटिका, सुजान रसखान, दानलीला — रसखान

सुदामा चरित — नरोत्तमदास

(D) राम भक्ति काव्य

राम आरती — राभानंद

रामाष्टयाम, राम भजन मंजरी — अग्र दास

भरत मिलाप, अंगद पैज — ईश्वर दास

रामचरित मानस (प्र०), गीतावली, कवितावली, विनयपत्रिका, दोहावली, कृष्ण गीतावली, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, बरवै रामायण (प्र०), रामाज्ञा प्रश्नावली, वैराग्य संदीपनी, राम लला नहछू — तुलसीदास

भक्त माल — नाभादास

रामचन्द्रिका *(प्रबंध काव्य)* — केशव दास

पौरुषेय रामायण — नरहरि दास

(E) विविध

पंचसहेली — छीहल

हरिचरित, भागवत दशम स्कंध भाषा — लालच दास

रुक्मिणी मंगल, छप्पय नीति, कवित्त संग्रह — महापात्र नरहरि बंदीजन

माधवानल कामकंदला — आलम

शत प्रश्नोत्तरी — मनोहर कवि

हनुमन्नाटक — बलभद्र मिश्र

कविप्रिया, रसिक प्रिया, वीर सिंह देव चरित (प्र०), विज्ञान गीता, रतनबावनी, जहाँगीर जस चंद्रिका — केशव दास

रहीम दोहावली या सतसई, बरवै नायिका भेद, शृंगार सोरठा, मदनाष्टक, रास पंचाध्यायी, रहीम रत्नावली — रहीम *(अब्दुर्रहीम खाने खाना)*

काव्य कल्पद्रुम — सेनापति

रस रतन — पुहकर कवि

सुंदर शृंगार — सुंदर

पद्मिनी चरित्र — लालचंद

'अष्टछाप' के कवि

वल्लभाचार्य के शिष्य 1. सूरदास 2. कुंभन दास 3. परमानंद दास 4. कृष्ण दास

विट्ठलनाथ के शिष्य 5. छीत स्वामी 6. गोविंद स्वामी 7. चतुर्भुज दास 8. नंद दास

उत्तर-मध्यकाल / रीतिकाल (1650 ई०– 1850 ई०)

➢ नामकरण की दृष्टि से उत्तर-मध्यकाल विवादास्पद है। इसे मिश्र बंधु ने 'अलंकृत काल', रामचन्द्र शुक्ल ने 'रीतिकाल' और विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने 'शृंगार काल' कहा है।

➢ रीतिकाल के उदय के संबंध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का मत है : 'इसका कारण जनता की रुचि नहीं, आश्रयदाताओं की रुचि थी, जिसके लिए वीरता और कर्मण्यता का जीवन बहुत कम रह गया था। ··· रीतिकालीन कविता में लक्षण ग्रंथ, नायिका भेद, शृंगारिकता आदि की जो प्रवृत्तियाँ मिलती हैं उसकी परंपरा संस्कृत साहित्य से चली आ रही थी'।

➢ डॉ० नगेन्द्र का मत है, 'घोर सामाजिक और राजनीतिक पतन के उस युग में जीवन बाह्य अभिव्यक्तियों से निराश होकर घर की चारदीवारी में कैद हो गया था। घर में न शास्त्र चिंतन था न धर्म चिंतन। अभिव्यक्ति का एक ही माध्यम था—काम। जीवन की बाह्य अभिव्यक्तियों से निराश होकर मन नारी के अंगों में मुँह छिपाकर विशुद्ध विभोर तो हो जाता था'।

➢ हजारी प्र० द्विवेदी के अनुसार, 'संस्कृत के प्राचीन साहित्य विशेषतः रामायण और महाभारत से यदि भक्तिकाल के कवियों ने प्रेरणा ली तो रीतिकाल के कवियों ने उत्तरकालीन संस्कृत साहित्य से प्रेरणा व प्रभाव लिया। ·····लक्षण ग्रंथ, नायिका भेद, अलंकार और संचारी आदि भावों के पूर्वनिर्मित वर्गीकरण का आधार लेकर ये कवि बंधी-सधी बोली में बंधे-सधे भावों की कवायद करने लगे'।

➢ समग्रतः रीतिकालीन काव्य जनकाव्य नहीं है बल्कि दरबारी संस्कृति का काव्य है। इसमें शृंगार और शब्द-सज्जा पर जोर रहा। कवियों ने सामान्य जनता की रुचि को अनदेखा कर सामंतों एवं रईसों की अभिरुचियों को कविता के केन्द्र में रखा। इससे कविता आम आदमी के दुख एवं हर्ष से जुड़ने के बजाय दरबारों के वैभव व विलास से जुड़ गई।

➢ रीतिकाल की दो मुख्य प्रवृत्तियां थीं—
1. रीति निरूपण 2. शृंगारिकता।

➢ रीति निरूपण को काव्यांग विवेचन के आधार पर दो वर्गों में बाँटा जा सकता है

(i) सर्वांग विवेचन : सर्वांग विवेचन के अन्तर्गत काव्य के सभी अंगों *(रस, छंद, अलंकार आदि)* को विवेचन का विषय बनाया गया है। चिन्तामणि का 'कविकुलकल्पतरु', देव का 'शब्द रसायन', कुलपति का 'रस रहस्य', भिखारी दास का 'काव्य निर्णय' इसी तरह के ग्रंथ हैं।

(ii) विशिष्टांग विवेचन : विशिष्टांग विवेचन के तहत काव्यांगों में रस, छंद व अलंकारों में से किसी एक अथवा दो अथवा तीनों का विवेचन का विषय बनाया गया है। तीनों में रस में और रस में भी शृंगार रस में रचनाकारों ने विशेष दिलचस्पी दिखाई है। 'रसविलास' *(चिंतामणि)*, 'रसार्णव' *(सुखदेव मिश्र)*, 'रस प्रबोध' *(रसलीन)*, 'रसराज' *(मतिराम)*, 'शृंगार निर्णय' *(भिखारी दास)*, 'अलंकार रत्नाकर' *(दलपति राय)*, 'छंद विलास' *(माखन)* आदि इसी श्रेणी के ग्रंथ हैं।

➢ रीति निरूपण की परिपाटी बहुत सतही है। रीति निरूपण में रीति कालीन रचनाकारों की रुचि शास्त्र के प्रति निष्ठा का परिणाम नहीं है बल्कि दरबार में पैदा हुई रचनात्मक आवश्यकता है। इनका उद्देश्य सिर्फ नवोदित कवियों को काव्यशास्त्र की हल्की-फुल्की जानकारी देना है तथा अपने आश्रयदाताओं पर अपने पांडित्य का धौंस जमाकर अर्थ दोहन करना है।

➢ रीतिकालीन कवियों को तीन वर्गों में बाँटा जाता है—रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध एवं रीतिमुक्त।

(i) रीतिबद्ध कवि : रीतिबद्ध कवियों *(आचार्य कवियों)* ने अपने लक्षण ग्रंथों में प्रत्यक्ष रूप से रीति परम्परा का निर्वाह किया है; जैसे—केशवदास, चिंतामणि, मतिराम, सेनापति, देव, पद्माकर आदि। आचार्य राचन्द्र शुक्ल ने केशवदास को 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा है।

(ii) रीतिसिद्ध कवि : रीतिसिद्ध कवियों की रचनाओं की पृष्ठभूमि में अप्रत्यक्ष रूप से रीति परिपाटी काम कर रही होती है। उनकी रचनाओं को पढ़ने से साफ पता चलता है कि उन्होंने काव्य शास्त्र को पचा रखा है। बिहारी, रसनिधि आदि इस वर्ग में आते हैं।

(iii) रीतिमुक्त कवि : रीति परंपरा से मुक्त कवियों को रीतिमुक्त कवि कहा जाता है। घनानंद, आलम, ठाकुर, बोधा, द्विजदेव आदि इस वर्ग में आते हैं।

➢ रीतिकालीन आचार्यों में देव एकमात्र अपवाद हैं जिन्होंने रीति निरूपण के क्षेत्र में मौलिक उद्‌भावनाएं की।

➢ रीतिकाल की दूसरी मुख्य प्रवृत्ति शृंगारिकता थी।

(i) रीतिबद्ध कवियों की शृंगारिकता : रीतिबद्ध कवियों ने काव्यांग निरूपण करते हुए उदाहरणस्वरूप शृंगारिक रचनाएं प्रस्तुत की है। केशवदास, चिंतामणि, देव, मतिराम आदि की रचनाओं में इसे देखा जा सकता है।

(ii) रीतिसिद्ध कवियों की शृंगारिकता : रीतिसिद्ध कवियों का काव्य रीति निरूपण से तो दूर है, किन्तु रीति की छाप लिए हुए है। बिहारी, रसनिधि आदि की रचनाओं में इसे देखा जा सकता है।

(iii) रीतिमुक्त कवियों की शृंगारिकता : रीतिमुक्त कवियों की शृंगारिकता विशिष्ट प्रकार की है। रीतिमुक्त कवि 'प्रेम की पीर' के सच्चे गायक थे। इनके शृंगार में प्रेम की तीव्रता भी है एवं आत्मा की पुकार भी। घनानंद, आलम, ठाकुर, बोधा आदि की रचनाओं में इसे महसूस किया जा सकता है।

➢ आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है : "शृंगार रस के ग्रंथों में जितनी ख्याति और जितना मान 'बिहारी सतसई' का हुआ उतना और किसी का नहीं। इसका एक-एक दोहा हिन्दी साहित्य में एक-एक रत्न माना जाता है। ..... बिहारी ने इस सतसई के अतिरिक्त और कोई ग्रंथ नहीं लिखा। यही एक ग्रंथ उनकी इतनी बड़ी कीर्ति का आधार है। ..... मुक्तक कविता में जो गुण होना चाहिए वह बिहारी के दोहों में अपने चरम उत्कर्ष को पहुँचा है, इसमें कोई संदेह नहीं। ..... जिस कवि में कल्पना की समाहार शक्ति के साथ भाषा की समाहार शक्ति जितनी अधिक होगी उतनी ही वह मुक्तक की रचना में सफल होगा। यह क्षमता बिहारी में पूर्ण रूप से वर्तमान थी। इसी से वे दोहे ऐसे छोटे छंद में इतना रस भर सके हैं। इनके दोहे क्या हैं रस के छोटे-छोटे छींटें हैं।"

थोड़े में बहुत कुछ कहने की अद्‌भुत क्षमता को देखते हुए किसी ने कहा है—

सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगे, घाव करै गंभीर।।

अर्थात् जिस तरह नावक अर्थात् तीरंदाज के तीर देखने में छोटे होते हैं पर गंभीर घाव करते हैं, उसी तरह बिहारी सतसई के दोहे देखने में छोटे लगते हैं पर अत्यंत गहरा प्रभाव छोड़ते हैं।

➢ *रीतिकाल की गौण प्रवृत्तियाँ थीं—भक्ति, वीरकाव्य/राज प्रशस्ति व नीति।*

➢ *रीतिकाल में भक्ति की प्रवृत्ति मंगलाचरणों, ग्रंथों की समाप्ति पर आशीर्वचनों, काव्यांग विवेचन संबंधी ग्रंथों में दिए गए उदाहरणों आदि में मिलती है।*

➢ *रीतिकाल में लाल कवि, पद्माकर भट्ट, सूदन, खुमान, जोधराज आदि ने जहाँ प्रबंधात्मक वीर-काव्य की रचना की, वहीं भूषण, बाँकी दास आदि मुक्तक वीर-काव्य की। इन कवियों ने अपने संरक्षक राजाओं का ओजस्वी वर्णन किया है।*

➢ *रीतिकाल में वृन्द, रामसहाय दास, दीन दयाल गिरि, गिरिधर, कविराय, घाघ-भड्डरि, वैताल आदि ने नीति विषयक रचनाएँ रची।*

➢ रीतिकालीन शिल्पगत विशेषताएँ : 1. सतसई परम्परा का पुनरुद्धार 2. काव्य भाषा—ब्रजभाषा *(श्रुति मधुर व कोमल कांत पदावलियों से युक्त तराशी हुई भाषा)* 3. काव्य-रूप—मुख्यतः मुक्तक का प्रयोग 4. दोहा छंद की प्रधानता *(दोहे 'गागर में सागर' शैली वाली कहावत को चरितार्थ करते है तथा लोकप्रियता के लिहाज से संस्कृत के 'श्लोक' एवं अरबी-फारसी के शेर के समतुल्य है।)*: दोहे के अलावा 'सवैया' *(शृंगार रस के अनुकूल छंद)* और 'कवित्त' *(वीर रस के अनुकूल छंद)* रीति कवियों के प्रिय छंद थे। केशवदास की 'रामचंद्रिका' को 'छंदों का अजायबघर' कहा जाता है।

➢ रीतिमुक्त/रीति स्वच्छन्द काव्य की विशेषताएँ : बंधन या परिपाटी से मुक्त रहकर रीतिकाव्य धारा के प्रवाह के विरुद्ध एक अलग तथा विशिष्ट पहचान बनाने वाली काव्यधारा 'रीतिमुक्त काव्य' के नाम से जाना जाता है। रीतिमुक्त काव्य की विशेषताएँ थीं : 1. रीति स्वच्छंदता 2. स्वअनुभूत प्रेम की अभिव्यक्ति 3. विरह का आधिक्य 4. कला पक्ष के स्थान पर भाव पक्ष पर जोर 5. पृथक् काव्यादर्श/ प्राचीन काव्य परम्परा का त्याग 6. सहज, स्वाभाविक एवं प्रभावी अभिव्यक्ति 7. सरल, मनोहारी बिम्ब योजना व सटीक प्रतीक विधान।

➢ रीतिकालीन देव ने फ्रायड की तरह, लेकिन फ्रायड के बहुत पहले ही, काम *(Sex)* को समस्त जीवों की प्रक्रियाओं के केन्द्र में रखकर अपने समय में क्रांतिकारी चिंतन दिया।

प्रसिद्ध पंक्तियाँ

➢ इत आवति चलि, जाति उत चली छ सातक हाथ।
चढ़ि हिंडोरे सी रहै लागे उसासनु हाथ।।
(विरही नायिका इतनी अशक्त हो गयी है कि सांस लेने मात्र से छः सात हाथ पीछे चली जाती है और सांस छोड़ने मात्र से छः सात हाथ आगे चली जाती है। ऐसा लगता है मानो जमीन पर खड़ी न होकर हिंडोले पर चढ़ी हुई है।)
—बिहारी

➢ वासर की संपति उलूक ज्यों न चितवत
(जिस तरह दिन में उल्लू संपत्ति की ओर नहीं ताकते उसी तरह राम अन्य स्त्रियों की तरफ नहीं देखते।)—केशवदास

➢ आगे के कवि रीझिहें, तो कविताई, न तौ
राधिका कन्हाई सुमिरन को बहानो है।
(आगे के कवि रीझें तो कविता है अन्यथा राधा-कृष्ण के स्मरण का बहाना ही सही।) *—भिखारी दास*

➢ जान्यौ चहै जु थोरे ही, रस कविता को बंस।
तिन्ह रसिकन के हेतु यह, कान्हों रस सारंस।।
—भिखारीदास

➢ काव्य की रीति सिखी सुकवीन सों
(मैंने काव्य की रीति कवियों से ही सीखी है।)—भिखारीदास

➢ तुलसी गंग दुवौ भए सुकविन के सरदार *—भिखारीदास*

➢ रीति सुभाषा कवित की बरनत बुधि अनुसार *—चिंतामणि*

➢ अपनी-अपनी रीति के काव्य और कवि-रीति *—देव*

➢ अति सूधो सनेह को मारग है, जहाँ नैकु सयानप बाँक नहीं।
तहँ साँचे चलैं ताजि आपनपौ, झिझकै कपटी जे निसाक नहीं।
—घनानंद

➢ यह कैसो संयोग न सूझि पड़ै जो वियोग न एको विछोहत है —घनानंद

➢ मोहे तो मेरे कवित्त बनावत। —घनानंद

➢ यह प्रेम को पंथ कराल महा तरवारि की धार पर धावनो है —बोधा

➢ जदपि सुजाति सुलक्षणी सुवरण सरस सुवृत्त।
भूषण बिनु न विराजई कविता वनिता मीत।। —केशवदास

➢ लोचन, वचन, प्रसाद, मृदु हास, वास चित्त मोद।
इतने प्रगट जानिये वरनत सुकवि विनोद ।। —मतिराम

➢ युक्ति सराही मुक्ति हेतु, मुक्ति भुक्ति को धाम।
युक्ति, मुक्ति और भुक्ति को मूल सो कहिये काम।। —देव

➢ दृग अरुझत, टूटत कुटुम्ब, जुरत चतुर चित प्रीति।
पड़ति गांठ दुर्जन हिये दई नई यह रीति।। —बिहारी

➢ फागु के भीर अभीरन में गहि
गोविंदै लै गई भीतर गोरी।
भाई करी मन की पद्माकर,
ऊपर नाहिं अबीर की झोरी।
छीनी पितंबर कम्मर ते सु
विदा दई मीड़ि कपोलन रोरी
नैन नचाय कही मुसकाय,
'लला फिर आइयो खेलन होरी'। —पद्माकर

➢ आँखिन मूंदिबै के मिस,
आनि अचानक पीठि उरोज लगावै —चिंतामणि

➢ मानस की जात सभै एकै पहिचानबो —गुरु गोविंद सिंह

➢ अभिधा उत्तम काव्य है मध्य लक्षणा लीन
अधम व्यंजना रस विरस, उलटी कहत प्रवीन। —देव

➢ अमिय, हलाहल, मदभरे, सेत, स्याम, रतनार।
जियत, मरत, झुकि-झुकि परत, जेहि चितवत एक बार।।
—रसलीन

➢ भले बुरे सम, जौ लौ बोलत नाहिं
जानि परत है काक पिक, ऋतु बसंत के माहिं। —वृन्द

➢ कनक छुरी सी कामिनी काहे को कटि छीन —आलम

➢ नेही महा ब्रजभाषा प्रवीन और सुंदरतानि के भेद को जानै
—ब्रजनाथ

➢ एक सुभान कै आनन पै कुरबान जहाँ लगि रूप जहाँ को
—बोधा

➢ आलम नेवाज सिरताज पातसाहन के
गाज ते दराज कौन नजर तिहारी है —चन्द्रशेखर

➢ देखे मुख भावै अनदेखे कमल चंद
ताते मुख मुरझे कमला न चंद। —केशवदास

➢ सटपटाति-सी ससि मुखी मुख घूँघट पर ढाँकि —बिहारी

➢ मेरी भव बाधा हरो —बिहारी

➢ कुंदन का रंग फीको लगै, झलकै अति अंगनि चारू गोराई।
आँखिन में अलसानि, चित्तौन में मंजु विलासन की सरसाई।।
को बिन मोल बिकात नहीं मतिराम लहे मुसकानि मिठाई।
ज्यों-ज्यों निहारिए नेरे ह्वै नैननि त्यों-त्यों खरी निकरै सी निकाई।।
—मतिराम

➢ तंत्रीनाद कवित्त रस सरस राग रति रंग।
अनबूड़े बूड़े तिरे जे बूड़े सब अंग।। —बिहारी

➢ साजि चतुरंग वीर रंग में तुरंग चढि —भूषण

➢ गुलगुली गिलमैं, गलीचा है, गुनीजन हैं,
चिक हैं, चिराकैं हैं, चिरागन की माला हैं।
कहै पद्माकर है गजक गजा हू सजी,
सज्जा हैं, सुरा हैं, सुराही हैं, सुप्याला हैं। —पद्माकर

➢ रावरे रूप की रीति अनूप, नयो नयो लागै ज्यौं ज्यौं निहारियै।
त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहिं आन तिहारियै।
—घनानंद

➢ घनानंद प्यारे सुजान सुनौ, इत एक तें दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन सी पाटी पढ़े हो लला, मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।।
[सुजान—घनानंद की प्रेमिका का नाम; घनानंद ने प्रायः सुजान (एक अर्थ—सुजान, दूसरा अर्थ—श्रीकृष्ण) को संबोधित करते हुए अपनी कविताएँ रची हैं] —घनानंद

➢ चाह के रंग मैं भीज्यौ हियो, बिछुरें-मिलें प्रीतम सांति न मानै।
भाषा प्रबीन, सुछंद सदा रहै, सो घनजी के कबित्त बखानै।।
—ब्रजनाथ (घनानंद के कवि-मित्र एवं प्रशस्तिकार)

उत्तर-मध्यकालीन/रीतिकालीन रचना एवं रचनाकार

रचनाकार	उत्तर-मध्यकालीन/रीतिकालीन रचना
चिंतामणि	कविकुल कल्पतरु, रस विलास, काव्य विवेक, शृंगार मंजरी, छंद विचार
मतिराम	रसराज, ललित ललाम, अलंकार पंचाशिका, वृत्तकौमुदी
राजा जसवंत सिंह	भाषा भूषण
भिखारी दास	काव्य निर्णय, शृंगार निर्णय
याकूब खाँ	रस भूषण
रसिक सुमति	अलंकार चन्द्रोदय
दूलह	कवि कुल कण्ठाभरण
देव	शब्द रसायन, काव्य रसायन, भाव विलास, भवानी विलास, सुजान विनोद, सुख सागर तरंग
कुलपति मिश्र	रस रहस्य
सुखदेव मिश्र	रसार्णव
रसलीन	रस प्रबोध
दलपति राय	अलंकार रत्नाकर
माखन	छंद विलास
बिहारी	बिहारी सतसई
रसनिधि	रतनहजारा
घनानन्द	सुजान हित प्रबंध, वियोग बेलि, इश्कलता, प्रीति पावस, पदावली
आलम	आलम केलि
ठाकुर	ठाकुर ठसक
बोधा	विरह वारीश, इश्कनामा
द्विजदेव	शृंगार बत्तीसी, शृंगार चालीसी, शृंगार लतिका
लाल कवि	छत्र प्रकाश (प्रबंध)
पद्माकर भट्ट	हिम्मत बहादुर विरुदावली (प्रबंध)
सूदन	सुजान चरित (प्रबंध)
खुमान	लक्ष्मण शतक
जोधराज	हम्मीर रासो
भूषण	शिवराज भूषण, शिवा बावनी, छत्रसाल दशक
वृन्द	वृन्द सतसई
राम सहाय दास	राम सतसई
दीन दयाल गिरि	अन्योक्ति कल्पद्रुम
गिरिधर कविराय	स्फुट छन्द
गुरु गोविंद सिंह	सुनीति प्रकाश, सर्वसोलह प्रकाश, चण्डी चरित्र

आधुनिक काल (1850 ई०–अब तक)

भारतेन्दु युग (1850 ई०–1900 ई०)

- भारतेन्दु युग का नामकरण हिन्दी नवजागरण के अग्रदूत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाम पर किया गया है।
- भारतेन्दु युग की प्रवृत्तियाँ थीं—1. नवजागरण, 2. सामाजिक चेतना, 3. भक्ति भावना, 4. शृंगारिकता, 5. रीति निरूपण, 6. समस्या-पूर्ति।
- भारतेन्दु युग में भारतेन्दु को केन्द्र में रखते हुए अनेक कृती साहित्यकारों का एक उज्ज्वल मंडल प्रस्तुत हुआ, जिसे 'भारतेन्दु मण्डल' के नाम से जाना गया। इसमें भारतेन्दु के समानधर्मा रचनाकार थे। इस मंडल के रचनाकारों ने भारतेन्दु से प्रेरणा ग्रहण की और हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि का काम किया।
- भारतेन्दु मंडल के प्रमुख रचनाकार हैं—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रताप नारायण मिश्र, बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन', बाल कृष्ण भट्ट, अम्बिका दत्त व्यास, राधा चरण गोस्वामी, ठाकुर जगमोहन सिंह, लाला श्री निवास दास, सुधाकर द्विवेदी, राधा कृष्ण दास आदि।
- भारतेन्दु मण्डल के रचनाकारों का मूल स्वर नवजागरण है। नवजागरण की पहली अनुभूति हमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचनाओं में मिलती है।
- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के पिता गोपाल चन्द्र 'गिरिधर दास' अपने समय के प्रसिद्ध कवि थे।
- भारतेन्दु युगीन नवजागरण में एक ओर राजभक्ति *(ब्रिटिश शासन की प्रशंसा)* है तो दूसरी ओर देशभक्ति *(ब्रिटिश शोषण का विरोध)*।
- सामाजिक चेतना के चित्रण में कुछ कवियों की दृष्टि सुधारवादी थी तो कुछ कवियों की यथास्थितिवादी।
- भारतेन्दु युग में नारी शिक्षा, विधवाओं की दुर्दशा, छुआछूत आदि को लेकर सहानुभूतिपूर्ण कविताएं लिखी गयीं।
- भारतेन्दु युगीन कवियों ने जनता की समस्याओं का व्यापक रूप से चित्रण किया।
- भारतेन्दु युगीन भक्ति अन्य युगों की भाँति भक्ति-संप्रदाय निर्धारित भक्ति नहीं है। एक ही रचनाकार सगुण और निर्गुण दोनों तरह के पद रचते हैं।
- इस युग की भक्ति रचना की विशेषता यह थी निर्गुण और सगुण भक्ति में सगुण भक्ति ही मुख्य साधना दिशा थी और सगुण भक्ति में भी कृष्ण भक्ति काव्य अधिक परिमाण में रचे गये।
- भारतेन्दु युगीन कवियों ने शृंगार चित्रण में भक्ति कालीन कृष्ण काव्य परम्परा, रीतिकालीन नख-शिख, नायिका भेदी परम्परा तथा उर्दू कविता से सम्पर्क के फलस्वरूप प्रेम की वेदनात्मक व्यंजना को अपनाया।
- भारतेन्दु युगीन कवि सेवक, सरदार, लछिराम आदि ने रीतिकालीन पद्धति को अपनाया।
- रीति निरूपण के क्षेत्र में सेवक , सरदार, हनुमान, लछिराम वाली धारा सक्रिय रही।
- रीति निरूपण की तरह समस्या पूर्ति भी रीतिकालीन काव्य-प्रवृत्ति थी जिसे भारतेन्दुयुगीन कवियों ने नया रूप दिया तथा इसे सामंतोन्मुख के स्थान पर जनोन्मुख बनाया।
- कविता को जनोन्मुख बनाने का सबसे अधिक श्रेय समस्या पूर्ति को ही है।
- भारतेन्दु 'कविता वर्धिनी सभा' के जरिये समस्यापूर्तियों का आयोजन करते थे। इसकी देखा-देखी कानपुर के 'रसिक समाज', आजमगढ़ के 'कवि समाज' ने समस्या पूर्ति के सिलसिले को आगे बढाया।
- भारतेन्दु युग में प्रबंध काव्य कम लिखे गये और जो लिखे गये वे प्रसिद्धि नहीं प्राप्त कर सके। मुक्तक कविताएँ ज्यादा लोकप्रिय हुई।
- भारतेन्दु ने उन मुक्तक काव्य-रूपों का पुनरुद्धार किया जिन्हें अमीर खुसरो के बाद लगभग भुला दिया गया था। ये हैं पहेलियाँ और मुकरियाँ।
- भारतेन्दु युग में भाषा के क्षेत्र में द्वैत वर्तमान रहा—पद्य के लिए ब्रजभाषा और गद्य के लिए खड़ी बोली। हिन्दी गद्य की प्रायः सभी विधाओं का सूत्रपात भारतेन्दु युग में हुआ।
- समग्रत : भारतेन्दु युगीन काव्य में प्राचीन व नयी काव्य प्रवृत्तियों का मिश्रण मिलता है। इसमें यदि एक ओर खुसरो कालीन काव्य प्रवृत्ति पहेली व मुकरियां, भक्ति कालीन काव्य प्रवृत्ति भक्ति भावना, रीतिकालीन काव्य प्रवृत्तियाँ शृंगारिकता, रीति निरूपण, समस्यापूर्ति जैसी पुरानी काव्य प्रवृत्तियाँ मिलती हैं तो दूसरी ओर राज भक्ति, देश भक्ति, देशानुराग की भक्ति, समाज सुधार, अर्थनीति का खुलासा, भाषा प्रेम जैसी नयी काव्य प्रवृत्तियाँ भी मिलती हैं।

प्रसिद्ध पंक्तियाँ

- रोवहु सब मिलि, आवहु 'भारत भाई' ।
  हा! हा! भारत-दुर्दशा न देखी जाई ।। —*भारतेंदु*
- कठिन सिपाही द्रोह अनल जा जल बल नासी।
  जिन भय सिर न हिलाय सकत कहुँ भारतवासी।।
  —*भारतेन्दु*
- यह जीय धरकत यह न होई कहूं कोउ सुनि लेई।
  कछु दोष दै मारहिं और रोवन न दइहिं।।
  —*प्रताप नारायण मिश्र*
- अमिय की कटोरिया सी चिरजीवी रहो विक्टोरिया रानी।
  —*अंबिका दत्त व्यास*
- अँगरेज-राज सुख साज सजे सब भारी।
  पै धन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी।। —*भारतेंदु*
- भीतर-भीतर सब रस चूसै, हँसि-हँसि के तन-मन-धन मूसै।
  जाहिर बातन में अति तेज, क्यों सखि सज्जन! नहीं अंगरेज।।
  —*भारतेंदु*
- सब गुरुजन को बुरा बतावैं, अपनी खिचड़ी अलग पकावैं।
  भीतर तत्व न, झूठी तेजी, क्यों सखि साजन नहिं अँगरेजी।।
  —*भारतेंदु*
- सर्वसु लिए जात अँगरेज,
  हम केवल लेक्चर के तेज। —*प्रताप नारायण मिश्र*
- अभी देखिये क्या दशा देश की हो,
  बदलता है रंग आसमां कैसे-कैसे। —*प्रताप नारायण मिश्र*
- हम आरत भारत वासिन पे अब दीनदयाल दया कीजिये!
  —*प्रताप नारायण मिश्र*

➢ हिन्दू मुस्लिम जैन पारसी इसाई सब जात।
सुखि होय भरे प्रेमधन सकल 'भारती भ्रात'।
—*बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन'*

➢ कौन करेजो नहिं कसकत,
सुनी विपत्ति बाल विधवन की। —*प्रताप नारायण मिश्र*

➢ हे धनियों ! क्या दीन जनों की नहीं सुनते हो हाहाकार।
जिसका मरे पड़ोसी भूखा उसके भोजन को धिक्कार।
—*बाल मुकुन्द गुप्त*

➢ बहुत फैलाये धर्म, बढाया छुआछूत का कर्म। —*भारतेन्दु*

➢ सभी धर्म में वही सत्य, सिद्धांत न और विचारो।—*भारतेन्दु*

➢ परदेसी की बुद्धि और वस्तुन की कर आस।
परवस ह्वै कबलौ कहौं रहिहों तुम वै दास।। —*भारतेन्दु*

➢ तबहि लख्यौ जहँ रह्यो एक दिन कंचन बरसत।
तहँ चौथाई जन रुखी रोटिहुँ को तरसत।।
—*प्रताप नारायण मिश्र*

➢ सखा पियारे कृष्ण के गुलाम राधा रानी के। —*भारतेन्दु*

➢ साँझ सवेरे पंछी सब क्या कहते हैं कुछ तेरा है।
हम सब इक दिन उड़ जायेंगे यह दिन चार बसेरा है।
—*भारतेन्दु*

➢ समस्या : आँखियाँ दुखिया नहीं मानति है
समस्या पूर्ति : यह संग में लागिये डोले सदा
बिन देखे न धीरज आनति है
प्रिय प्यारे तिहारे बिना
आँखियाँ दुखिया नहीं मानति है।
—*भारतेन्दु की एक समस्यापूर्ति*

➢ निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।।—*भारतेन्दु*

➢ अँगरेजी पढ़ि के जदपि. सब गुन होत प्रवीन।
पै निज भाषा ज्ञान बिन, रहत हीन को हीन।। —*भारतेन्दु*

➢ पढ़ि कमाय कीन्हों कहा, हरे देश कलेस।
जैसे कन्ता घर रहै, तैसे रहे विदेस।।—*प्रताप नारायण मिश्र*

➢ चहहु जु साँचहु निज कल्यान, तौ सब मिलि भारत सन्तान।
जपो निरन्तर एक जबान, *हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान*।।
—*प्रताप नारायण मिश्र*

➢ भारतेन्दु ने गद्य की भाषा को परिमार्जित करके उसे बहुत ही चलता, मधुर और स्वच्छ रूप दिया। उनके भाषा संसकार की महत्ता को सब लोगों ने मुक्त कंठ से स्वीकार किया और वे वर्तमान हिन्दी गद्य के प्रवर्तक माने गए।
—*रामचन्द्र शुक्ल*

➢ 'भारतेन्दु ने हिन्दी साहित्य को एक नये मार्ग पर खड़ा किया। वे साहित्य के नये युग के प्रवर्तक हुए।' —*रामचन्द्र शुक्ल*

➢ इन मुसलमान जनन पर कोटिन हिंदू बारहि —*भारतेन्दु*
(रसखान आदि की भक्ति पर रीझकर)

➢ आठ मास बीते जजमान
अब तो करो दच्छिना दान —*प्रताप नारायण मिश्र*

➢ 'साहित्य जन-समूह के हृदय का विकास है'।—*बालकृष्ण भट्ट*

➢ 'हिन्दी नयी चाल में ढली, सन् 1873 ई. में'।
—*भारतेन्दु हरिश्चन्द्र*

भारतेन्दुयुगीन रचना एवं रचनाकार

रचनाकार	भारतेन्दुयुगीन रचना
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	प्रेम मालिका, प्रेम सरोवर, गीत गोविन्दानन्द, वर्षा-विनोद, विनय-प्रेम पचासा, प्रेम-फुलवारी, वेणु-गीति; दशरथ विलाप, फूलों का गुच्छा *(खड़ी बोली में)*
बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन'	जीर्ण जनपद, आनन्द अरुणोदय, हार्दिक हर्षादर्श, मयंक महिमा, अलौकिक लीला, वर्षा-बिन्दु, लालित्य लहरी, बृजचन्द पंचक
प्रताप नारायण मिश्र	प्रेमपुष्पावली, मन की लहर, लोकोक्ति शतक, तृप्यन्ताम्, शृंगार विलास, दंगल खंड, ब्रेडला स्वागत
जगमोहन सिंह	प्रेमसंपत्ति लता, श्यामालता, श्यामा- सरोजिनी, देवयानी, ऋतु संहार *(अ०)*, मेघदूत *(अ०)*
अम्बिका दत्त व्यास	पावस पचासा, सुकवि सतसई, हो हो होरी
राधा कृष्ण दास	कंस वध (अपूर्ण), भारत बारहमासा, देश दशा

द्विवेदी युग (1900 ई०–1920 ई०)

➢ द्विवेदी युग 20वीं सदी के पहले दो दशकों का युग है। इन दो दशकों के कालखण्ड ने हिन्दी कविता को शृंगारिकता से राष्ट्रीयता, जड़ता से प्रगति तथा रूढ़ि से स्वच्छंदता के द्वार पर ला खड़ा किया।

➢ इस कालखंड के पथ प्रदर्शक, विचारक और सर्वस्वीकृत साहित्य नेता आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर इसका नाम द्विवेदी युग रखा गया है।

➢ यह सर्वथा उचित है क्योंकि हिन्दी के कवियों और लेखकों की एक पीढ़ी का निर्माण करने, हिन्दी के कोश निर्माण की पहल करने, हिन्दी व्याकरण को स्थिर करने और खड़ी बोली का परिष्कार करने और उसे पद्य की भाषा बनाने आदि का श्रेय बहुत हद तक महावीर प्रसाद द्विवेदी को ही है।

➢ द्विवेदी युग को 'जागरण-सुधार काल' भी कहा जाता है।

➢ द्विवेदी युग में अधिकांश कवियों ने द्विवेदी जी के दिशा निर्देश के अनुशासन में काव्य रचना की। किन्तु कुछ कवि ऐसे भी थे जो उनके अनुशासन में नही थे और काव्य सृजन कर रहे थे।

➢ इस तरह, इस युग के कवियों के दो वर्ग थे—द्विवेदी मंडल के कवि और द्विवेदी मंडल के बाहर के कवि। द्विवेदी मंडल के कवियों की काव्यधारा को 'अनुशासन की धारा' तथा द्विवेदी मंडल के बाहर के कवियों की काव्यधारा को 'स्वच्छंदता की धारा' कहा जाता है।

➢ द्विवेदी मंडल के कवियों में मैथिलीशरण गुप्त, हरिऔध, सियारामशरण गुप्त, नाथूराम शर्मा 'शंकर', महावीर प्रसाद द्विवेदी आते हैं।

➢ द्विवेदी मंडल के बाहर *(स्वच्छंदता की धारा)* के कवियों में *श्रीधर पाठक, मुकुटधर पाण्डेय, लोचन प्रसाद पांडेय, राम नरेश त्रिपाठी* आदि प्रमुख हैं। इन कवियों की विशेषताएं हैं प्रकृति का पर्यवेक्षण, उसकी स्वच्छंद भंगिमाओं का चित्रण, देशभक्ति, कथा गीत का प्रयोग, काव्य भाषा के रूप में खड़ी बोली की स्वीकृति आदि। स्वच्छंदता वादी काव्य की यही धारा आगे चलकर छायावाद में गहरी हो जाती है।

द्विवेदी युग की विशेषताएं :

1. जागरण-सुधार (राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक सुधार/सामाजिक चेतना, मानवतावाद आदि), 2. सोद्देश्यता, आदर्शपरकता व नीतिमत्ता, 3. आधुनिकता, 4. समस्या पूर्ति, 5. प्रकृति चित्रण, 6. विषय-विस्तार, इतिवृत्तात्मकता/विवरणात्मकता व उपदेशात्मकता, 7. काव्य-रूप—प्रबंध काव्य, खंड काव्य व मुक्तक कविता तीनों पर जोर, 8. गद्य और पद्य दोनों की भाषा के रूप में खड़ी बोली की मान्यता, बोधगम्य भाषा।

➢ *राम नरेश त्रिपाठी* ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रीयता की एक संकल्पना विकसित की। उनकी राय में राष्ट्रीयता के तीन खतरे हैं—विदेशी शासन *(पराधीनता)*, एक तंत्रीय शासन *(तानाशाही शासन)* और विदेशी आक्रमण। इन्हीं तीन विषयों को लेकर त्रिपाठीजी ने काव्य त्रयी *(Trio)* की रचना की 'मिलन','पथिक' व 'स्वप्न'।

➢ *मैथिली शरण गुप्त* ने दो नारी प्रधान काव्य—'साकेत' व 'यशोधरा' की रचना की।

➢ भारतेन्दु युग में जिस तरह अम्बिका चरण व्यास समस्यापूर्ति की राह से कविता के क्षेत्र में आये उसी तरह द्विवेदी युग में नाथूराम शर्मा 'शंकर'।

➢ पहली बार द्विवेदी युग में प्रकृति को काव्य-विषय के रूप में मान्यता मिली। इसके पूर्व प्रकृति या तो उद्दीपन के रूप में आती थी या फिर अप्रस्तुत विधान का अंग बनकर। द्विवदी युग में प्रकृति को आलंबन तथा प्रस्तुत विधान के रूप में मान्यता मिली। पर द्विवेदी युग में प्रकृति का स्थिर-चित्रण हुआ है, गतिशील चित्रण नहीं।

➢ द्विवेदी युगीन कविता कथात्मक तथा अभिधात्मक होने के कारण इतिवृत्तात्मक/विवरणात्मक हो गई है।

➢ प्रबंध काव्य : 'प्रिय प्रवास' व 'वैदेही वनवास' *(हरिऔध)*, 'साकेत' व 'यशोधरा' *(मैथिली शरण गुप्त)*, 'उर्मिला' *(बालकृष्ण शर्मा नवीन)* आदि।

खण्ड काव्य : 'रंग में भंग', 'पंचवटी', 'जयद्रथ वध' व 'किसान' *(मैथिलीशरण गुप्त)*, 'मिलन', 'पथिक' व 'स्वप्न' *(राम नरेश त्रिपाठी)* आदि।

➢ द्विवेदी युग के आरंभ में खड़ी बोली अनगढ, शुष्क और अस्थिर- स्वरूप थी, किन्तु, शनैः शनैः उसका स्वरूप निश्चित, सुघड़ और मधुर बनता चला गया।

➢ खड़ी बोली के स्वरूप निर्धारण और विकास का श्रेय द्विवेदी युग को है। *मैथिली शरण गुप्त* द्विवेदी युग के सर्वाधिक प्रसिद्ध कवि थे। इनकी प्रथम पुस्तक 'रंग में भंग' *(1909)* है। इनकी ख्याति का मूलाधार 'भारत-भारती' *(1912)* है। 'भारत भारती' ने हिन्दी भाषियों में जाति और देश के प्रति गर्व और गौरव की भावनाएं जगाई और तभी से ये 'राष्ट्रकवि' के रूप में विख्यात हुए। ये प्रसिद्ध राम भक्त कवि थे। 'राम चरित मानस' के पश्चात हिन्दी में राम काव्य का दूसरा प्रसिद्ध उदाहरण *मैथिली शरण गुप्त* कृत 'साकेत' है।

प्रसिद्ध पंक्तियाँ

➢ हम कौन थे, क्या हो गये हैं और क्या होंगे अभी,
आओ, विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी।
('भारत-भारती') —*मैथिली शरण गुप्त*

➢ हाँ, वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है,
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है ?
('भारत भारती') —*मैथिली शरण गुप्त*

➢ देशभक्त वीरों, मरने से नेक नहीं डरना होगा।
प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा।।
—*नाथूराम शर्मा 'शंकर'*

➢ धरती हिलाकर नींव भगा दे।
वज्रनाद से व्योम जगा दे।
क्षेय, और कुछ लाग लगा दे।
(स्वदेश संगीत) —*मैथिली शरण गुप्त*

➢ जिसको नहीं गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं नरपशु निरा है, और मृतक समान है।।
—*मैथिली शरण गुप्त*

➢ वन्दनीय वह देश जहाँ के देशी निज अभिमानी हों।
बांधवता में बँधे परस्पर परता के अज्ञानी हों।।
—*श्रीधर पाठक*

➢ पराधीन रहकर अपना मुख शोक न कह सकता है।
यह अपमान जगत में केवल पशु ही सह सकता है।।
—*राम नरेश त्रिपाठी*

➢ सखि, वे मुझसे कहकर जाते
('यशोधरा') —*मैथिली शरण गुप्त*

➢ अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।।
('यशोधरा') —*मैथिली शरण गुप्त*

➢ नारी पर नर का कितना अत्याचार है।
लगता है विद्रोह मात्र ही अब उसका प्रतिकार है।।
—*मैथिली शरण गुप्त*

➢ राम तुम मानव हो ईश्वर नहीं हो क्या ?
विश्व में रमे हुए सब कहीं नहीं हो क्या ?
—*मैथिली शरण गुप्त*

➢ मैं ढूंढता तुझे था जब कुंज और वन में,
तू मुझे खोजता था जब दीन के वतन में।
तू आह वन किसी को मुझको पुकारता था,
मैं था तुझे बुलाता संगीत के भजन में।।—*राम नरेश त्रिपाठी*

➢ साहित्य समाज का दर्पण है। —*महावीर प्रसाद द्विवेदी*

➢ केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए,
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।
('भारत-भारती') —*मैथिली शरण गुप्त*

➢ अधिकार खोकर बैठना यह महा दुष्कर्म है,
न्यायार्थ अपने बंधु को भी दंड देना धर्म है।
('जयद्रथ वध') —*मैथिली शरण गुप्त*

➢ अन्न नहीं है वस्त्र नहीं है रहने का न ठिकाना
कोई नहीं किसी का साथी अपना और बिगाना।
—*रामनरेश त्रिपाठी*

➢ दिवस का अवसान समीप था,
गगन था कुछ लोहित हो चला
तरु शिखा पर थी अब राजति
कमलिनी कुल-वल्लभ की प्रभा
('प्रिय प्रवास') —*अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'*

➢ अहा, ग्राम्य जीवन भी क्या है,
क्यों न इसे सबका मन चाहे। —*मैथिली शरण गुप्त*

➢ खरीफ के खेतों में जब सुनसान है,
रब्बी के ऊपर किसान का ध्यान है। —*श्रीधर पाठक*

➢ विजन वन-प्रांत था, प्रकृति मुख शांत था,
अटन का समय था, रजनि का उदय था। —*श्रीधर पाठक*

➢ लख अपार-प्रसार गिरीन्द में।
ब्रज धराधिप के प्रिय-पुत्र का।
सकल लोग लगे कहने, उसे
रख लिया है उँगली पर श्याम ने।
(*'प्रियप्रवास'*) —*'हरिऔध'*

➢ संदेश नहीं मैं यहाँ स्वर्ग का लाया,
इस धरती को ही स्वर्ग बनाने आया।
(*'साकेत'*) —*मैथिली शरण गुप्त*

➢ 'मैथिली शरण गुप्त की प्रतिभा की सबसे बड़ी विशेषता है कालानुसरण की क्षमता अर्थात् उत्तरोत्तर बदलती हुई भावनाओं और काव्य प्रणालियों को ग्रहण करते चलने की शक्ति। इस दृष्टि से हिन्दी भाषी जनता के प्रतिनिधि कवि ये निस्संदेह कहे जा सकते हैं'। —*रामचन्द्र शुक्ल*

➢ मैं आया उनके हेतु कि जो शापित हैं,
जो विवश, बलहीन दीन शापित है
(*'साकेत' में राम की उक्ति*) —*मैथिलीशरण गुप्त*

➢ हम राज्य लिये मरते हैं —*मैथिलीशरण गुप्त*

द्विवेदीयुगीन रचना एवं रचनाकार

रचनाकार	द्विवेदीयुगीन रचना
नाथूराम शर्मा 'शंकर'	अनुराग रत्न, शंकर सरोज, गर्भरण्डा रहस्य, शंकर सर्वस्व
श्रीधर पाठक	वनाष्टक, काश्मीर सुषमा, देहरादून, भारत गीत, जार्ज वंदना (कविता), बाल विधवा (कविता)
महावीर प्रसाद द्विवेदी	काव्य मंजूषा, सुमन, कान्यकुब्ज अबला-विलाप
'हरिऔध'	प्रियप्रवास, पद्यप्रसून, चुभते चौपदे, चोखे चौपदे, बोलचाल, रसकलस, वैदेही वनवास
राय देवी प्रसाद 'पूर्ण'	स्वदेशी कुण्डल, मृत्युंजय, राम-रावण विरोध, वसन्त-वियोग
रामचरित उपाध्याय	राष्ट्र भारती, देवदूत, देवसभा, विचित्र विवाह, रामचरित-चिन्तामणि (प्रबंध)
गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'	कृषक-क्रन्दन, प्रेम प्रचीसी, राष्ट्रीय वीणा, त्रिशूल तरंग, करुणा कादंबिनी
मैथिली शरण गुप्त	रंग में भंग, जयद्रथ वध, भारत भारती, पंचवटी, झंकार, साकेत, यशोधरा, द्वापर, जय भारत, विष्णु प्रिया
रामनरेश त्रिपाठी	मिलन, पथिक, स्वप्न, मानसी
बाल मुकुन्द गुप्त	स्फुट कविता
लाला भगवानदीन 'दीन'	वीर क्षत्राणी, वीर बालक, वीर पंचरत्न, नवीन बीन
लोचन प्रसाद पाण्डेय	प्रवासी, मेवाड़ गाथा, महानदी, पद्य पुष्पांजलि
मुकुटधर पाण्डेय	पूजा फूल, कानन कुसुम

छायावाद युग (1918 ई०–1936 ई०)

➢ 'छायावाद' के वास्तविक अर्थ को लेकर विद्वानों में मतभेद है।

➢ छायावाद का अर्थ मुकुटधर पाण्डेय ने 'रहस्यवाद', सुशील कुमार ने 'अस्पष्टता', महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'अन्योक्ति पद्धति', रामचन्द्र शुक्ल ने 'शैली वैचित्र्य', नंद दुलारे बाजपेयी ने 'आध्यात्मिक छाया का भान', डॉ० नगेन्द्र ने 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह' बताया है।

➢ नामवर सिंह के शब्दों में, 'छायावाद शब्द का अर्थ चाहे जो हो परंतु व्यावहारिक दृष्टि से यह प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी की उन समस्त कविताओं का द्योतक है जो 1918 ई० से लेकर 1936 ई० (*'उच्छवास' से 'युगान्त'*) तक लिखी गई'।

➢ सामान्य तौर पर किसी कविता के भावों की छाया यदि कहीं अन्यत्र जाकर पड़े तो वह 'छायावादी कविता' है। उदाहरण के तौर पर पंत की निम्न पंक्तियाँ देखी जा सकती हैं जो कहा तो जा रहा है छाँह के बारे में लेकिन अर्थ निकल रहा है नारी स्वातंत्र्य संबंधी :

कहो कौन तुम दमयंती सी इस तरु के नीचे सोयी, अहा तुम्हें भी त्याग गया क्या अलि नल-सा निष्ठुर कोई।

➢ छायावाद युग की विशेषताएं : 1. आत्माभिव्यक्ति अर्थात 'मैं' शैली/उत्तम पुरुष शैली, 2. आत्म-विस्तार/सामाजिक रूढ़ियों से मुक्ति 3. प्रकृति प्रेम 4. नारी प्रेम एवं उसकी मुक्ति का स्वर 5. अज्ञात व असीम के प्रति जिज्ञासा (रहस्यवाद) 6. सांस्कृतिक चेतना व सामाजिक चेतना/मानवतावाद 7. स्वच्छंद कल्पना का नवोन्मेष 8. विविध काव्य-रूपों का प्रयोग 9. काव्य-भाषा—ललित-लवंगी कोमल कांत पदावली वाली भाषा 10. मुक्त छंद का प्रयोग 11. प्रकृति संबंधी बिम्बों की बहुलता 12. भारतीय अलंकारों के साथ-साथ अंग्रेजी साहित्य के मानवीकरण व विशेषण विपर्यय अलंकारों का विपुल प्रयोग।

➢ छायावाद के कवि चातुष्टय —*प्रसाद, निराला, पंत व महादेवी*

➢ छायावादी काव्य में प्रसाद ने यदि प्रकृति को मिलाया, निराला ने मुक्तक छन्द दिया, पंत ने शब्दों को खराद पर चढ़ाकर सुडौल और सरस बनाया, तो महादेवी ने उसमें प्राण डाले।

➢ छायावाद को हिन्दी साहित्य में भक्ति काव्य के बाद स्थान दिया जाता है।

➢ प्रसाद की प्रथम काव्य कृति —*उर्वशी (1909 ई०)*
प्रसाद की प्रथम छायावादी काव्य कृति —*झरना (1918 ई०)*
प्रसाद की अंतिम काव्य कृति
—*कामायनी (1937 ई०)—सर्वाधिक प्रसिद्ध काव्य कृति*

➢ कामायनी के पात्र —*मनु, श्रद्धा व इड़ा*

➢ पंत की प्रथम छायावादी काव्य कृति—*उच्छवास (1918 ई०)*
पंत की अंतिम छायावादी काव्य कृति —*गुंजन (1932 ई०)*

छायावाद युग में विविध काव्य रूपों का प्रयोग हुआ

मुक्तक काव्य	सर्वाधिक लोकप्रिय
गीति काव्य	'करुणालय' (प्रसाद), 'पंचवटी प्रसंग' (निराला), 'शिल्पी' व 'सौवर्ण रजत शिखर' (पंत)

प्रबंध काव्य	'कामायनी' व 'प्रेम पथिक' (प्रसाद), 'ग्रंथि', 'लोकायतन' व 'सत्यकाम' (पंत), 'तुलसीदास' (निराला)
लंबी कविता	'प्रलय की छाया' व 'शेर सिंह का शस्त्र समर्पण' (प्रसाद); 'सरोज स्मृति' व 'राम की शक्ति पूजा' (निराला); 'परिवर्तन' (पंत)

प्रसिद्ध पंक्तियाँ

➢ मैंने मैं शैली अपनाई
देखा एक दुःखी निज भाई। —*निराला*

➢ व्यर्थ हो गया जीवन
मैं रण में गया हार । *('वनवेला')* —*निराला*

➢ धन्ये, मैं पिता निरर्थक था
कुछ भी तेरे हित न कर सका।
जाना तो अर्थागमोपाय
पर रहा सदा संकुचित काय
लखकर अनर्थ आर्थिक पथ पर
हारता रहा मैं स्वार्थ समर। *('सरोज स्मृति')* —*निराला*

➢ छोटे से घर की लघु सीमा में
बंधे है क्षुद्र भाव,
यह सच है प्रिय
प्रेम का पयोनिधि तो उमड़ता है
सदा ही निःसीम भू पर। *('पंचवटी प्रसंग')* —*निराला*

➢ ताल-ताल से रे सदियों के जकड़े हृदय कपाट
खोल दे कर-कर कठिन प्रहार
आए अभ्यन्तर संयत चरणों से नव्य विराट
करे दर्शन पाये आभार। —*निराला*

➢ हाँ सखि ! आओ बाँह खोलकर हम
लगकर गले जुड़ा ले प्राण
फिर तुम तम में, मैं प्रियतम में
हो जावें द्रुत अंतर्धान। —*पंत*

➢ बीती विभावरी जाग री !
अम्बर-पनघट में डूबो रही
तारा-घट-ऊषा-नागरी। —*प्रसाद*

➢ दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या सुंदरी परी-सी
धीरे-धीरे-धीरे। *('संध्या सुन्दरी')* —*निराला*

➢ छोड़ द्रुमों की मृदु छाया
तोड़ प्रकृति से भी माया
बाले तेरे बाल-जाल में
कैसे उलझा दूँ लोचन ? —*पंत*

➢ नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।
('कामायनी') —*प्रसाद*

➢ मैं नीर भरी दुःख की बदली। —*महादेवी*

➢ तुमको पीड़ा में ढूँढ़ा
तुमको ढूँढ़ेगी पीड़ा —*महादेवी*

➢ नील परिधान बीच सुकुमार
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघ बीच गुलाबी रंग। *('कामायनी')* —*प्रसाद*

➢ तोड़ दो यह झितिज, मैं भी देख लूं उस ओर क्या है ?
जा रहे जिस पंथ से युग कल्प, उसका छोर क्या है ?
—*महादेवी*

➢ स्तब्ध ज्योत्सना में जब संसार
चकित रहता शिशु सा नादान,
विश्व के पलकों पर सुकुमार
विचरते हैं स्वप्न अजान !
न जाने, नक्षत्रों से कौन ?
निमंत्रण देता मुझको मौन !! *('मौन निमंत्रण')* —*पंत*

➢ ले चल वहाँ भुलावा देकर
मेरे नाविक ! धीर-धीरे।
जिस निर्जन में सागर लहरी
अम्बर के कानों में गहरी
निश्छल प्रेम कथा कहती हो
तज कोलाहल की अवनी रे। *('लहर')* —*प्रसाद*

➢ हिमालय के आंगन में जिसे प्रथम किरणों का दे उपहार
—*प्रसाद*

➢ राजनीति का प्रश्न नहीं रे आज
जगत के सम्मुख एक वृहत सांस्कृतिक समस्या जग के निकट
उपस्थित —*पंत*

➢ छोड़ो मत ये सुख का कण है। —*प्रसाद*

➢ आह ! वेदना मिली विदाई। *('स्कंदगुप्त')* —*प्रसाद*

➢ जिए तो सदा उसी के लिए यही अभिमान रहे यह हर्ष
निछावर कर दे हम सर्वस्व हमारा प्यारा भारतवर्ष।
('स्कंदगुप्त') —*प्रसाद*

➢ अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान झितिज को मिलता एक सहारा।
('चन्द्रगुप्त') —*प्रसाद*

➢ हिमाद्रि तुंग शृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला
स्वतंत्रता पुकारती
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पथ है—बढ़े चलो, बढ़े चलो। *('चन्द्रगुप्त')*
—*प्रसाद*

➢ भारत माता ग्रामवासिनी। —*पंत*

➢ भारति जय विजय करे। —*निराला*

➢ शेरो की माँद में
आया है आज स्यार
जागो फिर एक बार। —*निराला*

➢ वह आता
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता। —*निराला*

➢ वह तोड़ती पत्थर।
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर। —*निराला*

➢ वियोगी होगा पहला कवि आह से उपजा होगा गान।
उमड़ कर आँखों से चुपचाप बही होगी कविता अनजान॥
—*पंत*

➤ विजन-वन-वल्लरी पर
सोती थी सुहाग भरी
स्नेह-स्वप्न-मग्न-अमल-कोमल तन तरुणी
जूही की कली
दृग बंद किए, शिथिल पत्रांक में। *('जूही की कली')*
—निराला

➤ खुल गये छंद के बंध
प्रास के रजत पाश। *—पंत*

➤ मुक्त छंद
सहज प्रकाशन वह मन का
निज भावों का प्रकट अकृत्रिम चित्र। *—निराला*

➤ तुमुल कोलाहल में
मैं हृदय की बात रे मन। *('कामायनी')* *—प्रसाद*

➤ प्रथम रश्मि का आना रंगिणि! तूने कैसे पहचाना ? *—पंत*

➤ जो घनीभूत पीड़ा थी
मस्तक में स्मृति-सी छाई,
दुर्दिन में आँसू बनकर
वह आज बरसने आई। *('आँसू')* *—प्रसाद*

➤ बाँधो न नाव इस ठाँव, बंधु!
पूछेगा सारा गाँव, बंधु! *—निराला*

➤ हाय! मृत्यु का ऐसा अमर अपार्थिव पूजन।
जब विषण्ण निर्जीव पड़ा हो जग का जीवन।
(ताज —'युगांत') *—पंत*

➤ 'प्रसाद पढाने योग्य है, निराला पढे जाने योग्य है और पंतजी से काव्यभाषा सीखने योग्य है'। *—अज्ञेय*

➤ 'छायावादी कविता का गौरव अक्षय है उसकी समृद्धि की समता केवल भक्ति काव्य ही कर सकता है'।*—डॉ० नगेन्द्र*

➤ 'निराला से बढकर स्वच्छंदतावादी कवि हिन्दी में नहीं है'।
—हजारी प्रसाद द्विवेदी

➤ 'मैं मजदूर हूँ, मजदूरी किए बिना मुझे भोजन करने का अधिकार नहीं'। *—प्रेमचंद*

➤ 'यदि प्रबंध काव्य एक विस्तृत वनस्थली है तो मुक्तक चुना हुआ गुलदस्ता'। *—रामचन्द्र शुक्ल*

➤ अधिकार सुख कितना मादक और सारहीन है *('स्कंदगुप्त')*
—प्रसाद

➤ स्नेह निर्झर बह गया है *— निराला*

➤ ओ वरुणा की शांत कछार *— प्रसाद*

➤ सजनि मधुर निजत्व दे कैसे मिलू अभिमानिनी मैं
—महादेवी वर्मा

➤ प्रिय के हाथ लगाए जागी, ऐसी मैं सो गई अभागी *—निराला*

➤ अधरों में राग अमंद पिये, अलकों में मलयज बंद किये
तू अब तक सोई है आली, आँखों में भरे विहाग री *— प्रसाद*

➤ कहो तुम रूपसि कौन, व्योम से उतर रही चुपचाप *— पंत*

➤ शैया सैकत पर दुग्ध धवल तन्वंगी गंगा ग्रीष्म विकल *— पंत*

➤ 'साहित्य, राजनीति के पीछे चलनेवाली सच्चाई नहीं, बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलनेवाली सच्चाई है'।
— प्रेमचंद (प्रगतिशील लेखक संघ के अध्यक्ष पद से बोलते हुए, 1936)

छायावादयुगीन रचना एवं रचनाकार

(A) छायावादी काव्य धारा	रचनाकार
उर्वशी, वनमिलन, प्रेमराज्य, अयोध्या का उद्धार, शोकोच्छवास, बभ्रूवाहन, कानन कुसुम, प्रेम पथिक, करुणालय, महाराणा का महत्व; झरना, आँसू, लहर, कामायनी *(केवल झरना से लेकर कामायनी तक छायावादी कविता है)*	जयशंकर प्रसाद
अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, सरोज स्मृति *(कविता)*, राम की शक्ति पूजा *(कविता)*	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
उच्छ्वास, ग्रन्थि, वीणा, पल्लव, गुंजन *(छायावादयुगीन)*; युगान्त, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्ण किरण, स्वर्ण धूलि, रजतशिखर, उत्तरा, वाणी, पतझर, स्वर्ण काव्य, लोकायतन	सुमित्रानंदन पंत
नीहार, रश्मि, नीरजा व सांध्य गीत *(सभी का संकलन 'यामा' नाम से)*	महादेवी वर्मा
रूपराशि, निशीथ, चित्ररेखा, आकाशगंगा	राम कुमार वर्मा
राका, मानसी, विसर्जन, युगदीप, अमृत और विष	उदय शंकर भट्ट
निर्माल्य, एकतारा, कल्पना	'वियोगी'
अन्तर्जगत	लक्ष्मी नारायण मिश्र
अनुभूति, अन्तर्ध्वनि	जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज'
(B) राष्ट्रवादी सांस्कृतिक काव्य धारा	
कैदी और कोकिला, हिमकिरीटिनी, हिम तरंगिनी, पुष्प की अभिलाषा *(क०)*	माखन लाल चतुर्वेदी
मौर्य विजय, अनाथ, दूर्वादल, विषाद, आर्द्रा, पाथेय, मृण्मयी, बापू, दैनिकी	सिया राम शरण गुप्त
त्रिधारा, मुकुल, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी *(क०)*, वीरों का कैसा हो वसंत *(क०)*	सुभद्रा कुमारी चौहान

छायावादोत्तर युग (1936 ई. के बाद)

छायावादोत्तर युग में हिन्दी काव्यधारा बहुमुखी हो जाती है—

(A) पुरानी काव्यधारा	
राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा	सियाराम शरण गुप्त, माखन लाल चतुर्वेदी, दिनकर, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सोहन लाल द्विवेदी, श्याम नारायण पाण्डेय आदि।
उत्तर-छायावादी काव्यधारा	निराला, पंत, महादेवी, जानकी वल्लभ शास्त्री आदि।
(B) नवीन काव्यधारा	
वैयक्तिक गीति कविता धारा *(प्रेम और मस्ती की काव्य धारा)*	बच्चन, नरेंद्र शर्मा, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', भगवती चरण वर्मा, नेपाली, आरसी प्रसाद सिंह आदि।
प्रगतिवादी काव्यधारा	केदारनाथ अग्रवाल, राम विलास शर्मा, नागार्जुन, रांगेय राघव, शिवमंगल सिंह 'सुमन', त्रिलोचन आदि।
प्रयोगवादी काव्य धारा	अज्ञेय, गिरिजा कुमार माथुर, मुक्तिबोध, भवानी प्रसाद मिश्र, शमशेर बहादुर सिंह, धर्मवीर भारती आदि।
नयी कविता काव्य धारा	

प्रगतिवाद (1936 ई०से...)

➤ संगठित रूप में हिन्दी में प्रगतिवाद का आरंभ 'प्रगतिशील लेखक संघ' द्वारा 1936 ई० में लखनऊ में आयोजित उस अधिवेशन से होता है जिसकी अध्यक्षता प्रेमचंद ने की थी। इसमें उन्होंने कहा था, 'साहित्य का उद्देश्य दबे-कुचले हुए वर्ग की मुक्ति का होना चाहिए'।

➢ 1935 ई० में इ० एम० फोस्टर ने प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन नामक एक संस्था की नींव पेरिस में रखी थी। इसी की देखा-देखी सज्जाद जहीर और मुल्क राज आनंद ने भारत में 1936 ई० में 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना की।

➢ एक साहित्यिक आंदोलन के रूप में प्रगतिवाद का इतिहास मोटे तौर पर 1936 ई० से लेकर 1956 ई० तक का इतिहास है, जिसके प्रमुख कवि हैं—केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, राम विलास शर्मा, रांगेय राघव, शिव मंगल सिंह 'सुमन', त्रिलोचन आदि।

➢ किन्तु व्यापक अर्थ में प्रगतिवाद न तो स्थिर मतवाद है और न ही स्थिर काव्य रूप बल्कि यह निरंतर विकासशील साहित्य धारा है। प्रगतिवाद के विकास में अपना योगदान देनेवाले परवर्ती कवियों में केदारनाथ सिंह, धूमिल, कुमार विमल, अरूण कमल, राजेश जोशी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

➢ प्रगतिवादी काव्य का मूलाधार मार्क्सवादी दर्शन है पर यह मार्क्सवाद का साहित्यिक रूपांतर मात्र नहीं है। प्रगतिवादी आंदोलन की पहचान जीवन और जगत के प्रति नये दृष्टिकोण में निहित है।

➢ यह नया दृष्टिकोण था : पुराने रूढ़िबद्ध जीवन-मूल्यों का त्याग; आध्यात्मिक व रहस्यात्मक अवधारणाओं के स्थान पर लोक आधारित अवधारणाओं को मानना; हर तरह के शोषण और दमन का विरोध; धर्म, लिंग, नस्ल, भाषा, क्षेत्र पर आधृत गैर-बराबरी का विरोध; स्वतंत्रता, समानता तथा लोकतंत्र में विश्वास; परिवर्तन व प्रगति में विश्वास; मेहनतकश लोगों के प्रति गहरी सहानुभूति; नारी पर हर तरह के अत्याचार का विरोध; साहित्य का लक्ष्य सामाजिकता में मानना आदि।

➢ प्रगतिवाद वैसी साहित्यिक प्रवृत्ति है जिसमें एक प्रकार की इतिहास चेतना, सामाजिक यथार्थ दृष्टि, वर्ग चेतन विचारधारा, प्रतिबद्धता या पक्षधरता, गहरी जीवनासक्ति, परिवर्तन के लिए सजगता और एक प्रकार की भविष्योन्मुखी दृष्टि मौजूद हो।

➢ प्रगतिवादी काव्य एक सीधी-सहज-तेज-प्रखर, कभी व्यंग्यपूर्ण आक्रामक काव्य-शैली का वाचक है।

➢ प्रगतिवाद साहित्य को सोद्देश्य मानता है और उसका उद्देश्य है 'जनता के लिए जनता का चित्रण' करना। दूसरे शब्दों में, वह कला 'कला के लिए' के सिद्धांत में यकीन नहीं करता बल्कि उसका यकीन तो 'कला जीवन के लिए' के फलसफे में है। मतलब कि प्रगतिवाद आनंदवादी मूल्यों के बजाय भौतिक उपयोगितावादी मूल्यों में विश्वास करता है।

➢ राजनीति में जो स्थान 'समाजवाद' का है वही स्थान साहित्य में 'प्रगतिवाद' का है।

➢ प्रगतिवादी काव्य की विशेषताएं : 1. समाजवादी यथार्थवाद/सामाजिक यथार्थ का चित्रण, 2. प्रकृति के प्रति लगाव 3. नारी प्रेम 4. राष्ट्रीयता 5. सांप्रदायिकता का विरोध 6. बोधगम्य भाषा (जनता की भाषा में जनता की बातें) व व्यंग्यात्मकता 7. मुक्त छंद का प्रयोग (मुक्त छंद का आधार कजरी, लावनी, ठुमरी जैसे लोक गीत) 8. मुक्तक काव्य रूप का प्रयोग।

➢ छायावाद व प्रगतिवाद में अंतर

(i) छायावाद में कविता करने का उद्देश्य 'स्वान्तः सुखाय' है जबकि प्रगतिवाद में 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' है।

(ii) छायावाद में वैयक्तिक भावना प्रबल है जबकि प्रगतिवाद में सामाजिक भावना।

(iii) छायावाद में अतिशय कल्पनाशीलता है जबकि प्रगतिवाद में ठोस यथार्थ।

प्रसिद्ध पंक्तियाँ

➢ मार हथौड़ा कर-कर चोट
लाल हुए काले लोहे को
जैसा चाहे वैसा मोड़। —*केदारनाथ अग्रवाल*

➢ घुन खाए शहतीरों पर की बारहखड़ी विधाता बाँचे
फटी भीत है, छत चूती है, आले पर विसतुइया नाचे
बरसाकर बेबस बच्चों पर मिनट-मिनट में पाँच तमाचे
दुखरन मास्टर गढ़ते रहते किसी तरह आदम के साँचे।
—*नागार्जुन*

➢ बापू के भी ताऊ निकले
तीनों बंदर बापू के
सरल सूत्र उलझाऊ निकले
तीनों बंदर बापू के। —*नागार्जुन*

➢ काटो-काटो-काटो करवी
साइत और कुसाइत क्या है ?
मारो-मारो-मारो हंसिया
हिंसा और अहिंसा क्या है ?
जीवन से बढ़ हिंसा क्या है। —*केदार नाथ अग्रवाल*

➢ भारत माता ग्रामवासिनी। —*पंत*

➢ एक बीते के बराबर
यह हरा ठिंगना चना
बाँधे मुरैठा शीश पर
छोटे गुलाबी फूल
सजकर खड़ा है। —*केदार नाथ अग्रवाल*

➢ हवा हूँ, हवा हूँ
मैं वसंती हवा हूँ। —*केदार नाथ अग्रवाल*

➢ तेज धार का कर्मठ पानी
चट्टानों के ऊपर चढ़कर
मार रहा है घूंसे कसकर
तोड़ रहा है तट चट्टानी। —*केदार नाथ अग्रवाल*

➢ मुझे जगत जीवन का प्रेमी
बना रहा है प्यार तुम्हारा। —*त्रिलोचन*

➢ खेत हमारे, भूमि हमारी
सारा देश हमारा है
इसलिए तो हमको इसका
चप्पा-चप्पा प्यारा है। —*नागार्जुन*

➢ झुका यूनियन जैक
तिरंगा फिर ऊँचा लहराया
बांध तोड़ कर देखो कैसे
जन समूह लहराया। —*राम विलास शर्मा*

➢ जाने कब तक घाव भरेंगे इस घायल मानवता के
जाने कब तक सच्चे होंगे सपने सबकी समता के।
—*नरेंद्र शर्मा*

➢ मांझी न बजाओ वंशी मेरा मन डोलता
मेरा मन डोलता है जैसे जल डोलता
जल का जहाज जैसे हल-हल डोलता।—*केदार नाथ अग्रवाल*

प्रयोगवाद (1943 ई० से...)

➢ यों तो प्रयोग हरेक युग में होते आये हैं, किन्तु 'प्रयोगवाद' नाम उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया है जो कुछ नये बोधों, संवेदनाओं तथा उन्हें प्रेषित करनेवाले शिल्पगत चमत्कारों को लेकर शुरू-शुरू में 'तार सप्तक' के माध्यम से वर्ष 1943 ई० में प्रकाशन जगत में आई और जो प्रगतिशील कविताओं के साथ विकसित होती गयी तथा जिनका पर्यावसान 'नयी कविता' में हो गया।

➢ इस तरह की कविताओं को सबसे पहले नंद दुलारे बाजपेयी ने 'प्रयोगवादी कविता' कहा।

➢ प्रगतिवाद की प्रतिक्रिया में उभरे और 1943 ई० के बाद की अज्ञेय, गिरिजा कुमार माथुर, मुक्तिबोध, नेमिचंद जैन, भारत भूषण अग्रवाल, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती आदि तथा नकेनवादियों —नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार व नरेश—की कविताएँ प्रयोगवादी कविताएँ हैं। प्रयोगवाद के अगुआ कवि अज्ञेय को 'प्रयोगवाद का प्रवर्तक' कहा जाता है।

➢ चूँकि नकेनवादियों ने अपने काव्य को 'प्रयोग पद्य' यानी 'प्रपद्य' कहा है, इसलिए नकेनवाद को 'प्रपद्यवाद' भी कहा जाता है।

➢ चूँकि प्रयोगवाद का उदय प्रगतिवाद की प्रतिक्रिया में हुआ इसलिए यह स्वाभाविक था कि प्रयोगवाद समाज की तुलना में व्यक्ति को, विचार धारा की तुलना में अनुभव को, विषय वस्तु की तुलना में कलात्मकता को महत्व देता। मतलब कि प्रयोगवाद भाव में व्यक्ति-सत्य तथा शिल्प में रूपवाद का पक्षधर है।

➢ प्रयोगवाद की विशेषताएँ : 1. अनुभूति व यथार्थ का संश्लेषण/बौद्धिकता का आग्रह 2. वाद या विचार धारा का विरोध 3. निरंतर प्रयोगशीलता 4. नई राहों का अन्वेषण 5. साहस और जोखिम 6. व्यक्तिवाद 7. काम संवेदना की अभिव्यक्ति 8. शिल्पगत प्रयोग 9. भाषा-शैलीगत प्रयोग।

➢ शिल्प के प्रति आग्रह देखकर ही इन्हें आलोचकों ने रूपवादी (Formist) तथा इनकी कविताओं को 'रूपाकाराग्रही कविता' कहा।

➢ प्रगतिवाद ने जहाँ शोषित वर्ग/निम्न वर्ग के जीवन को अपनी कविता के केन्द्र में रखा था जो उनके लिए अनजीया, अनभोगा था वहाँ मध्यवर्गीय प्रयोगवादी कवियों ने उस यथार्थ का चित्रण किया जो स्वयं उनका जीया हुआ, भोगा हुआ था। इसी कारण उनकी कविता में विस्तार कम है लेकिन गहराई अधिक।

प्रसिद्ध पंक्तियाँ

➢ फूल को प्यार करो
पर झरे तो झर जाने दो
जीवन का रस लो
देह, मन, आत्मा की रसना से
पर मरे तो मर जाने दो। —*अज्ञेय*

➢ नहीं,
सांझ
एक असभ्य आदमी की जम्हाई है,...
नहीं,
सांझ
एक शरीर लड़की है,...
नहीं,
सांझ
एक रद्दी स्याहसोख है —*केसरी कुसार*

➢ कन्हाई ने प्यार किया
कितनी गोपियों को कितनी बार
पर उड़ेलते रहे अपना सदा एक रूप पर
जिसे कभी पाया नहीं
जो किसी रूप में समाया नहीं
यदि किसी प्रेयसी में उसे पा लिया होता
तो फिर दूसरे को प्यार क्यों करता। —*अज्ञेय*

➢ किन्तु हम है द्वीप
हम धारा नहीं हैं
स्थिर समर्पण है हमारा
द्वीप हैं हम। —*अज्ञेय*

➢ उड़ चल हारिल, लिये हाथ में
यही अकेला ओछा तिनका
उषा जाग उठी प्राची में
कैसी बाट, भरोसा किनका! —*अज्ञेय*

➢ ये उपमान मैले हो गये हैं
देवता इन प्रतीकों से कर गये हैं कूच
कभी बासन अधिक घिसने से मुलम्मा छूट जाता है —*अज्ञेय*

➢ 'प्रयोगवाद' हिन्दी में बैठे-ठाले का धंधा बनकर आया था। प्रयोक्ताओं के पास न तो काव्य संबंधी कोई कौशल था और न किसी प्रकार की कथनीय वस्तु थी।
('नया साहित्य : नये प्रश्न') —*नंददुलारे वाजपेयी*

नयी कविता (1951 ई० से...)

➢ यों तो 'नयी कविता' के प्रारंभ को लेकर विद्वानों में विवाद है, लेकिन 'दूसरे सप्तक' के प्रकाशन वर्ष 1951 ई०से 'नयी कविता' का प्रारंभ मानना समीचीन है। इस सप्तक के प्रायः कवियों ने अपने वक्तव्यों में अपनी कविता को नयी कविता की संज्ञा दी है।

➢ जिस तरह प्रयोगवादी काव्यांदोलन को शुरू करने का श्रेय अज्ञेय की पत्रिका 'प्रतीक' को प्राप्त है उसी तरह नयी कविता आंदोलन को शुरू करने का श्रेय *जगदीश प्रसाद गुप्त* के संपादकत्व में निकलनेवाली पत्रिका 'नयी कविता' को जाता है।

➢ 'नयी कविता' भारतीय स्वतंत्रता के बाद लिखी गयी उन कविताओं को कहा जाता है, जिनमें परम्परागत कविता से आगे नये भाव बोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नये मूल्यों और नये शिल्प विधान का अन्वेषण किया गया।

➢ *अज्ञेय* को 'नयी कविता का भारतेन्दु' कह सकते हैं क्योंकि जिस प्रकार भारतेन्दु ने जो लिखा सो लिखा ही, साथ ही उन्होंने समकालीनों को इस दिशा में प्रेरित किया उसी प्रकार अज्ञेय ने भी स्वयं पृथुल साहित्य सृजन किया तथा औरों को प्रेरित-प्रोत्साहित किया।

➢ आम तौर पर 'दूसरा सप्तक' और 'तीसरा सप्तक' के कवियों को नयी कविता के कवियों में शामिल किया जाता है। 'दूसरा सप्तक' के कविगण : *रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता, शमशेर बहादुर सिंह, भवानी प्रसाद मिश्र, शकुंतला माथुर* व *हरि नारायण व्यास*। 'तीसरा सप्तक' के कविगण : *कीर्ति चौधरी, प्रयाग नारायण त्रिपाठी, केदार नाथ सिंह, कुँवर नारायण, विजयदेव नारायण साही, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना* व *मदन वात्स्यायन*। अन्य कवि : *श्रीकांत वर्मा, दुष्यंत कुमार, मलयज, सुरेंद्र तिवारी, धूमिल, लक्ष्मीकांत वर्मा, अशोक बाजपेयी, चंद्रकांत देवताले* आदि।

➢ नयी कविता आंदोलन में एक साथ भिन्न-भिन्न वाद/दर्शन से जुड़े रचनाकार शामिल हुए। यदि *अज्ञेय* आधुनिक भावबोध वादी-अस्तित्ववादी या व्यक्तिवादी हैं तो *मुक्तिबोध, केदार नाथ सिंह* आदि मार्क्सवादी/समाजवादी; *भवानी प्रसाद मिश्र* यदि गाँधीवादी हैं तो *रघुवीर सहाय, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना* आदि लोहियावादी-समाजवादी और *धर्मवीर भारती* की रुचि सिर्फ देहवाद में है।

➢ नयी कविता के रचनाकारों पर दो वाद या विचारधाराओं अस्तित्ववाद व आधुनिकतावाद का प्रभाव विशेष रूप से पड़ा। 'अस्तित्ववाद' एक आधुनिक दर्शन है जिसमें यह विश्वास किया जाता है कि मनुष्य के अनुभव महत्वपूर्ण होते हैं और प्रत्येक कार्य के लिए वह खुद उत्तरदायी होता है। वैयक्तिकता, आत्मसम्बद्धता, स्वतंत्रता, अजनबियत, संवेदना, मृत्यु, त्रास, ऊब आदि इसके मुख्य तत्व हैं। 'आधुनिकतावाद' का संबंध पूँजीवादी विकास से है। पूँजीवादी विकास के साथ उभरे नये जीवन-मूल्यों एवं नयी जीवन पद्धति को आधुनिकतावाद की संज्ञा दी जाती है। इतिहास और परम्परा से विच्छेद, गहन स्वात्म चेतना, तटस्थता और अप्रतिबद्धता, व्यक्ति स्वातंत्र्य, अपने-आप में बंद दुनिया आदि इसके मुख्य तत्व हैं।

➢ नयी कविता की विशेषताएं : 1. कथ्य की व्यापकता, 2. अनुभूति की प्रामाणिकता 3. लघुमानववाद, क्षणवाद तथा तनाव व द्वन्द्व 4. मूल्यों की परीक्षा (वैयक्तिकता का एक मूल्य के रूप में स्थापना, निरर्थकता बोध, विसंगति बोध, पीड़ावाद; सामाजिकता) 5. लोक-सम्पृक्ति 6. काव्य संरचना (दो तरह की कविताएं : छोटी कविताएं—प्रगीतात्मक, लंबी कविताएं—नाटकीय, क्रिस्टलीय संरचना, छंदमुक्त कविता, फैंटेसी/स्वप्न कथा का भरपूर प्रयोग) 7. काव्य-भाषा—बातचीत की भाषा, शब्दों पर जोर 8. नये उपमान, नये प्रतीक, नये बिम्बों का प्रयोग।

➢ यदि छायावादी कविता का नायक 'महामानव' था, प्रगतिवादी कविता का नायक 'शोषित मानव' तो नयी कविता का नायक है 'लघुमानव'।

➢ 1959 ई० का साल ऐतिहासिक दृष्टि से नयी कविता के विकास का प्रायः चरम बिन्दु था। इस बिन्दु से एक रास्ता नयी कविता की रूढ़ियों की ओर जाता था जिसमें बिम्ब आदि विज्ञापित नुस्खों का अंधानुकरण किया जाता या फिर दूसरा रास्ता सच्चे सृजन का था जो बिम्बवादी प्रवृत्ति को तोड़ता। नये कवियों ने दूसरा रास्ता अपनाया। फलतः धीरे-धीरे काव्य सृजन बिम्ब के दायरे से निकलकर सीधे सपाट कथन की ओर अभिमुख हुआ, जिसे अशोक वाजपेयी 'सपाट बयानी' की संज्ञा देते हैं।

प्रसिद्ध पंक्तियाँ

➢ हम तो 'सारा-का-सारा' लेंगे जीवन
'कम-से-कम' वाली बात न हमसे कहिए। —*रघुवीर सहाय*

➢ मौन भी अभिव्यंजना है
जितना तुम्हारा सच है, उतना ही कहो
तुम व्याप नहीं सकते
तुममें जो व्यापा है उसे ही निबाहो। —*अज्ञेय*

➢ जी हाँ, हुजूर, मैं गीत बेचता हूँ।
मैं तरह-तरह के गीत बेचता हूँ
मैं किसिम-किसिम के
गीत बेचता हूँ। (*'गीतफरोश'*) —*भवानी प्रसाद मिश्र*

➢ हम सब बौने हैं, मन से, मस्तिष्क से
भावना से, चेतना से भी बुद्धि से, विवेक से भी
क्योंकि हम जन हैं
साधारण हैं
हम नहीं विशिष्ट। —*गिरिजा कुमार माथुर*

➢ मैं प्रस्तुत हूँ
यह क्षण भी कहीं न खो जाय
अभिमान नाम का, पद का भी तो होता है। —*कीर्ति चौधरी*

➢ कुछ होगा, कुछ होगा अगर मैं बोलूंगा
न टूटे, न टूटे तिलिस्म सत्ता का
मेरे अंदर एक कायर टूटेगा, टूट्! —*रघुवीर सहाय*

➢ जो कुछ है, उससे बेहतर चाहिए
पूरी दुनिया साफ करने के लिए एक मेहतर चाहिए
जो मैं हो नहीं सकता। —*मुक्तिबोध*

➢ भागता मैं दम छोड़
घूम गया कई मोड़ । (*'अंधेरे में'*) —*मुक्तिबोध*

➢ दुखों के दागों को तमगों सा पहना
(*'अंधेरे में'*) —*मुक्तिबोध*

➢ कहीं आग लग गयी, कहीं गोली चल गयी।
(*'अंधेरे में'*) —*मुक्तिबोध*

➢ मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ
लेकिन मुझे फेंक मत
इतिहासों की सामूहिक गति
सहसा झूठी पड़ जाने पर क्या जाने
सच्चाई टूटे हुए पहिये का आश्रय ले।
(*'टूटा पहिया'*) —*धर्मवीर भारती*

➢ जिंदगी, दो उंगलियों में दबी
सस्ती सिगरेट के जलते हुए टुकड़े की तरह है
जिसे कुछ लम्हों में पीकर
गली में फेंक दूँगा। —*नरेश मेहता*

➢ मैं यह तुम्हारा अश्वत्थामा हूँ
शेष हूँ अभी तक
जैसे रोगी मुर्दे के मुख में शेष रहता है
गंदा कफ बासी पीप के रूप में
शेष अभी तक मैं। (*'अंधा युग'*) —*धर्मवीर भारती*

➢ दुःख सबको मांजता है और
चाहे स्वयं सबको मुक्ति देना वह न जाने, किन्तु
जिनको माँजता है
उन्हें यह सीख देता है सबको मुक्त रखे। —*अज्ञेय*

➤ अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे
उठाने ही होंगे
तोड़ने होंगे ही मठ और गढ़ सब। *('अंधेरे में')*—मुक्तिबोध

➤ साँप !
तुम सभ्य हुए तो नहीं
नगर में बसना भी तुम्हें नहीं आया।
एक बात पूछूँ (उत्तर दोगे ?)
तब कैसे सीखा डँसना
विष कहाँ पाया ? —अज्ञेय

➤ पर सच तो यह है
कि यहाँ या कहीं भी फर्क नहीं पड़ता।
तुमने जहाँ लिखा है 'प्यार'
वहाँ लिख दो 'सड़क'
फर्क नहीं पड़ता।
मेरे युग का मुहावरा है :
'फर्क नहीं पड़ता'। —केदार नाथ सिंह

➤ मैं मरूँगा सुखी
मैंने जीवन की धज्जियाँ उड़ाई हैं —अज्ञेय

छायावादोत्तर युगीन

प्रसिद्ध पंक्तियाँ (विविध) :

➤ श्वानो को मिलता दूध वस्त्र
भूखे बालक अकुलाते हैं —दिनकर

➤ लेकिन होता भूडोल, बवंडर उठते हैं,
जनता जब कोपाकुल हो भृकुटि चढ़ाती है;
दो राह, समय के रथ का घर्घर नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है। —दिनकर

➤ कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाए
एक हिलोर इधर से आये, एक हिलोर उधर से आए।
—बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

➤ एक आदमी रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है, जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूँ .... 'यह तीसरा आदमी कौन है ?'
मेरे देश की संसद मौन है। *(रोटी और संसद)* —धूमिल

➤ क्या आज़ादी सिर्फ तीन थके हुए रंगों का नाम है
जिन्हें एक पहिया ढोता है
या इसका कोई खास मतलब होता है ?
(बीस साल बाद— 'संसद से सड़क तक') —धूमिल

➤ बाबूजी ! सच कहूँ— मेरी निगाह में
न कोई छोटा है
न कोई बड़ा है
मेरे लिए, हर आदमी एक जोड़ी जूता है
जो मेरे सामने
मरम्मत के लिए खड़ा है
(मोचीराम— 'संसद से सड़क तक') —धूमिल

➤ मेरे देश का समाजवाद
मालगोदाम में लटकती हुई
उन बाल्टियों की तरह है जिस पर 'आग' लिखा है
और उनमें बालू और पानी भरा है।
(पटकथा— 'संसद से सड़क तक') —धूमिल

➤ अपने यहाँ संसद—
तेल की वह घानी है
जिसमें आधा तेल है
और आधा पानी है
(पटकथा— 'संसद से सड़क तक') —धूमिल

➤ अपना क्या है इस जीवन में
सब तो लिया उधार
सारा लोहा उन लोगों का
अपनी केवल धार *('अपनी केवल धार')* —अरुण कमल

छायावादोत्तर युगीन रचना एवं रचनाकार

रचनाकार	छायावादोत्तर युगीन रचना
रामधारी सिंह 'दिनकर'	हुंकार, रेणुका, द्वंद्वगीत, कुरुक्षेत्र, इतिहास के आँसू, रश्मिरथी, धूप और धुआँ, दिल्ली, रसवंती, उर्वशी
बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	कुंकुम, उर्मिला, अपलक, रश्मिरेखा, क्वासि,हम विषपायी जनम के
हरिवंशराय 'बच्चन'	मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, सूत की माला,निशा-निमंत्रण, एकांत संगीत, सतरंगिनी, मिलन-यामिनी, आरती और अंगारे, आकुल अंतर
सुमित्रा नंदन पंत	शिल्पी, अतिमा, कला और बूढ़ा चाँद, लोकायतन, सत्यकाम
जानकी वल्लभ शास्त्री	मेघगीत, अवंतिका
नरेंद्र शर्मा	प्रभातफेरी, प्रवासी के गीत, पलाश वन, मिट्टी और फूल, कदलीवन
रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'	मधूलिका, अपराजिता, किरणबेला, लाल चूनर
आरसी प्रसाद सिंह	कलापी, पांचजन्य
केदारनाथ सिंह	नींद के बादल, फूल नहीं रंग बोलते हैं, अपूर्व, युग की गंगा
नागार्जुन	प्यासी पथराई आँखें, युगधारा, भस्मांकुर, सतरंगे पंखों वाली; ऐसे भी हम क्या, ऐसे भी तुम क्या; खिचड़ी विप्लव देखा हमने, हजार-हजार बाँहों वाली, पुरानी जूतियों का कोरस, रत्न नगर्भ, हरिजन गाथा *(क.)*
रांगेय राघव	राह का दीपक, अजेय खँडहर, पिघलते पत्थर, मेधावी, पांचाली
गिरिजाकुमार माथुर	मंजीर, कल्पांतर, शिलापंख चमकीले, नाश और निर्माण, मशीन का पुर्जा, धूप के धान, मैं वक्त के हूँ सामने, छाया मत छूना मन
गजानन माधव 'मुक्तिबोध'	भूरी-भूरी खाक धूल, चाँद का मुँह टेढ़ा है
भवानीप्रसाद मिश्र	सतपुड़ा के जंगल, गीतफरोश, खुशबू के शिलालेख, बुनी हुई रस्सी, कालजयी, गांधी पंचशती, कमल के फूल, इदं न मम, चकित है दुःख, वाणी की दीनता
सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'	भग्नदूत, चिंता, इत्यलम्, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, इंद्रधनुष रौंदे हुए ये, अरी ओ करुणा प्रभामय, आँगन के पार द्वार, कितनी नावों में कितनी बार, क्योंकि मैं उसे जानता हूँ, सागर-मुद्रा, पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ, महावृक्ष के नीचे, नदी की बाँक पर छाया, प्रिजन डेज एंड अदर पोएम्स *(अंग्रेजी में)*, असाध्य वीणा, रूपाम्बरा
धर्मवीर भारती	अंधायुग, कनुप्रिया, ठंडा लोहा, सात गीत वर्ष

रचनाकार	छायावादोत्तर युगीन रचना
शमशेर बहादुर सिंह	अमन का राग, चुका भी नहीं हूँ मैं, इतने पास अपने
कुँवर नारायण	परिवेश, हम तुम, चक्रव्यूह, आत्मजयी, आमने-सामने
नरेश मेहता	संशय की एक रात, वनपाखी सुनो, मेरा समर्पित एकांत, बोलने दो चीड़ को
त्रिलोचन	मिट्टी की बारात, धरती, गुलाब और बुलबुल, दिगंत, ताप के ताये हुए दिन, सात शब्द, उस जनपद का कवि हूँ
भारत भूषण अग्रवाल	कागज के फूल, जागते रहो, मुक्तिमार्ग, ओ अप्रस्तुत मन, उतना वह सूरज है
दुष्यंत कुमार	साये में धूप, सूर्य का स्वागत, एक कंठ विषपायी, आवाज के घेरे
प्रभाकर माचवे	जहाँ शब्द हैं, तेल की पकौड़ियाँ, स्वप्नभंग, अनुक्षण, मेपल
रघुवीर सहाय	सीढ़ियों पर धूप में, आत्महत्या के विरुद्ध, लोग भूल गए हैं, मेरा प्रतिनिधि, हँसो-हँसो जल्दी हँसो
शंभूनाथ सिंह	मन्वंतर, खण्डित सेतु
शिवमंगल सिंह 'सुमन'	हिल्लोल, जीवन के गान, प्रलय-सृजन, विश्वास बढ़ता ही गया
शकुंतला माथुर	अभी और कुछ इनका, चाँदनी और चूनर, दोपहरी, सुनसान गाड़ी
सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	खूँटियों पर टँगे लोग, कुआनो नदी, बाँस के पुल, काठ की घंटियाँ, एक सूनी नाव, गर्म हवाएँ, जंगल का दर्द
विजयदेव नारायण साही	मछलीघर, संवाद तुम से साखी
जगदीश गुप्त	नाव के पाँव, शब्दशः, हिमविद्ध, युग्म
हरिनारायण व्यास	मृग और तृष्णा, एक नशीला चाँद, उठे बादल झुके बादल, त्रिकोण पर सूर्योदय
श्रीकांत वर्मा	मायादर्पण, मगध, शब्दों की शताब्दी, दीनारंभ
राजकमल चौधरी	कंकावती, मुक्तिप्रसंग
अशोक वाजपेयी	एक पतंग अनंत में, शहर अब भी संभावना है
बालस्वरूप राही	जो नितांत मेरी है
'धूमिल'	संसद से सड़क तक, कल सुनना मुझे, सुदामा पाण्डे का प्रजातंत्र
अजित कुमार	अंकित होने दो, अकेले कंठ की पुकार
रामदरश मिश्र	पक गई है धूप, बैरंग बेनाम चिट्ठियाँ
डॉ० विनय	एक पुरुष और, कई अंतराल, दूसरा राग
जगदीश चतुर्वेदी	इतिहास हंता
प्रमोद कौंसवाल	अपनी तरह का आदमी
संजीव मिश्र	कुछ शब्द जैसे मेज
'निराला'	कुकुरमुत्ता, गर्म पकौड़ी, प्रेम-संगीत, रानी और कानी खजोहरा, मास्को डायलाग्स, स्फटिक शिला, नये पत्ते, गीत गुंज, सांध्य काकली *(प्रकाशन मरणोपरांत—1969 ई०)*
उदयप्रकाश	सुनो कारीगर, क से कबूतर

प्रबंधात्मक काव्यकृतियाँ

रचनाकार	प्रबंधात्मक काव्यकृतियाँ
देवराज	आत्महत्याएँ, इला और अमिताभ
नरेश मेहता	प्रवाद पर्व, महाप्रस्थान, शबरी
भवानीप्रसाद मिश्र	कालजयी
भारतभूषण अग्रवाल	अग्निलीक
डॉ० विनय	पुनर्वास का दण्ड, एक मृत्यु प्रश्न
जगदीश चतुर्वेदी	सूर्यपुत्र
रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'	अपराधिता
शैलेश जैदी	अब किसे बनवास दोगे

सप्तक के कवि

'तार सप्तक' *(1943 ई०)*	अज्ञेय, मुक्तिबोध, गिरिजाकुमार माथुर, प्रभाकर माचवे, भारत भूषण अग्रवाल, नेमिचंद्र जैन, रामविलास शर्मा
दूसरा सप्तक *(1951 ई०)*	रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता, शमशेर बहादुर सिंह, भवानी प्रसाद मिश्र, शकुंतला माथुर, हरिनारायण व्यास
तीसरा सप्तक *(1959 ई०)*	कीर्ति चौधरी, प्रयाग नारायण त्रिपाठी, केदारनाथ सिंह, कुँवरनारायण, विजयदेव नारायण साही, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, मदन वात्स्यायन
चौथा सप्तक *(1979 ई०)*	अवधेश कुमार, राजकुमार कुम्भज, स्वदेश भारती, नंद किशोर आचार्य, सुमन राजे, श्रीराम वर्मा व राजेंद्र किशोर

उपन्यास

उपन्यासकार	उपन्यास
श्रद्धाराम फिल्लौरी	भाग्यवती
लाला श्रीनिवासदास	परीक्षागुरु
बालकृष्ण भट्ट	नूतन ब्रह्मचारी, सौ अजान एक सुजान
भारतेंदु हरिश्चंद्र	पूर्ण प्रकाश, चंद्रप्रभा
देवकीनंदन खत्री	चंद्रकांता, नरेंद्रमोहिनी, वीरेंद्रवीर अथवा कटोरा भर खून, कुसुमकुमारी, चंद्रकांता संतति, भूतनाथ
मेहता लज्जाराम शर्मा	धूर्त रसिकलाल, स्वतंत्र रमा और परतंत्र लक्ष्मी, हिंदू गृहस्थ, आदर्श दम्पति, सुशीला विधवा, आदर्श हिंदू
किशोरीलाल गोस्वामी	प्रणयिनी-परिणय, त्रिवेणी, लवंगलता, लीलावती, तारा, चपला, मल्लिकादेवी वा बंगसरोजिनी अँगूठी का नगीना, लखनऊ की कब्रा वा शाही महलसरा
गोपालराय गहमरी	अद्भुत लाश, अद्भुत खून, खूनी कौन
'हरिऔध'	ठेठ हिंदी का ठाठ, अधखिला फूल
जगमोहन सिंह	श्यामा स्वप्न
पंडित गौरीदत्त	देवरानी-जेठानी की कहानी
सियारामशरण गुप्त	गोद, नारी, अंतिम आकांक्षा
शिवपूजन सहाय	देहाती दुनिया
ऋषभचरण जैन	दिल्ली का कलंक, दिल्ली का व्यभिचार, वेश्यायुग, रहस्यमयी
भवानीप्रसाद	पतिता की साधना, चंदन और पानी, त्यागमयी
प्रेमचंद	प्रेमा, सेवासदन, वरदान, प्रेमाश्रम, कायाकल्प, रंगभूमि, निर्मला, प्रतिज्ञा, गबन, कर्मभूमि, गोदान, मंगलसूत्र *(अपूर्ण)*
जयशंकर प्रसाद	कंकाल, तितली, इरावती *(अधूरा)*
'निराला'	अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरूपमा, चोटी की पकड़, काले कारनामे
पंत	हार
राधिकारमण प्रसाद सिंह	राम-रहीम
इलाचंद्र जोशी	पर्दे की रानी, घृणामयी, संन्यासी, प्रेत और छाया, मुक्तिपथ, जिप्सी, जहाज का पंछी
जैनेंद्र	ऋतुचक्र, सुवह के भूले, भूत का भविष्य
यशपाल	परख, त्यागपत्र, कल्याणी, सुनीता, सुखदा
	मुक्तिबोध
	दिव्या, अमिता, झूठा-सच *(दो भाग)*, दादा कामरेड, मनुष्य के रूप, मेरी तेरी उसकी बात, बारह घंटे
'अश्क'	गिरती दीवारें, शहर में घूमता आइना, सितारों का खेल, बड़ी-बड़ी आँखें, गरम राख, एक नन्ही कंदील, पत्थर-अल-पत्थर

उपन्यासकार	उपन्यास
अमृतलाल नागर	सुहाग के नूपुर, शतरंज के मोहरे, करवट, नाच्यौ बहुत गोपाल, अमृत और विष, बूँद और समुद्र, मानस का हंस, नवाबी मसनद, सेठ बाँकेमल, बिखरे तिनके, महाकाल, भूख, एकदा नैमिषारण्ये, खंजन नयन, करवट
उदयशंकर भट्ट	सागर लहरें और मनुष्य, डॉ० शेफाली, शेष-अशेष, लोक-परलोक, नए मोड़, एक नीड़ दो पंछी, दो अध्याय
भगवतीचरण वर्मा	चित्रलेखा, सबहिं नचावत राम गोसाईं, तीन वर्ष, भूले बिसरे चित्र, टेढ़े-मेढ़े रास्ते, सीधी-सच्ची बातें, सामर्थ्य और सीमा, आखिरी दाँव
वृंदावनलाल वर्मा	मृगनयनी, झाँसी की रानी, गढ़ कुण्डार, विराटा की पद्मिनी, अहिल्याबाई
आचार्य चतुरसेन शास्त्री	वैशाली की नगरवधू, धर्मयुग, अपराजिता, नरमेध, मंदिर की नर्तकी, हृदय की परख, हृदय की प्यास, वयं रक्षामः, आत्मदाह
राहुल सांकृत्यायन	सिंह सेनापति, जय यौधेय, वोल्गा से गंगा तक, किन्नरों के देश में, शैतान की आँखें, मधुर स्वप्न
हजारी प्रसाद द्विवेदी	बाणभट्ट की आत्मकथा, अनामदास का पोथा, चारुचंद्रलेख, पुनर्नवा
'उग्र'	दिल्ली का दलाल, चाकलेट, बुधुआ की बेटी, शराबी, चंद हसीनों के खतूत, फागुन के दिन चार
रांगेय राघव	मुर्दों का टीला, कब तक पुकारूँ, मेरी भवबाधा हरो, विषादमय, लखिमा की आँखें, देवकी का बेटा, यशोधरा जीत गई, अँधेरे के जुगनू
'रेणु'	मैला आँचल, जुलूस, कितने चौराहे, परती परिकथा, पल्टू बाबू रोड *(मरणोपरांत प्रकाशित)*
नागार्जुन	बलचनमा, रतिनाथ की चाची, नई पौध, उग्रतारा, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे, दुखमोचन, कुंभीपाक
राजेंद्र यादव	सारा आकाश, उखड़े हुए लोग, शह और मात, मंत्रविद्ध, अनदेखे अनजान पुल
धर्मवीर भारती	गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा
'अज्ञेय'	शेखर एक जीवनी, नदी के द्वीप, अपने-अपने अजनबी
'मुक्तिबोध'	विपात्र
डॉ. द्वारका प्रसाद	घेरे के बाहर, मम्मी बिगड़ेगी
विष्णु प्रभाकर	निशिकांत, तट के बंधन, अर्द्धनारीश्वर, स्वप्नमयी
नरेश मेहता	प्रथम फाल्गुन, डूबते मस्तूल, धूमकेतु, नदी यशस्वी है, यह पथबंधु था, उत्तरकथा
रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'	चढ़ती धूप, नयी इमारत, उल्का, मरुप्रदीप
कमलेश्वर	एक सड़क 57 गलियाँ, लौटे हुए मुसाफिर, डाक बँगला, काली आँधी, समुद्र में खोया हुआ आदमी, सुबह दोपहर शाम, तीसरा आदमी, एक और चन्द्रकान्ता, कितने पाकिस्तान
प्रभाकर माचवे	परंतु, साया, द्वाभा, दर्द के पैवंद
मोहन राकेश	अँधेरे बंद कमरे, न आने वाला कल, नीली बाँहों की रोशनी में, काँपता हुआ दरिया, कई एक अकेले, अंतराल

उपन्यासकार	उपन्यास
निर्मल वर्मा	वे दिन, लाल टीन की छत, रात का रिपोर्टर, एक चिथड़ा सुख, अंतिम अरण्य
मन्नू भंडारी	महाभोज, आपका बंटी, एक इंच मुसकान *(सहयोगी लेखक राजेंद्र यादव)*
मार्कण्डेय	सेमल का फूल
उषा प्रियंवदा	पचपन खम्भे लाल दीवारें, रुकोगी नहीं राधिका
सर्वेश्वर	सोया हुआ जल, पागल कुत्तों का मसीहा, अँधेरे पर अँधेरा, उड़ते हुए रंग
भीष्म साहनी	तमस, झरोखे, कड़ियाँ, बसंती, मय्यादास की माड़ी
शरतचंद्र	देवदास, श्रीकांत, चरित्रहीन, गृहदाह, परिणीता, पथ के दावेदार
नरेंद्र कोहली	दीक्षा, अवसर, युद्ध की ओर, अभिज्ञान
शानी	काला जल, साँप और सीढ़ी, नदियाँ और सीपियाँ
राही मासूम रजा	आधा गाँव, सीन-75, असंतोष के दिन, ओस की बूँद, नीम का पेड़, कटरा बी आर्जू
श्रीलाल शुक्ल	राग दरबारी, सीमाएँ टूटती हैं, आदमी का जहर, अज्ञातवास
हरिशंकर परसाई	रानी नागमती की कहानी, तट की खोज
लक्ष्मीकांत वर्मा	टेराकोटा, खाली कुर्सी की आत्मा, एक कटा हुआ कागज, कोयल और आवृत्तियाँ
श्रीकांत वर्मा	दूसरी बार
राजकमल चौधरी	मछली मरी हुई, एक अनार एक बीमार, शहर था—शहर नहीं था
लक्ष्मी नारायण लाल	बड़ी चंपा छोटी चंपा, मन वृंदावन, काले फूले का पौधा, हरा समंदर-गोपी चंदर, धरती की आँखें, रूपाजीवा, प्रेम अपवित्र नदी
मनोहर श्याम जोशी	कुरु-कुरु स्वाहा, कसप, नेता जी कहिन, क्या
देवराज	पथ की खोज, अजय की डायरी, मैं, वे और आप, रोड़े और पत्थर
कृष्णा सोबती	सूरजमुखी अँधेरे के, जिंदगीनामा, हम हशमत, मित्रो मरजानी, यारों के यार, डार से बिछुड़ी, दिलो दानिश
महेंद्र भल्ला	एक पति के नोट्स
गिरिराज किशोर	यथा प्रस्तावित, ढाई घर, चिड़ियाघर, साहब, मात्राएँ
मणि मधुकर	सफेद मेमने, मेरी स्त्रियाँ, खुले हुए दरीचे
मंजुल भगत	अनारो, लेडी क्लब
दुष्यंत कुमार	छोटे-छोटे सवाल, दोहरी जिंदगी, आँगन में एक वृक्ष
शैलेश मटियानी	सर्पगंधा, मुठभेड़, आकाश कितना अनंत है, डेरेवाले, बावन नदियों का संगम, चंद औरतों का शहर, किस्सा नर्मदा बेन गंगूबाई, बोरीबली से बोरीबंदर तक, उगते सूरज की किरण
भैरव प्रसाद गुप्त	गंगा मैया, सत्ती मैया का चौरा
शिवप्रसाद सिंह 'रुद्र'	बहती गंगा, अलग-अलग वैतरणी
देवेंद्र सत्यार्थी	रथ के पहिए, कठपुतली, दूधगाछ, ब्रह्मपुत्र
विमल मित्र	हम चाकर रघुनाथ के, कैसे-कैसे सच, मन क्यों उदास है, मुजरिम हाज़िर
जगदंबा प्रसाद दीक्षित	मुर्दाघर
रघुवंश	अर्थहीन
बदी उज़्ज़मां	एक चूहे की मौत, सभापर्व, छाको की वापसी

कहानी

कहानीकार	कहानी/कहानी-संग्रह
इंशाअल्ला खाँ	रानी केतकी की कहानी
राजा शिवप्रसाद 'सितारे-हिंद'	राजा भोज का सपना
भारतेंदु	अद्‌भुत अपूर्व सपना
राजा बाला घोष *(बंगमहिला)*	दुलाईवाली
किशोरीलाल गोस्वामी	इंदुमती, गुलबहार
माधवप्रसाद मिश्र	मन की चंचलता
भगवानदीन	प्लेग की चुड़ैल
रामचंद्र शुक्ल	ग्यारह वर्ष का समय
राधिकारमण प्रसाद सिंह	कानों में कंगना
चंद्रधारी शर्मा गुलेरी	सुखमय जीवन, बुद्धू का काँटा, उसने कहा था
वृंदावनलाल वर्मा	राखीबंद भाई
विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक'	रक्षाबंधन, ताई, चित्रशाला *(दो भाग)*, गल्प मंदिर, मंगली, प्रेम प्रतिमा, कल्लोल, मणिमाला
मुंशी प्रेमचंद	पंचपरमेश्वर, सौत, बेटों वाली विधवा, सज्जनता का दण्ड, ईश्वरीय न्याय, रानी सारंधा, आत्माराम, बूढ़ी काकी, ईदगाह, पूस की रात, शतरंज के खिलाड़ी, कजाकी, अलग्योझा, तावान, ठाकुर का कुआँ, कफन; सप्त सरोज *(कहानी-संग्रह)*, मान सरोवर-8 भागों में *(कहानी-संग्रह)*
जयशंकर प्रसाद	ग्राम, छाया *(कहानी-संग्रह)*, इंद्रजाल, आकाशदीप, आँधी, सुनहरा साँप, सालवती, मधुवा, गुंडा, पुरस्कार, चूड़ी वाली नीरा, प्रतिध्वनि, देवरथ
सुदर्शन	सुदर्शन सुधा, तीर्थयात्रा, पुष्पलता, गल्पमंजरी, पनघट, हार की जीत, कवि की स्त्री
चतुरसेन शास्त्री	दुखवा मैं कासों कहूँ मोरी सजनी, अंबपालिका, भिक्षुराज, हल्दीघाटी में, बाणवधू
पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'	चिनगारियाँ, शैतान मंडली, इंद्रधनुष, बलात्कार, चाकलेट, दोज़ख की आग, निर्लज्जा, जब सारा आलम सोता है
जैनेंद्र	हत्या, खेल, अपना-अपना भाग्य, जय संधि, बाहुबली, वातायन, नीलम देश की राजकन्या, दो चिड़ियाँ , ध्रुवयात्रा, पाजेब, एक दिन, राजीव और भाभी
'अज्ञेय'	विपथगा, त्रिपथगा, परंपरा, कोठरी की बात, शरणार्थी, जयदोल, अमर वल्लरी, ये तेरे प्रतिरूप, रोज, पठार का धीरज, सिगनेलर, रेल की सीटी, कविप्रिया, मैना, हरसिंगार
'निराला'	लिली, सुकुल की बीवी, श्रीमती गजानंद देवी, चतुरी चमार, पद्मा
पंत	पानवाला
राहुल सांकृत्यायन	सतमी के बच्चे
सुभद्रा कुमारी चौहान	बिखरे मोती, उन्मादिनी, पापी पेट
भगवती चरण वर्मा	इंस्टालमेंट, दो बाँके, उत्तमी की माँ, प्रायश्चित, मुगलों ने सल्तनत बख्श दी, वो दुनिया
'अश्क'	मुक्त, देशभक्त, डाची, कांगड़ा का तेली, आकाशचारी, टेबुल लैंड
भुवनेश्वर	सूर्यपूजा, भेड़िए
'मुक्तिबोध'	काठ का सपना

कहानीकार	कहानी/कहानी-संग्रह
इलाचंद्र जोशी	आहुति, धन का अभिशाप, एकाकी घोर, कापालिक, प्रथम कहानी, दिवाली, चण्डों की दासी मैं, खँडहर की आत्माएँ, डायरी के नीरस पृष्ठ, आहुति और दिवाली
यशपाल	मक्रील, कुत्ते की पूँछ, फूलों का कुर्ता, पराया सुख, भस्मावृत चिनगारी, पाप का कीचड़, ज्ञानदान, तुमने क्यों कहा कि मैं सुंदर हूँ, पिंजरे की उड़ान
विष्णु प्रभाकर	धरती अब भी घूम रही है, संघर्ष के बाद
'रेणु'	ठुमरी, आदिम रात्रि की महक, तीसरी कसम, विघटन के क्षण, तीन बिंदिया
मोहन राकेश	मलबे का मालिक, एक और जिंदगी, जानवर और जानवर, परमात्मा का कुत्ता, खोया हुआ शहर, आर्द्रा, वासना की छाया में, फौलाद का आकाश, रोयें-रेशे
भीष्म साहनी	चीफ की दावत, मौकापरस्त, खून का रिश्ता, वाँग चू, पटरियाँ, भटकती राख
हरिशंकर परसाई	भोलाराम का जीव, निठल्ले की डायरी, एक फरिश्ते की कथा
शिवप्रसाद सिंह	आरपार की माला, मुर्दा सराय, इन्हें भी इंतजार है, कर्मनाशा की हार
निर्मल वर्मा	परिंदे, लवर्स, लंदन की एक रात, डेढ़ इंच ऊपर, कुत्ते की मौत, अँधेरे में, जलती झाड़ी, माया-दर्पण, धूप का एक टुकड़ा, पोस्टकार्ड, बीच बहस में
कमलेश्वर	राजा निरबंसिया, युद्ध, एक अश्लील कहानी, नीली झील, जार्ज पंचम की नाक, देवा की माँ, मांस का दरिया, बयान जो लिखा नहीं जाता, एक रुकी हुई जिंदगी
कमल जोशी	शीराजी, पत्थर की आँखें
राजेंद्र यादव	जहाँ लक्ष्मी कैद है, प्रतीक्षा, छोटे-छोटे ताजमहल, एक दुनिया समानांतर, लहरें और परछाइयाँ, टूटना तथा अन्य कहानियाँ, एक कमजोर लड़की की कहानी, अभिमन्यु की आत्मकथा
शेखर जोशी	कोसी का घटवार, बदबू, दाज्यू
अमरकांत	जिंदगी और जोंक, डिप्टी कलेक्टरी
मार्कण्डेय	गुलरा के बाबा, हंसा जाई अकेला, महुए का पेड़, सेमल का फूल, साबुन
धर्मवीर भारती	गुलकी बन्नो, सावित्री नं० 2 , बंद गली का आखिरी मकान, चाँद और टूटे हुए लोग, मुर्दों का गाँव
नरेश मेहता	निशा जी, तथापि, एक समर्पित महिला
सर्वेश्वर	पागल कुत्तों का मसीहा, अँधेरे पर अँधेरा
मन्नू भंडारी	मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है, एक प्लेट पुलाव, रानी माँ का चबूतरा, गीत का चुंबन
उषा प्रियंवदा	जिंदगी और गुलाब के फूल, चाँदनी में बर्फ पर, मछलियाँ, कितना बड़ा झूठ, एक कोई दूसरा, वापसी
कृष्णा सोबती	यारों के यार, बादलों के घेरे, तिन पहाड़, ऐ लड़की
ज्ञानरंजन	बहिर्गमन, घंटा, पिता, फेंस के इधर और उधर
गंगाप्रसाद 'विमल'	एक और विदाई, प्रश्नचिह्न
ज्ञानप्रकाश	अँधेरे के सिलसिले

कहानीकार	कहानी/कहानी-संग्रह
भगवती चरण वर्मा	एक पति के नोट्स, तीन-चार दिन
जयशंकर प्रसाद	चायघर में मृत्यु, चोट, हस्तक्षेप
काशीनाथ सिंह	सफेद कौआ
प्रफुल्ल भगत	
गिरिराज किशोर	गाउन, पेपरवेट, चिड़ियाघर, अलग-अलग कद के दो आदमी, फ्राक वाला घोड़ा
उदय प्रकाश	दरियाई घोड़ा, तिरीछ, और अंत में प्रार्थना, पॉल गोमरा का स्कूटर, दत्तात्रेय का दुःख, अरेबा-परेबा, मैंगोसिल; मोहनदास; पीली छतरी वाली लड़की, वारेन हेस्टिंग्स का सांड

नाटक

भारतेंदु युग

नाटककार	नाटक
प्राणचंद चौहान	रामायण महानाटक
महाराज विश्वनाथ सिंह	आनंद रघुनंदन
गोपालचंद्र गिरिधर दास	नहुष
भारतेंदु हरिश्चंद्र	विद्यासुंदर, रत्नावली, पाखण्ड विडंबन, धनंजय विजय, कर्पूर मंजरी, भारत-जननी, मुद्राराक्षस, दुर्लभ बंधु *(उपर्युक्त सभी अनूदित)*; वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, सत्यहरिश्चंद्र, श्रीचंद्रावली, विषस्य विषमौषधम, भारत-दुर्दशा, नीलदेवी, अँधेर नगरी, सती प्रताप, प्रेम योगिनी *(मौलिक)*
शिवनंदन सहाय	कृष्ण-सुदामा नाटक
लाला श्रीनिवासदास	संयोगिता स्वयंवर, प्रह्लाद-चरित्र, रणधीर प्रेममोहिनी, तप्त संवरण
राधाचरण गोस्वामी	अमरसिंह राठौर, बूढ़े मुँह मुँहासे *(प्रहसन)*
किशोरीलाल गोस्वामी	मयंक मंजरी, प्रणयिनी-परिणय
प्रताप नारायण मिश्र	भारत-दुर्दशा, कलिकौतुक रुपक, संगीत शाकुंतल, हठी हम्मीर
बालकृष्ण भट्ट	कलिराज की सभा, रेल का विकट खेल, दमयंती स्वयंवर, जैसा काम वैसा परिणाम *(प्रहसन)*, नई रोशनी का विष, वेणुसंहार
शीतला प्रसाद त्रिपाठी	जानकीमंगल
राधाकृष्ण दास	महाराणा प्रताप, दुःखिनी बाला, पद्मावती, धर्मालाप
देवकीनंदन त्रिपाठी	भारत-हरण
अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	प्रद्युम्न विजय व्यायोग, रुक्मिणी परिणय

प्रसाद/प्रसादोत्तर नाटक

नाटककार	नाटक
माखनलाल चतुर्वेदी	कृष्णार्जुन युद्ध
वृंदावनलाल वर्मा	सेनापति ऊदल
मिश्रबंधु	नेत्रोन्मीलन
जयशंकर प्रसाद	करुणालय, सज्जन, कामना, विशाख, कल्याणी परिणय, अजातशत्रु, एक घूँट, प्रायश्चित्त, चंद्रगुप्त, जनमेजय का नागयज्ञ, स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी
हरिकृष्ण 'प्रेमी'	स्वर्णविहान, रक्षाबंधन, साँपों की सृष्टि, पाताल विजय, शिवसाधना, स्वप्नभंग, विषपान, अमृत पुत्री, उद्धार, प्रतिशोध
लक्ष्मीनारायण मिश्र	अशोक, संन्यासी, आधी रात, मुक्ति का रहस्य, राक्षस का मंदिर, राजयोग, सिंदूर की होली, अपराजित, चक्रव्यूह
रामनरेश त्रिपाठी	सुभद्रा, जयंत
प्रेमचंद	कर्बला, संग्राम, प्रेम की बेदी
चतुरसेन शास्त्री	उत्सर्ग, अमर राठौर
उदयशंकर भट्ट	विक्रमादित्य, विश्वामित्र, दाहर अथवा सिंध पतन, शक-विजय, मत्स्यगंधा
सुदर्शन	अंजना, आनरेरी मजिस्ट्रेट, भाग्यचक्र
पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'	चुंबन, डिक्टेटर
सुमित्रानंदन पंत	ज्योत्स्ना, रजत शिखर, शिल्पी सौवर्ण
मैथिलीशरण गुप्त	अनघ, तिलोत्तमा, चंद्रहास
'अश्क'	जय-पराजय, छठा बेटा, कैद, उड़ान, अलग-अलग रास्ते, सूखी डाली, तौलिए, पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ, कस्बे के डिस्को क्लब का उद्घाटन, भँवर, अंधी गली, पैंतरे
विष्णु प्रभाकर	डॉक्टर, समाधि, टूटते परिवेश, अब और नहीं, लिपस्टिक की मुस्कान, नवप्रभात, रक्तचंदन, युगे युगे क्रांति
जगदीशचंद्र माथुर	कोणार्क, शारदीया, पहला राजा, दशरथ नंदन
धर्मवीर भारती	अंधा युग
'अज्ञेय'	उत्तरप्रियदर्शी
डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल	अंधा कुआँ, मादा कैक्टस, रातरानी, तीन आँखों वाली मछली, सुंदर रस, सूखा सरोवर, रक्तकमल, कलंकी, सूर्यमुख, पंचपुरुष, मिस्टर अभिमन्यु, करफ्यू, सुगन पंछी, दर्पन, गंगामाटी, राक्षस का मंदिर
मोहन राकेश	आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे-अधूरे, पैरों तले की जमीन *(अधूरा)*
सेठ गोविंददास	स्नेह या स्वर्ग, कर्त्तव्य
गिरिजा कुमार माथुर	कल्पांतर
सिद्धनाथ	सृष्टि की साँझ, लौह देवता, संघर्ष, विकलांगों का देश, बादलों का शाप
दुष्यंत कुमार	एक कण्ठ विषपायी
मन्नू भण्डारी	बिना दीवारों के घर, रजनी दर्पण
नरेश मेहता	सुबह के घंटे, खंडित यात्राएँ, उलझन
शिवप्रसाद सिंह	घाटियाँ गूँजती हैं
ज्ञानदेव अग्निहोत्री	नेफा की एक शाम, शुतुरमुर्ग
विपिन कुमार अग्रवाल	तीन अपाहिज, खोए हुए आदमी की खोज
सुरेंद्र वर्मा	द्रौपदी, आठवाँ सर्ग, सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, सेतुबंध, छोटे सैयद बड़े सैयद, शकुन्तला की अँगूठी
गिरीश कर्नाड	तुगलक, नागमंडल, रक्त-कल्याण
सर्वेश्वरदयाल सक्सेना	बकरी, लड़ाई, कल भात आएगा
मुद्राराक्षस	मरजीवा, तेंदुआ, तिलचट्टा
भीष्म साहनी	कबीर खड़ा बजार में, हानूश, माधवी
हबीब तनवीर	चरणदास चोर, मिट्टी की गाड़ी, आगरा बाजार
शंकर शेष	एक और द्रोणाचार्य, फंदी, बंधन अपने-अपने, कोमल गांधार
गिरिराज किशोर	नरमेध, प्रजा ही रहने दो
मणि मधुकर	रसगंधर्व, खेला पोलमपुर
निर्मल वर्मा	तीन एकांत, वीक एण्ड, धूप का एक टुकड़ा, डेढ़ इंच ऊपर
गोविंद चातक	काला मुँह, अपने-अपने खूँटे
विजय तेंदुलकर	घासीराम कोतवाल, हल्ला बोल
स्वदेश दीपक	नाटक बाल भगवान, कोर्ट मार्शल, जलता हुआ रथ, सबसे उदास कविता, काल कोठरी

एकांकी

एकांकीकार	एकांकी
राधाचरण गोस्वामी	तन-मन-धन गुसाँई जी के अर्पण
बालकृष्ण भट्ट	शिक्षादान
देवकीनंदन खत्री	जनेऊ का खेल
उग्र	चार बेचारे, अफजल बध, भाई मियाँ
सुदर्शन	आनरेरी मजिस्ट्रेट, राजपूत की हार, प्रताप प्रतिज्ञा
जयशंकर प्रसाद	एक घूँट
डॉ० रामकुमार वर्मा	रेशमी टाई, चारुमित्रा, विभूति, सप्तकिरण, औरंगजेब की आखिरी रात, पृथ्वी राज की आँखें, एक तोले अफीम की कीमत, दीपदान, दस मिनट, चंगेज खाँ, कौमुदी-महोत्सव, मयूरपंख, जूही के फूल, 18 जुलाई की शाम, एक्ट्रेस
भुवनेश्वर	तौबे के कीड़े, आजादी की नींद, सिकंदर, एक साम्यहीन साम्यवादी, प्रतिभा का विवाह, स्ट्राइक, बाजीराव की तस्वीर, फोटोग्राफर के सामने, लाटरी, श्यामा
उदयशंकर भट्ट	आत्मदान, दस हजार, एक ही कब्र में, विस्फोट, समस्या का अंत, निर्दोष की रक्षा, बीमार का इलाज
'अश्क'	लक्ष्मी का स्वागत, जोंक, अधिकार का रक्षक, अंधी गली, अंजो दीदी, सूखी डाली, स्वर्ग की झलक, भँवर, मोहब्बत, आपस का समझौता, छः एकांकी, साहब को जुकाम है, विवाह के दिन, देवताओं की छाया में
जगदीशचंद्र माथुर	भोर का तारा, रीढ़ की हड्डी, मकड़ी का जाला, मेरी बाँसुरी, ओ मेरे सपने, कबूतरखाना
सेठ गोविंददास	ईद और होली, फाँसी, प्रायश्चित्त, एकादमी
रामनरेश त्रिपाठी	स्वप्नों के चित्र, दिमागी ऐयाशी
भगवतीचरण वर्मा	सबसे बड़ा आदमी
विष्णु प्रभाकर	प्रकाश और परछाई, पापी इन्सान, दस बजे रात, गहरा सागर, क्या वह दोषी था, वापसी
लक्ष्मी नारायण मिश्र	स्वर्ग में विप्लव, कटोरी में कमल, मुक्ति का रहस्य राजयोग
जैनेंद्र	टकराहट
लक्ष्मीनारायण लाल	पर्वत के पीछे, बहुरंगी, ताजमहल के आँसू, औलादी का बेटा, दूसरा दरवाजा
धर्मवीर भारती	नदी प्यासी थी, नीली झील, संगमरमर पर एक रात, मृष्टि का आखिरी आदमी, आवाज का नीलाम
प्रभाकर माचवे	गली के मोड़ पर, गाँधी की राह पर, पागलखाने में पंचकन्या, वधू चाहिए
हरिकृष्ण 'प्रेमी'	मातृमंदिर, राष्ट्रमंदिर, न्यायमंदिर, वाणीमंदिर
मोहन राकेश	अंडे के छिलके, प्यालियाँ टूटती हैं, सिपाही की माँ, अनरियाँ, बहुत बड़ा सवाल, हाँ! करफ्यू
गिरिराजकुमार माथुर	उमरकैद
मार्कण्डेय	पत्थर और परछाई

आलोचना

कृतिकार	कृति
भारतेंदु	नाटक
शिवसिंह सेंगर	शिवसिंह सरोज
पद्मसिंह शर्मा	बिहारी सतसई की भूमिका
कृष्ण बिहारी मिश्र	देव और बिहारी
बाबू गुलाबराय	सिद्धांत और अध्ययन, काव्य के रूप, नवरस
श्यामसुंदर दास	साहित्यालोचन, रूपक रहस्य, भाषा रहस्य
रामचंद्र शुक्ल	काव्य में रहस्यवाद, रस-मीमांसा, गोस्वामी तुलसीदास, भ्रमरगीत-सार, जायसी ग्रंथावली की भूमिका
निराला	रवींद्र कविता कानन, पंत और पल्लव
पंत	गद्यपथ, शिल्प और दर्शन, छायावाद: पुनर्मूल्यांकन
रामकुमार वर्मा	साहित्य समालोचना
नंददुलारे वाजपेयी	नया साहित्य नए प्रश्न, प्रकीर्णिका, कवि निराला
हजारी प्रसाद द्विवेदी	कबीर, सूर साहित्य, हिंदी साहित्य की भूमिका, हिंदी साहित्य का आदिकाल
गिरिजा कुमार माथुर	नई कविता : सीमाएँ और संभावनाएँ
रामविलास शर्मा	निराला की साहित्य साधना *(तीन भाग)*, भारतेंदु हरिश्चंद्र, भारतेंदु युग और हिंदी भाषा की विकास परंपरा, भाषा और समाज, महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण, आचार्य शुक्ल, लोकजागरण और हिंदी साहित्य, नई कविता और अस्तित्ववाद
डॉ० नगेंद्र	सुमित्रानंदन पंत, साकेत : एक अध्ययन, रस-सिद्धांत, विचार और अनुभूति, रीतिकाव्य की भूमिका, देव और उनकी कविता, मिथक और साहित्य, भारतीय समीक्षा और आचार्य शुक्ल की काव्य-दृष्टि
डॉ० देवराज उपाध्याय	छायावाद का पतन, साहित्य चिंता, आधुनिक समीक्षा
'अज्ञेय'	त्रिशंकु, आत्मनेपद, अद्यतन, संवत्सर, स्मृति-लेखा, चौथा सप्तक, केंद्र और परिधि, पुष्करिणी, जोग लिखि, सर्जना और संदर्भ
नामवर सिंह	कविता के नए प्रतिमान, छायावाद, वाद-विवाद-संवाद, इतिहास और आलोचना, कहानी और नई कहानी
विजदेव नारायण साही	शमशेर की काव्यानुभूति की बनावट, लघुमानव के बहाने हिंदी कविता पर एक बहस, जायसी
रामस्वरूप चतुर्वेदी	मध्ययुगीन हिंदी काव्य-भाषा, अज्ञेय: आधुनिक रचना की समस्या, भाषा और संवेदना
लक्ष्मीकांत वर्मा	नई कविता के प्रतिमान, नये प्रतिमान पुराने निकष
जगदीश गुप्त	नई कविता: स्वरूप और समस्याएँ
धर्मवीर भारती	मानव मूल्य और साहित्य
विपिन कुमार अग्रवाल	आधुनिकता के पहलू
मलयज	कविता से साक्षात्कार
अशोक वाजपेयी	फिलहाल, कुछ पूर्वग्रह
निर्मल वर्मा	शब्द और स्मृति
'मुक्तिबोध'	नई कविता का आत्मसंघर्ष
नेमिचंद्र जैन	अधूरे साक्षात्कार
शिवदान सिंह चौहान	प्रगतिवाद, हिंदी साहित्य के अस्सी वर्ष, साहित्यानुशीलन, साहित्य की परख
डॉ० बच्चन सिंह	हिंदी आलोचना के बीज शब्द, साहित्य का समाजशास्त्र और रूपवाद, आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास

निबंध

निबंधकार	निबंध/निबंध-संग्रह
शिवप्रसाद 'सितारे-हिंद'	राजा भोज का सपना
महावीर प्रसाद द्विवेदी	म्युनिसिपैलिटी के कारनामे, जनकस्य दण्ड, रसज्ञ रंजन, कवि और कविता, लेखांजलि, आत्मनिवेदन, सुतापराधे

निबंधकार	निबंध/निबंध-संग्रह
चंद्रधर शर्मा गुलेरी	विक्रमोर्वशी की मूल कथा, अमंगल के स्थान में मंगल शब्द, मारेसि मोहि कुठाँव, कछुवा धर्म
बालमुकुंद गुप्त	शिवशंभू के चिट्ठे, चिट्ठे और खत
प्रतापनारायण मिश्र	निबंध-नवनीत, खुशामद, आप, बात, भौं, प्रताप पीयूष
पद्मसिंह शर्मा	पद्म पराग, प्रबंध मंजरी में संकलित निबंध
बालकृष्ण भट्ट	साहित्य सरोज, भट्ट निबंधावली *(आँसू, रुचि, जात-पाँत, सीमा रहस्य, आशा, चलन आदि)*, साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है *(नि.)*
भारतेंदु	पाँचवें पैगम्बर
सरदार पूर्णसिंह	मजदूरी और प्रेम, सच्ची वीरता, अमरीका का मस्त जोगी वाल्ट ह्विटमैन, पवित्रता, कन्यादान, आचरण की सभ्यता
बाबू गुलाबराय	फिर निराशा क्यों, ठलुआ क्लब, मन की बातें, मेरी असफलताएँ, कुछ उथले कुछ गहरे
रामचंद्र शुक्ल	चिंतामणि *(चार भाग)* में संकलित निबंध, कविता क्या है, साधारणीकरण और व्यक्ति-वैचित्र्यवाद
पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी	पंचपात्र *(संग्रह)*
शिवपूजन सहाय	कुछ *(संग्रह)*
'उग्र'	बुढ़ापा, गाली
माखनलाल चतुर्वेदी	साहित्य देवता, अमीर देवता, गरीब देवता
प्रसाद	काव्य कला तथा अन्य निबंध, यथार्थवाद और छायावाद, रंगमंच, मौर्यों का राज्य-परिवर्तन
महादेवी वर्मा	साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध, शृंखला की कड़ियाँ, क्षणदा, संधिनी, चिंतन के क्षण
जैनेंद्र	जड़ की बात, सोच-विचार, मंथन, मैं और वे, साहित्य का श्रेय और प्रेय, इतस्तत:, पूर्वोदय
हजारी प्रसाद द्विवेदी	अशोक के फूल, कल्पलता, विचार और वितर्क, नाखून क्यों बढ़ते हैं, कुटज, पुनश्च, प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद, ठाकुर की बटोर, आम फिर बौरा गए, कुटज *(नि.)*
'दिनकर'	मिट्टी की ओर, पंत, उजली आग, प्रसाद और मैथिलीशरण गुप्त, रेती के फूल, अर्द्धनारीश्वर
नंददुलारे वाजपेयी	आधुनिक साहित्य, नया साहित्य : नये प्रश्न, हिंदी साहित्य : 20वीं शताब्दी, जयशंकर प्रसाद, प्रेमचंद
नगेंद्र	यौवन के द्वार पर, आस्था के चरण, चेतना के बिंब, छायावाद की परिभाषा, साधारणीकरण *(नि.)*
रामवृक्ष बेनीपुरी	गेहूँ और गुलाब, वंदे वाणी विनायकौ, लाल तारा
'अज्ञेय'	त्रिशंकु, आलवाल, हिंदी साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य, भवंती, लिखि कागद कोरे, आत्मपरक, सबरंग (ललित निबंध-संग्रह)
देवेंद्र सत्यार्थी	धरती गाती है, एक युग : एक प्रतीक, रेखाएँ बोल उठीं
यशपाल	चक्कर क्लब, बात-बात में मात, गांधीवाद की शव परीक्षा, न्याय का संघर्ष, देखा सोचा समझा
कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	जिंदगी मुस्कराई, बाजे पायलिया में घुँघुरू, महके आँगन चहके द्वार
'अश्क'	मंटो : मेरा दुश्मन
प्रभाकर माचवे	खरगोश के सींग

निबंधकार	निबंध/निबंध-संग्रह
विद्यानिवास मिश्र	छितवन की छाँह, अंगद की नियति, तुम चंदन हम पानी, आँगन का पंछी और बंजारा मन, मैंने सिल पहुँचाई, कदम की फूली डाल, परंपरा बंधन नहीं, बसंत आ गया पर कोई बंधन नहीं, मेरा देश वापस लाओ, अग्निरथ
'मुक्तिबोध'	नई कविता का आत्मसंघर्ष तथा अन्य निबंध, नये साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, समीक्षा की समस्याएँ, एक साहित्यिक की डायरी, कला का तीसरा क्षण, शमशेर : मेरी दृष्टि में, कलाकार की व्यक्तिगत ईमानदारी, सौंदर्य प्रतीति की प्रक्रिया, कलात्मक अनुभव, उर्वशी : मनोविज्ञान, उर्वशी : दर्शन और काव्य, मध्ययुगीन भक्ति आंदोलन का एक पहलू
धर्मवीर भारती	ठेले पर हिमालय, पश्यंती, कहनी-अनकहनी, रामजी की चींटी : रामजी का शेर
शिवप्रसाद सिंह	शिखरों के सेतु
हरिशंकर परसाई	निठल्ले की डायरी, भूत के पाँव, सदाचार का तावीज, ठिठुरता गणतंत्र, जैसे उनके दिन फिरे, सुनो भाई साधो, विकलांग श्रद्धा का दौर, पगडंडियों का जमाना
कुबेरनाथ राय	प्रिया नीलकंठी, रस आखेटक, गंधमादन, विषादयोग
विजयेंद्र स्नातक	चिंतन के क्षण
नामवर सिंह	इतिहास और आलोचना, बकलम खुद
निर्मल वर्मा	शब्द और स्मृति, कला और जोखिम, ढलान से उतरते हुए
बनारसी दास चतुर्वेदी	हमारे आराध्य, साहित्य और जीवन
लक्ष्मीकांत वर्मा	नए प्रतिमान : पुराने निकष
कृष्ण बिहारी	बेहया का जंगल
विजयदेव नारायण साही	लघुमानव के बहाने हिंदी कविता पर बहस, शमशेर की काव्यानुभूति की बनावट

आत्मकथा

I. मौलिक आत्मकथाएं

कृति	कृतिकार
अर्द्धकथानक (1641 ई.)	बनारसीदास जैन
स्वरचित आत्मचरित (1879 ई.)	दयानंद सरस्वती
मुझमें देव जीवन का विकास (1909 ई.)	सत्यानंद अग्निहोत्री
मेरे जीवन के अनुभव (1914 ई.)	संत राय
फिजी द्वीप में मेरे इक्कीस वर्ष (1914 ई.)	तोताराम सनाढ्य
मेरा संक्षिप्त जीवन चरित्र-मेरा लिखित (1920 ई.)	राधाचरण गोस्वामी
आपबीता : काले पानी के कारावास की कहानी (1921 ई.)	भाई परमानंद
कल्याण मार्ग का पथिक (1925 ई.)	स्वामी श्रद्धानंद
आपबीती (1933 ई.)	लज्जाराम मेहता शर्मा
मैं क्रांतिकारी कैसे बना (1933 ई.)	राम विलास शुक्ल
प्रवासी की आत्मकथा (1939 ई.)	भवानी दयाल संन्यासी
मेरी असफलताएँ (1941 ई.)	गुलाब राय
मेरी आत्म-कहानी (1943 ई.)	श्यामसुंदर दास
पत्रकार की आत्मकथा (1943 ई.)	मूलचंद अग्रवाल
आत्मकथा (1943 ई.)	महात्मा नारायण स्वामी
मेरी जीवन यात्रा (भाग-1—1944 ई., भाग-2—1949 ई., भाग-3, 4, 5—1967 ई.)	राहुल सांकृत्यायन

कृति	कृतिकार
आत्मकथा (1946 ई.)	लाला लाजपत राय
अपनी की खोज में या बुकसेलर की डायरी (1947 ई.)	रामकुमार विद्यार्थी 'रावी'
मेरी जीवन कहानी (1948 ई.)	गणेश नारायण सोमाणी
मेरा जीवन प्रवाह (1948 ई.)	वियोगी हरि
मेरी जीवन गाथा (1949 ई.)	झुन्नक गणेश प्रसाद वर्णी
उलझी स्मृतियाँ (1950 ई.)	विनोद शंकर व्यास
स्वतन्त्रता की खोज में (1951 ई.)	सत्यदेव परिव्राजक
जीवन चक्र (1951 ई.)	गंगा प्रसाद उपाध्याय
क्रांतिकारी की आत्मकथा (1951 ई.)	मन्मथनाथ गुप्त
अज्ञात जीवन (1952 ई.)	अज्ञिन प्रसाद जैन
परिव्राजक की प्रजा (1952 ई.)	शांतिप्रिय द्विवेदी
सिंहावलोकन (भाग–1, 2—1952 ई.; भाग–3—1955 ई.)	यशपाल
चांद-सूरज के बीरन (1952 ई.)	देवेंद्र सत्यार्थी
साहित्यिक जीवन के अनुभव (1953 ई.)	किशोरीदास वाजपेयी
मुदरिम की गमकहानी (1953 ई.)	कालीदास कपूर
मेरी जीवन कहानी (1956 ई.)	रमादेवी मुरारका
समय का फेर (1956 ई.)	एल. पी. नागर
मेरी जीवन-यात्रा (1956 ई.)	जानकी देवी बजाज
आत्मकथा : आपबीती-जगबीती (1957 ई.)	नरदेव शास्त्री
मेरा नाटक काल (1957 ई.)	राधेश्याम कथावाचक
मेरी अपनी कथा (1958 ई.)	पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी
आत्म परीक्षण (भाग–1, 2, 3—1958 ई.)	सेठ गोविन्द दास
आत्मकथा (1958 ई.)	राम प्रसाद विस्मिल
बचपन के दो दिन (1959 ई.); यौवन के द्वार पर (1970 ई.)	डॉ. देवराज उपाध्याय
साठ वर्ष : एक रेखांकन (1960 ई.)	सुमित्रानंदन पंत
अपनी खबर (1960 ई.)	पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'
मेरी आत्मकहानी (1963 ई.)	आचार्य चतुरसेन शास्त्री
क्रांति पथ का पथिक (1966 ई.)	पृथ्वी सिंह आजाद
जीवन के चार अध्याय (1966 ई.)	भुवनेश्वर माधव मिश्र
आत्मकथा और संस्मरण (1967 ई.)	गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी
क्या भूलूं क्या याद करूं (1969 ई.); नीड़ का निर्माण फिर (1970 ई.); बसेरे से दूर (1978 ई.); दशद्वार से सोपान तक (1985 ई.)	हरिवंशराय बच्चन
अपनी कहानी (1970 ई.)	वृंदावन लाल वर्मा
प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र (1970 ई.)	हीरालाल शास्त्री
संघर्ष, सृजन और संघर्ष (1972 ई.)	व्योहार राजेन्द्र सिंह
भूली बातें याद करूं (1973 ई.)	राधाकृष्ण बिरला
विदा बंधु विदा (1973 ई.)	प्रणव कुमार वंद्योपाध्याय
एक आत्मकथा-अरुणायन (1974 ई.)	पीढ़ार रामवतार 'अरुण'
मेरी फिल्मी आत्मकथा (1974 ई.)	बलराज साहनी
राह चलते-चलते (1976 ई.)	रामेश्वर टांटिया
घर की बात (1983 ई.), अपनी धरती अपने लोग (1996 ई.)	रामविलास शर्मा
राख से लपटें (1984 ई.)	पुरुषोत्तम दास टंडन
मेरा जीवन (1985 ई.)	शिवपूजन सहाय
मेरे सात जनम (खंड—1,2,3)	हंसराज रहबर
टुकड़े-टुकड़े दास्तान (1986 ई.)	अमृतलाल नागर
मेरी जीवनधारा (1987 ई.)	यशपाल जैन
आत्म परिचय (1988 ई.)	फणीश्वर नाथ 'रेणु'
अर्धकथा (1988 ई.)	डॉ. नगेन्द्र
तपती पगडंडियों पर पदयात्रा (1989 ई.)	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
सहचर है समय (1991 ई.)	रामदरश मिश्र
फुरसत के दिन (2000 ई.); जो मैंने जिया (1992 ई.); यादों का चिराग (1997 ई.); जलती हुई नदी (1999 ई.)	कमलेश्वर
कहो व्यास कैसी कटी (1994 ई.)	गोपाल प्रसाद व्यास
गालिब छुटी शराब (2000 ई.)	रवीन्द्र कालिया
मुड़ मुड़कर देखता हूँ (2001 ई.)	राजेन्द्र यादव
वह जो यथार्थ था (2001 ई.)	आखिलेश
आज के अतीत (2003 ई०.	भीष्म साहनी
पाव भर जीरे में ब्रह्मभोज (2003 ई.)	अशोक बाजपेयी
मैंने मांडू नहीं देखा (2003 ई.)	स्वदेश दीपक
वसन्त से पतझर तक (2005 ई.)	रवीन्द्रनाथ त्यागी
पंखहीन (2004 ई.); मुक्त गगन में (2004 ई.); पंछी उड़ गया (2004 ई.)	विष्णु प्रभाकर
एक अंतहीन तलाश (2007 ई.)	कन्हैयालाल नंदन
गुजरा कहाँ-कहाँ से (2007 ई.)	देवेश ठाकुर

महिला लेखन धारा की आत्मकथाएं

दस्तक जिन्दगी की (1990 ई.); मोड़ जिन्दगी का (1996 ई.)	प्रतिभा अग्रवाल
जो कहा नहीं गया (1996 ई.)	कुसुम अंसल
लगता नहीं है दिल मेरा (1997 ई.)	कृष्णा अग्निहोत्री
बूंद बावड़ी (1999 ई.)	पद्मा सचदेव
कुछ कही कुछ अनकही (2000 ई.)	शीला झुनझुनवाला
कस्तूरी कुण्डल बसै (2002 ई.); गुड़िया भीतर गुड़िया (2008 ई.)	मैत्रेयी पुष्पा
हादसे (2005 ई.)	रमणिका गुप्ता
एक कहानी यह भी (2007 ई.)	मन्नू भण्डारी
अन्या से अनन्या (2007 ई.)	प्रभा खेतान
पिंजड़े की मैना (2008 ई.)	चन्द्रकिरण सौनरेक्सा

दलित लेखन धारा की आत्मकथाएं

अपने-अपने पिंजरे (भाग–1—1995 ई.; भाग–2—2000 ई.)	मोहन नैमिशराय
जूठन (1997 ई.)	ओम प्रकाश वाल्मीकि
तिरस्कृत (2002 ई.); संतप्त (2006 ई.)	सूरजपाल चौहान
मेरा बचपन मेरे कंधों पर (2009 ई.)	श्योराज सिंह बेचैन
मुर्दहिया (2010 ई.)	डॉ. तुलसीराम
शिकंजे का दर्द (2012 ई.)	सुशीला टाकभौरे

II. अनुदित आत्मकथाएं

आत्मकथाकार	आत्मकथा का मूल नाम, भाषा, प्रकाशन वर्ष	हिन्दी अनुवाद का नाम
मीर तकी मीर	जिक्र-ए-मीर, उर्दू, 1783 ई.	जिक्रे-मीर
मुंशी लुत्फुल्ला	एन ऑटोबायोग्राफी, अंग्रेजी, 1848 ई.	एक आत्मकथा
महात्मा गाँधी	आत्मचरित, गुजराती, 1926 ई.	आत्मकथा अथवा सत्य के प्रयोग
सुभाष चंद्र बोस	तरुणे सपन, बांग्ला, 1935 ई.	तरुण के स्वप्न
जवाहर लाल नेहरू	माई स्टोरी, अंग्रजी, 1936 ई.	मेरी कहानी
वेद मेहता	फेस टू फेस, अंग्रेजी, 1958 ई.	मेरा जीवन संघर्ष

आत्मकथाकार	आत्मकथा का मूल नाम, भाषा, हिन्दी अनुवाद का नाम प्रकाशन वर्ष
शचीन्द्र नाथ सान्याल	बंदी जीवन, बांग्ला, 1963 ई. बंदी जीवन
हंसा वाडकर	सांगत्ये एका, मराठी, 1972 ई. आभिनेत्री की आपबीती
जोश मलीहाबादी	यादों की बारात, उर्दू, 1972 ई. यादों की बारात
अमृता प्रीतम	रसीदी टिकट, पंजाबी, 1977 ई. रसीदी टिकट
कमला दास	माई स्टोरी, अंग्रेजी, 1977 ई. मेरी कहानी
दलीप कौर टिवाणा	नंगे पैरों दा सफर, पंजाब, नंगे पैरों का सफर 1980 ई.

जीवनी

जीवनीकार	जीवनी (प्रकाशन वर्ष)
नाभा दास	भक्तमाल *(1585 ई.)*
गोसाईं गोकुलनाथ	चौरासी वैष्णवन की वार्ता, दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता *(17 वीं सदी ई.)*
गोपाल शर्मा शास्त्री	दयानंद दिग्विजय *(1881 ई.)*
रमाशंकर व्यास	नेपोलियन बोनापार्ट का जीवन चरित्र *(1883 ई.)*
देवी प्रसाद मुंसिफ	महाराजा मान सिंह का जीवन चरित्र *(1883 ई.)*, राजा मालदेव *(1889 ई.)*, उदय सिंह महाराजा *(1893 ई.)*, जसवंत सिंह *(1896 ई.)*, प्रताप सिंह महाराणा *(1903 ई.)*, संग्राम सिंह राणा *(1904 ई.)*
कार्तिक प्रसाद खत्री	अहिल्याबाई का जीवन चरित्र *(1887 ई.)*, छत्रपति शिवाजी का जीवन चरित्र *(1890 ई.)*, मीराबाई का जीवन चरित्र *(1893 ई.)*
राधाकृष्ण दास	श्री नागरीदास जी का जीवन चरित्र *(1894 ई.)*, कविवर बिहारी लाल *(1895 ई.)*, सूरदास *(1900 ई.)*, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जीवन चरित्र *(1904 ई.)*
बलभद्र मिश्र	स्वामी दयानंद महाराज का जीवन चरित्र *(1896 ई.)*
गौरीशंकर हीराचंद ओझा	कर्नल जेम्स टॉड *(1902 ई.)*
शिवनंदन सहाय	हरिश्चन्द्र *(1905 ई.)*
बालमुकुंद गुप्त	प्रताप नारायण मिश्र *(1907 ई.)*
बाबू श्याम सुंदर दास	हिन्दी कोविद रत्नमाला *(प्रथम भाग—1909 ई., द्वितीय भाग–1914 ई.; हिन्दी के 40 साहित्यकारों की जीवनियाँ)*
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	बाबू राधाकृष्ण दास *(1913 ई.)*
मुकुंदी लाल वर्मा	कर्मवीर गाँधी *(1913 ई.)*
संपूर्णानंद	धर्मवीर गाँधी *(1914 ई.)*, देशबंधु चित्तरंजन दास *(1921 ई.)*
आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी	सुकवि प्राचीन पंडित और कवि *(1918 ई.)*, संकीर्तन *(1924 ई.)*, चरित चर्चा *(1929 ई.)*
सुख संपतिराय भंडारी	डाक्टर सर जगदीश चन्द्र बसु और उनके आविष्कार *(1919 ई.)*
स्वामी सत्यानंद	दयानंद प्रकाश *(1919 ई.)*
राजेन्द्र प्रसाद	चंपारण में महात्मा गाँधी *(1919 ई.)*, बापू के कदमों में *(1950 ई.)*
रामचंद्र वर्मा	महात्मा गाँधी *(1921 ई.)*
रामदयाल तिवारी	गाँधी मीमांसा *(1921 ई.)*
ईश्वरी प्रसाद वर्मा	लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक *(1921 ई.)*
बनारसी दास चतुर्वेदी	कविरत्न सत्यनारायण जी की जीवनी *(1926 ई.)*
गणेश शंकर विद्यार्थी	श्री गाँधी *(1931 ई.)*

जीवनीकार	जीवनी (प्रकाशन वर्ष)
इन्द्र वाचस्पति	जवाहर लाल नेहरू *(1933 ई.)*
सत्यभक्त	कार्ल मार्क्स *(1933 ई.)*
ब्रजरत्न दास	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र *(1934 ई.)*
सीताराम चतुर्वेदी	महामना पंडित मदन मोहन मालवीय *(1937 ई.)*
मन्मथनाथ गुप्त	चंद्रशेखर आजाद *(1938 ई.)*
लक्ष्मण प्रसाद भारद्वाज	महात्मा गाँधी *(1939 ई.)*, हमारे जवाहर लाल नेहरू *(1948 ई.)*
घनश्याम बिड़ला	बापू *(1940 ई.)*, मेरे जीवन में गाँधीजी *(1975 ई.)*
शिवरानी देवी	प्रेमचंद घर में *(1944 ई.)*
छविनाथ पाण्डेय	नेताजी सुभाष *(1946 ई.)*
काका कालेलकर	बापू की झाँकियाँ *(1948 ई.)*
सुशीला नायर	बापू के कारावास की कहानी *(1949 ई.)*
रामवृक्ष बेनीपुरी	जयप्रकाश नारायण *(1951 ई.)*
राहुल सांकृत्यायन	स्तालिन, कार्ल मार्क्स, लेनिन *(1954 ई.)*
जैमिनी कौशिक बरूआ	माखन लाल चतुर्वेदी *(1960 ई.)*
लक्ष्मी शंकर व्यास	पराड़करजी और पत्रकारिता *(1960 ई.)*
चंद्रशेखर शुक्ल	रामचन्द्र शुक्ल : जीवनी और कृतित्व *(1962 ई.)*
मदन गोपाल	कलम का मजदूर *(1964 ई.; मूलतः अंग्रेजी में; प्रेमचंद के जीवन पर)*
जैनेन्द्र कुमार	अकाल पुरूष गाँधी *(1968 ई.)*
राम विलास शर्मा	निराला की साहित्य साधना-प्रथम खंड *(1969 ई.)*
शिव कुमार कौशिक	प्रियदर्शिनी इंदिरा गाँधी *(1970 ई.)*
शांति जोशी	सुमित्रानंदन पंतः जीवन और साहित्य *(प्रथम खंड–1970 ई; द्वितीय खंड-1977 ई.)*
जगदीश चंद्र माथुर	जिन्होंने जीना जाना *(1954 ई.; 12 प्रसिद्ध व्यक्तियों के चरित-लेख)*
शिव प्रसाद सिंह	उत्तर योगी : श्री अरविंद *(1972 ई.)*
विष्णु प्रभाकर	आवारा मसीहा *(1974 ई.; बांग्ला साहित्यकार शरतचन्द्र की जीवनी)*
विष्णुचंद्र शर्मा	अग्निसेतु *(1976 ई.; बांग्ला के विद्रोही कवि नजरूल इस्लाम के जीवन पर)*, समय साम्यवादी *(1997 ई.; राहुल सांकृत्यायन के जीवन पर)*
राम कमल राय	शिखर से सागर तक *(1986 ई.; अज्ञेय की जीवन-यात्रा)*
शोभाकांत	बाबूजी *(1991 ई.; नागार्जुन के जीवन पर)*
तेज बहादुर चौधरी	मेरे बड़े भाई शमशेर जी *(1995 ई.)*
कमला सांकृत्यायन	महामानव महापंडित *(1995 ई.; राहुल सांकृत्यायन के जीवन पर)*
प्रतिभा अग्रवाल	प्यारे हरिश्चन्द्र जू *(1997 ई.)*
सुलोचना रांगेय राघव	रांगेय राघव : एक अंतरंग परिचय *(1997 ई.)*
मदन मोहन ठाकौर	राजेन्द्र यादव-मार्फत मदन मोहन ठाकौर *(1999 ई.)*
बिन्दु अग्रवाल	स्मृति के झरोखे में *(1999 ई.; भारत भूषण अग्रवाल के जीवन पर)*
महिमा मेहता	उत्सव पुरुष—नरेश मेहता *(2003 ई.)*
कुमुद नागर	वट वृक्ष की छाया में *(2004 ई.; अमृत लाल नागर के जीवन पर)*
ज्ञान चंद जैन	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : एक व्यक्तित्व चित्र *(2004 ई.)*
कृष्ण बिहारी मिश्र	रामकृष्ण परमहंस : कल्पतरू की उत्सव लीला *(2004 ई.)*
गायत्री कमलेश्वर	मेरे हमसफर *(2005 ई.)*

संस्मरण

कृति	कृतिकार
अनुमोदन का अंत *(1905 ई.)*, सभा की सभ्यता *(1907 ई.)*	महावीर प्रसाद द्विवेदी
हरिऔध जी का संस्मरण	बालमुकुंद गुप्त
शिकार *(1936 ई.)*, बोलती प्रतिमा *(1937 ई.)*, भाई जगन्नाथ, प्राणों का सौदा *(1939 ई.)*, जंगल के जीव *(1949 ई.)*	श्रीराम शर्मा
लाल तारा *(1938 ई.)*, माटी की मूरतें *(1946 ई.)*, गेहूँ और गुलाब *(1950 ई.)*, जंजीर और दीवारें (1955 ई.), मील के पत्थर *(1957 ई.)*	रामवृक्ष बेनीपुरी
अतीत के चलचित्र *(1941 ई.)*, स्मृति की रेखाएँ *(1947 ई.)*, पथ के साथी *(1956 ई.)*, क्षणदा *(1957 ई.)*, स्मारिका *(1971 ई.)*	महादेवी वर्मा
तीस दिन : मालवीय जी के साथ *(1942 ई.)*	रामनरेश त्रिपाठी
हमारे आराध्य *(1952 ई.)*	बनारसीदास चतुर्वेदी
जिंदगी मुस्कराई *(1953 ई.)*, दीप जले शंख बजे *(1959 ई.)*, माटी हो गई सोना *(1959 ई.)*	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
ये और वे *(1954 ई.)*	जैनेंद्र
बचपन की स्मृतियाँ *(1955 ई.)*, असहयोग के मेरे साथी *(1956 ई.)*, जिनका मैं कृतज्ञ *(1957 ई.)*	राहुल सांकृत्यायन
मंटो : मेरा दुश्मन *(1956 ई.)*, ज्यादा अपनी कम परायी *(1959 ई.)*	'अश्क'
वट-पीपल *(1961 ई.)*	'दिनकर'
समय के पाँव *(1962 ई.)*	माखन लाल चतुर्वेदी
नए-पुराने झरोखे *(1962 ई.)*	'बच्चन'
दस तस्वीरें *(1963 ई.)*, जिन्होंने जीना जाना *(1971 ई.)*	जगदीश चंद्र माथुर
वे दिन वे लोग *(1965 ई.)*	शिवपूजन सहाय
कुछ शब्द : कुछ रेखाएँ *(1965 ई.)*	विष्णु प्रभाकर
चेतना के बिंब *(1967 ई.)*	नगेंद्र
जिनके साथ जिया *(1973 ई.)*	अमृत लाल नागर
स्मृतिलेखा *(1982 ई.)*	'अज्ञेय'

रेखा-चित्र

रेखा-चित्रकार	रेखा-चित्र (प्रकाशन वर्ष)
पद्म सिंह शर्मा	पद्म पराग *(1929 ई.)*
श्रीराम शर्मा	बोलती प्रतिमा *(1937 ई.)*
प्रकाशचंद्र गुप्त	शब्द-चित्र एवं रेखा-चित्र *(1940 ई.)*, पुरानी स्मृतियाँ और नये स्केच *(1947 ई.)*
महादेवी वर्मा	अतीत के चलचित्र *(1941 ई.)*, स्मृति की रेखाएँ *(1947 ई.)*
भदन्त आनंद कौसल्यायन	जो न भूल सका *(1945 ई.)*
रामवृक्ष बेनीपुरी	माटी की मूरतें *(1946 ई.)*, गेहूँ और गुलाब *(1950 ई.)*
देवेंद्र सत्यार्थी	रेखाएँ बोल उठीं *(1949 ई.)*
सत्यवती मल्लिक	अमिट रेखाएँ *(1951 ई.)*
बनारसी दास चतुर्वेदी	रेखाचित्र *(1952 ई.)*
विनय मोहन शर्मा	रेखा और रंग *(1955 ई.)*
उपेन्द्र नाथ अश्क	रेखाएँ और चित्र *(1955 ई.)*
सेठ गोविन्द दास	स्मृति कण *(1959 ई.)*
प्रेम नारायण टण्डन	रेखा-चित्र *(1959 ई.)*
जगदीश चंद्र माथुर	दस तस्वीरें *(1963 ई.)*
रामनाथ सुमन	बाबूराव विष्णु पराड़कर
शिवपूजन सहाय	वे दिन वे लोग *(1965 ई.)*
विष्णु प्रभाकर	कुछ शब्द : कुछ रेखाएँ *(1965 ई.)*
महावीर त्यागी	मेरी कौन सुनेगा
कृष्णा सोबती	हम हशमत *(1977 ई.)*
भीमसेन त्यागी	आदमी से आदमी तक *(1982 ई.)*
राम विलास शर्मा	विराम चिह्न *(1985 ई.)*

यात्रा-वृत्तान्त

यात्रा-वृत्तान्तकार	यात्रा-वृत्तान्त (प्रकाशन वर्ष)
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	सरयू पार की यात्रा, मेंहदावल की यात्रा, लखनऊ की यात्रा, हरिद्वार की यात्रा *(1871 ई. से 1870 ई. के बीच)*
श्रीमती हरदेवी	लंदन यात्रा *(1883 ई.)*
भगवान दास वर्मा	लंदन का यात्री *(1884 ई.)*
दामोदर शास्त्री	मेरी पूर्व दिग्यात्रा *(1885 ई.)*, मेरी दक्षिण दिग्यात्रा *(1886 ई.)*
तोताराम वर्मा	ब्रजविनोद *(1888 ई.)*
देवी प्रसाद खत्री	रामेश्वरम यात्रा *(1893 ई.)*, बद्रिकाश्रम यात्रा *(1902 ई.)*
बाल कृष्ण भट्ट	गया यात्रा *(1894 ई.)*
प्रताप नारायण मिश्र	विलायत यात्रा *(1897 ई.)*
ठाकुर गदाधर सिंह	चीन में तेरह मास *(1902 ई.)*
स्वामी सत्यदेव परिव्राजक	अमरीका दिग्दर्शन *(1911 ई.)*, मेरी कैलाश यात्रा *(1915 ई.)*, अमरीका भ्रमण *(1916 ई.)*, मेरी जर्मन यात्रा *(1926 ई.)*, यूरोप की सुखद स्मृतियाँ *(1937 ई.)*, अमरीका प्रवास की मेरी अद्भुत कहानी *(1937 ई.)*, मेरी पाँचवीं जर्मनी यात्रा
शिव प्रसाद गुप्त	पृथ्वी प्रदक्षिणा *(1914 ई.)*
गोपालराम गहमरी	लंका यात्रा *(1916 ई.)*
राहुल सांकृत्यायन	मेरी लद्दाख यात्रा *(1926 ई.)*, लंका यात्रावलि *(1927-28 ई.)*, मेरी यूरोप यात्रा *(1932 ई.)*, मेरी तिब्बत यात्रा *(1934 ई.)*, यात्रा के पन्ने *(1934-36 ई.)*, मेरी यूरोप यात्रा *(1935 ई.)*, जापान *(1935 ई.)*, ईरान *(1935-37 ई.)*, तिब्बत में सवा वर्ष *(1930 ई.)*, किन्नर देश में *(1940 ई.)*, रूस में पच्चीस मास *(1944-47 ई.)*, घुमक्कड़ शास्त्र *(1949 ई.)*, एशिया के दुर्गम खण्डों में *(1956 ई.)*, चीन में कम्यून *(1959 ई.)*
जवाहर लाल नेहरू	रूस की सैर *(1929 ई.)*, आँखों देखा रूस *(1951 ई.)*
मौलवी महेश प्रसाद	मेरी ईरान यात्रा *(1930 ई.)*
कन्हैयालाल मिश्र 'आर्योपदेशक'	हमारी जापान यात्रा *(1931 ई.)*, मेरी ईराक यात्रा *(1940 ई.)*
राम नारायण मिश्र	यूरोप यात्रा में छः मास *(1932 ई.)*
गणेश नारायण सोमानी	मेरी यूरोप यात्रा *(1932 ई.)*
प्रो. मनोरंजन	उत्तराखण्ड के पथ पर *(1936 ई.)*
सेठ गोविन्द दास	हमारा प्रधान उपनिवेश *(1938 ई.)*, सुदूर दक्षिण पूर्व *(1951 ई.)*, पृथ्वी परिक्रमा *(1954 ई.)*
संता राम	स्वदेश विदेश यात्रा *(1940 ई.)*
सूर्य नारायण व्यास	सागर प्रवास *(1940 ई.)*
सत्य नारायण	आवारे की यूरोप यात्रा *(1940 ई.)*, युद्ध यात्रा *(1940 ई.)*
राम वृक्ष बेनीपुरी	पैरों में पंख बाँधकर *(1952 ई.)*, उड़ते चलो, उड़ते चलो *(1954 ई.)*

यात्रा-वृत्तान्तकार	यात्रा-वृत्तान्त *(प्रकाशन वर्ष)*
यशपाल	लोहे की दीवार के दोनों ओर *(1953 ई.)*, जय अमरनाथ *(1955 ई.)*, राह बीती *(1956 ई.)*, उत्तराखंड के पथ पर *(1958 ई.)*, स्वर्गोद्यान बिना साँप *(1975 ई.)*
अज्ञेय	अरे यायावर, रहेगा याद ? *(1953 ई.)*, एक बूँद सहसा उछली *(1960 ई.)*
मोहन राकेश	आखिरी चट्टान तक *(1953 ई.)*
भगवत शरण उपाध्याय	कलकत्ता से पीकिंग *(1954 ई.)*, सागर की लहरों पर *(1959 ई.)*
भदंत आनंद कौसल्यायन	आज का जापान
आर.आर. खाडिलकर	हालैण्ड में पच्चीस दिन *(1954 ई.)*, बदलते रूस में *(1958 ई.)*
स्वामी सत्यभक्त	मेरी अफ्रीका यात्रा *(1955 ई.)*
अमृत राय	सुबह के रंग
ब्रज किशोर नारायण	नंदन से लंदन *(1957 ई.)*
दिनकर	देश-विदेश यात्रा *(1957 ई.)*, मेरी यात्राएँ *(1970 ई.)*
भुवनेश्वर प्रसाद 'भुवन'	आँखों देखा यूरोप *(1958 ई.)*
प्रभाकर द्विवेदी	पार उतरि कहँ जइहों *(1958 ई.)*, धूप में सोई नदी *(1976 ई.)*
गोपाल प्रसाद व्यास	अरबों के देश में *(1960 ई.)*
रघुवंश	हरी घाटी *(1961 ई.)*
प्रभाकर माचवे	गोरी नजरों में हम *(1964 ई.)*
निर्मल वर्मा	चीड़ों पर चाँदनी *(1964 ई.)*
बलराज साहनी	रूसी सफरनामा *(1971 ई.)*
डॉ. नगेन्द्र	अप्रवासी की यात्राएँ *(1972 ई.)*
शंकर दयाल सिंह	गाँधी के देश से लेनिन के देश में *(1973 ई.)*
श्रीकांत वर्मा	अपोलो का रथ *(1975 ई.)*
कमलेश्वर	खण्डित यात्राएँ *(1975 ई.)*, कश्मीर : रात के बाद *(1997 ई.)*, आँखों देखा पाकिस्तान *(2006 ई.)*
गोविन्द मिश्र	धुंध भरी सुर्खी *(1979 ई.)*, दरख्तों के पार शाम *(1980 ई.)*, झूलती जड़ें *(1990 ई.)*, परतों के बीच *(1997 ई.)*
कन्हैया लाल नंदन	धरती लाल गुलाबी चेहरे *(1982 ई.)*
विष्णु प्रभाकर	ज्योति पुंज हिमालय *(1982 ई.)*, हमसफर मिलते रहे *(1996 ई.)*
अजित कुमार	सफरी झोले में *(1958 ई.)*, यहाँ से कहीं भी *(1997 ई.)*
राजेन्द्र अवस्थी	हवा में तैरते हुए *(1986 ई.)*
राम दरश मिश्र	तना हुआ इन्द्रधनुष *(1990 ई.)*, भोर का सपना *(1993 ई.)*, पड़ोस की खुशबू *(1999 ई.)*
धर्मवीर भारती	यात्रा चक्र *(1995 ई.)*
शिव प्रसाद सिंह	सब्जा पत्र कथा कहे *(1996 ई.)*
दिनेश आलोक	लिबर्टी के देश में *(1997 ई.)*
वल्लभ डोभाल	आधी रात का सफर *(1998 ई.)*
हिमांशु जोशी	यातना शिविर में *(1998 ई.)*
कृष्णदत्त पालीवाल	जापान में कुछ दिन *(2003 ई.)*
नरेश मेहता	कितना अकेला आकाश *(2003 ई.)*
नासिरा शर्मा	जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं *(2003 ई.)*
मनोहर श्याम जोशी	क्या हाल हैं चीन के *(2006 ई.)*, पश्चिमी जर्मनी पर उड़ती नजर *(2006 ई.)*

रिपोर्ताज़

रचनाकार	रिपोर्ताज *(प्रकाशन वर्ष)*
शिवदान सिंह चौहान	लक्ष्मीपुरा *(1938 ई., 'रूपाभ' पत्रिका में प्रकाशित होने वाली रिपोर्ट)*
रांगेय राघव	तूफानों के बीच *(1946 ई., 'हंस' पत्रिका में बंगाल के अकाल से संबंधित रिपोर्टों का पुस्तकाकार संकलन)*
भदंत आनंद कौसल्यायन	देश की मिट्टी बुलाती है
शमशेर बहादुर सिंह	प्लाट का मोर्चा *(1952 ई.)*
कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	क्षण बोले कण मुस्काए *(1953 ई.)*
शिव सागर मिश्र	वे लड़ेंगे हजारों साल *(1966 ई.)*
धर्मवीर भारती	युद्ध यात्रा *(1972 ई.)*
विवेकी राय	जुलूस रुका है *(1977 ई.)*
फणीश्वरनाथ 'रेणु'	ऋण जल धन जल *(1977 ई.)*, नेपाली क्रांति कथा *(1978 ई.)*, श्रुत-अश्रुत पूर्व *(1984 ई.)*

भाषेतिहास

भाषेतिहासकार	भाषेतिहास
धीरेन्द्र वर्मा *(1897–1973 ई.)*	हिन्दी भाषा का इतिहास *(1933 ई.)*
उदय नारायण तिवारी *(1903–1984 ई.)*	हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास *(1955 ई.)*
हरदेव बाहरी *(1907–2000 ई.)*	हिन्दी : उद्भव, विकास और रूप *(1965 ई.)*
भोलानाथ तिवारी *(1922–1989 ई.)*	हिन्दी भाषा *(1966 ई.)*

शोध-प्रबंध

शोध-प्रबंधकार	शोध-प्रबंध
धीरेन्द्र वर्मा *(1897–1973 ई.)*	ला लाँग ब्रज *(फ्रेंच भाषा में, 1935 ई. हिन्दी में अनुवाद—'ब्रजभाषा' नाम से)*
बाबू राम सक्सेना *(1897–1988 ई.)*	दि इवॉल्यूशन ऑफ अवधी *(अंग्रेजी भाषा में, 1938 ई., हिन्दी में अनुवाद—'अवधी का विकास' नाम से)*
उदय नारायण तिवारी *(1903–1984 ई.)*	ऑरिजिन एण्ड डेवलपमेण्ट ऑफ भोजपुरी *(अंग्रेजी भाषा में, 1946 ई.; हिन्दी में अनुवाद—'भोजपुरी भाषा का उद्गम और विकास' नाम से)*
फादर कामिल बुल्के (1909–1982 ई.)	*रामकथा : उत्पत्ति और विकास (हिन्दी भाषा में प्रस्तुत हिन्दी का प्रथम शोध-प्रबंध, 1949 ई.)*
नामवर सिंह *(जन्म–1927 ई.)*	हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग *(हिन्दी भाषा में, 1952 ई.)*

साहित्येतिहास

साहित्येतिहासकार	साहित्येतिहास
गाँर्सा-द-तासी *(1794–1878 ई.)*	इस्तवार द ला लितरेच्यूर ऐन्दुई ऐ ऐन्दुस्तानी *(फ्रेंच भाषा में लिखा गया हिंदी साहित्य का पहला इतिहास)* दो भागों में—1839 ई० व 1847 ई०
ठाकुर शिवसिंह सेंगर *(1833–78 ई.)*	शिवसिंह सरोज *(हिंदी भाषा में लिखा गया हिंदी साहित्य के इतिहास का पहला ग्रंथ, 1000 कवियों का परिचय)* 1878 ई०
जॉर्ज ए० ग्रियर्सन *(1851–1941 ई.)*	माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दोस्तान, 1889 *(काल-विभाजन व नामकरण का सर्वप्रथम प्रयास किया गया)* प्रथम प्रकाशन—एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की पत्रिका के विशेषांक के रूप में 1888 ई० में।

साहित्येतिहासकार	साहित्येतिहास
मिश्रबंधु *[(गणेश बिहारी मिश्र (1880–1939 ई.), श्याम बिहारी मिश्र (1874–1947 ई.) व शुकदेव बिहारी मिश्र (1878–1951 ई.)]*	मिश्रबंधु विनोद प्रथम तीन भाग—1913, चतुर्थ भाग—1934 [5000 कवियों का परिचय ('बड़ा भारी कवि वृत संग्रह'—आचार्य शुक्ल के शब्दों में), सूचनाओं का अपार भंडार, परवर्ती साहित्येतिहासकारों के लिए कच्चे माल का खजाना]
एडविन ग्रीव्स *(1854–1941 ई.)*	ए स्केच ऑफ हिन्दी लिटरेचर (हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास) 1918 ई०
एफ. ई. के. *(1870–1974 ई.)*	ए हिस्ट्री ऑफ हिन्दी लिटरेचर (हिन्दी साहित्य का परिचय मात्र) 1920 ई०
रामचंद्र शुक्ल *(1884–1941 ई.)*	हिंदी साहित्य का इतिहास *(1000 कवियों का परिचय दिया गया है)* 1929, संवर्द्धित संस्करण : 1940
डॉ० रामकुमार वर्मा *(1905–90 ई.)*	हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास *(1938 ई., 693 ई. से 1693 ई. तक की कालावधि का इतिहास)*
हजारी प्रसाद द्विवेदी *(1907–79 ई.)*	हिंदी साहित्य की भूमिका *(1940 ई.)*, हिन्दी साहित्य का आदिकाल *(1952 ई.)*, हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास *(1953 ई.)*
लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय *(जन्म – 1914 ई.)*	आधुनिक हिन्दी साहित्य *(1941 ई.)*, आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका *(1952 ई.)*
नंददुलारे वाजपेयी *(1906–67 ई.)*	हिंदी साहित्य : बीसवीं शताब्दी *(1942 ई.)*, आधुनिक साहित्य *(1950 ई.)*
राहुल सांकृत्यायन *(1893–1963 ई.)*	हिंदी काव्यधारा, *(1944 ई.)*, दक्खिनी हिन्दी काव्यधारा *(1952 ई.)*
नामवर सिंह *(जन्म – 1927 ई.)*	आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ *(1954 ई.)*
विश्वनाथ प्रसाद मिश्र *(1906–82 ई.)*	हिंदी साहित्य का अतीत प्रथम भाग : 1939 ई., द्वितीय भाग : 1960 ई.
गणपतिचंद्र गुप्त *(जन्म–1928 ई.)*	हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास *(दो भाग)* : 1965 ई.
'अज्ञेय' *(1911–87 ई.)*	हिंदी साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य *(1967 ई.)*
डॉ० नगेंद्र *(1915–99 ई.)*	हिंदी साहित्य का इतिहास *(संपादन)* : 1973 ई., हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास *(नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित)* : 6ठे एवं 10वें भाग का संपादन डॉ० नगेंद्र द्वारा
राममूर्ति त्रिपाठी *(1929–2009 ई.)*	हिंदी साहित्य का इतिहास
शिवकुमार शर्मा	हिंदी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ
प्रो० महेंद्र कुमार	हिंदी साहित्य का उत्तर मध्यकाल
प्रभाकर माचवे *(1919–91 ई.)*	हिंदी साहित्य की कहानी
रामस्वरूप चतुर्वेदी *(1931–2003 ई.)*	हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास *(1986 ई०)*
विजयेन्द्र स्नातक *(1914–98 ई.)*	हिंदी साहित्य का इतिहास *(1996 ई०)*
बच्चन सिंह *(1919–2008 ई.)*	हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास *(1996 ई०)*
सुमन राजे *(1938–2008 ई.)*	हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास *(2003 ई०)*

प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ

1. बंगाल गजट/कलकत्ता जनरल एडवर्टाइजर/हिक्की गजट : 29 जनवरी, 1780, साप्ताहिक *(अंग्रेजी में)*. संपादक : जेम्स आगस्टस हिक्की, भारत का प्रथम समाचारपत्र
2. उदंत मार्तण्ड : 30 मई, 1826, साप्ताहिक, कलकत्ता से प्रकाशित, संपादक : पं० जुगलकिशोर शुक्ल, प्रथम हिंदी पत्र *(चूँकि हिन्दी का पहला समाचार-पत्र 'उदंत मार्तण्ड' 30 मई 1826 को प्रकाशित हुआ था इसलिए 30 मई को 'हिन्दी पत्रकारिता दिवस' के रूप में मनाया जाता है।)*
3. बंगदूत : 1829, साप्ताहिक, कलकत्ता, संपादक : राजा राममोहन राय, एकसाथ चार भाषाओं—बांग्ला, हिन्दी उर्दू व अंग्रेजी में छपनेवाला पत्र।
4. बनारस अखबार : 1849, काशी से प्रकाशित, संपादक : राजा शिवप्रसाद 'सितारे-हिंद', हिन्दी प्रदेश से प्रकाशित पहला हिंदी समाचारपत्र
5. समाचार-सुधावर्षण : 1854, कलकत्ता से प्रकाशित, संपादक : श्यामसुंदर सेन, प्रथम हिंदी दैनिक पत्र
6. प्रजा हितैषी : 1855, आगरा से प्रकाशित, संपादक : राजा लक्ष्मणसिंह
7. तत्त्वबोधिनी पत्रिका : 1865, मासिक, बरेली, संपादक : गुलाब शंकर
8. वृत्तांत विलास : 1867, मासिक, जम्मू से प्रकाशित
9. कविवचन सुधा : 15 अगस्त, 1867, मासिक पत्रिका, काशी, संपादक : भारतेंदु हरिश्चंद्र
10. हरिश्चंद्र मैगजीन *(हरिश्चंद्र पत्रिका)* : 1873, बनारस, संपादक : भारतेंदु हरिश्चंद्र
11. बालाबोधिनी : 1874, मासिक पत्रिका, बनारस, संपादक : भारतेंदु हरिश्चंद्र, केवल महिलाओं के लिए
12. सदादर्श : 1874, साप्ताहिक, दिल्ली, सं. : लाला श्रीनिवास दास
13. हिंदी प्रदीप : 1877, मासिक, इलाहाबाद, संपादक : बालकृष्ण भट्ट
14. भारत मित्र : 1877, साप्ताहिक, संपादक : बालमुकुंद गुप्त
15. ब्राह्मण : 1880, मासिक, कानपुर, संपादक : प्रतापनारायण मिश्र
16. आनंद कादंबिनी : 1881 ई०, मासिक, मिर्जापुर, संपादक : बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'
17. भारतेंदु : 1883, वृंदावन, संपादक : राधाचरण गोस्वामी
18. द्वंद्व : 1883, मासिक, लाहौर, संपादक : अंबिकादत्त व्यास
19. भारतोदय : 1885, कानपुर से प्रकाशित, संपादक : सीताराम शर्मा, दूसरा हिंदी दैनिक
20. (i) अखबारे चुनार : 1866, चुनार, संपादक : बालमुकुंद गुप्त, उर्दू का पत्र
    (ii) कोहिनूर : 1888, लाहौर, संपादक : बालमुकुंद गुप्त, उर्दू का पत्र
21. नागरी नीरद : 1893, साप्ताहिक, मिर्जापुर, संपादक : बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'
22. नागरीप्रचारिणी पत्रिका : 1896, त्रैमासिक, काशी, संस्थापक : श्यामसुंदरदास, रामनारायण मिश्र, शिवकुमार सिंह

23. उपन्यास : 1898, काशी, मासिक, संपादक : पं० किशोरीलाल गोस्वामी;
24. सरस्वती : 1900, मासिक, इलाहाबाद *(प्रारंभ में काशी से)*; संपादक : श्याम सुन्दर दास व चार अन्य *(1900-03)*, महावीर प्रसाद द्विवेदी *(1903-20)*, पं० देवीदत्त शुक्ल *(1920–47)*, प्रकाशन काल : *(1900–82)*
25. सुदर्शन : 1900, मासिक, काशी, संपादक : देवकीनंदन खत्री, माधवप्रसाद मिश्र
26. समालोचक : 1902, जयपुर, संपादक : चंद्रधर शर्मा गुलेरी
27. अभ्युदय : 1907, साप्ताहिक, प्रयाग, संपादक : मदनमोहन मालवीय
28. इन्दु : 1909, मासिक, वाराणसी, सं. : अम्बिका प्रसाद गुप्त, रूप नारायण पाण्डेय; जयशंकर प्रसाद की आरंभिक रचनाओं को प्रकाशित करने का श्रेय।
29. मर्यादा : 1910, 1921-23, मासिक, वाराणसी, सं.: कृष्णकांत मालवीय, पद्मकांत मालवीय, लक्ष्मीधर बाजपेयी।
30. प्रताप : 1913, साप्ताहिक, कानपुर से प्रकाशित, संपादक : गणेश शंकर विद्यार्थी
31. प्रभा : 1913, मासिक, खण्डवा *(कानपुर)*, संपादक : कालूराम, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', माखनलाल चतुर्वेदी
32. श्री शारदा : 1916, मासिक, जबलपुर, सं. : नर्मदा प्रसाद मिश्र, द्वारिका प्रसाद मिश्र, सालग्राम द्विवेदी, संरक्षक : सेठ गोविन्द दास; छायावाद युग का श्रेष्ठ पत्र, इसने 1920 में छायावाद संबंधी लेखमाला प्रकाशित कर छायावाद को सर्वप्रथम मान्यता प्रदान की।
33. कर्मवीर : 1919, जबलपुर, साप्ताहिक, संपादक : माखनलाल चतुर्वेदी
34. चाँद : 1920, साप्ताहिक *(बाद में मासिक)*, प्रयाग, संपादक : रामरख सहगल, चंडीप्रसाद, महादेवी वर्मा
35. हिंदी नवजीवन : 1921, साप्ताहिक, अहमदाबाद, संपादक : महात्मा गाँधी
36. समन्वय : 1922, मासिक, कलकत्ता, माधवानंद के संपादकत्व में आरंभ, बाद में 'निराला' द्वारा संपादन
37. माधुरी : 1922, लखनऊ, संपादक : प्रेमचंद
38. मतवाला : 1923, साप्ताहिक, कलकत्ता से प्रकाशित, संपादक : 'निराला'
39. वीणा : 1927, मासिक, श्री मध्य भारत हिन्दी साहित्य, इन्दौर, प्रथम संपादक : पंडित अम्बिका प्रसाद, वर्तमान संपादक : विनायक पाण्डेय त्रिपाठी, हिन्दी में निकलनेवाली पत्रिकाओं में सबसे प्राचीन पत्रिका
40. विशाल भारत : 1928, मासिक, कलकत्ता से प्रकाशित, संपादक : बनारसीदास चतुर्वेदी, 'अज्ञेय', श्रीराम शर्मा
41. सुधा : 1929, मासिक, लखनऊ, संपादक : दुलारेलाल भार्गव, 'निराला'
42. हंस : 1930, मासिक, बनारस, संपादक : प्रेमचंद
43. हिन्दुस्तानी : 1931, त्रैमासिक, इलाहाबाद, सं. : रामचंद्र टंडन; हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद का मुखपत्र।
44. जागरण : 1932, साप्ताहिक, बनारस, प्रेमचंद, छायावाद का घोर समर्थक पत्र
45. भारत : 1933, अर्द्ध साप्ताहिक, इलाहाबाद से प्रकाशित, संपादक : नंददुलारे वाजपेयी
46. साहित्य-संदेश : 1937, मासिक, आगरा, संपादक : बाबू गुलाबराय
47. रूपाभ : 1938, मासिक पत्र, संपादक : पंत
48. हिन्दी अनुशीलन : 1943, त्रैमासिक, प्रयाग, सं. : धीरेन्द्र वर्मा; भारतीय हिन्दी परिषद, प्रयाग का मुख पत्र।
49. प्रतीक : 1947, द्विमासिक, इलाहाबाद, संपादक : 'अज्ञेय'
50. कल्पना : 1949, द्विमासिक, हैदराबाद, संपादक : आर्येन्द्र शर्मा
51. धर्मयुग : 1950, साप्ताहिक, बंबई, संपादक : धर्मवीर भारती
52. आलोचना : 1951, त्रैमासिक, दिल्ली, संपादक : शिवदान सिंह चौहान, चार सदस्यीय संपादकमंडल *(धर्मवीर भारती, रघुवंश, व्रजेश्वर वर्मा व विजयदेव नारायण साही)*, नामवर सिंह
53. वसुधा : 1953, मासिक, जबलपुर, सं. : राजेश्वर प्रसाद गुरु, हरिशंकर परसाई; प्रलेस का मुखपत्र मुक्तिबोध की रचनाएँ पहली बार इसी पत्रिका में प्रकाशित हुई।
54. नये पत्ते : 1953, इलाहाबाद, संपादक : लक्ष्मीकान्त वर्मा
55. नयी कविता : 1954, अर्द्धवार्षिक, इलाहाबाद, संस्थापक-संपादक : जगदीश गुप्त
56. ज्ञानोदय : 1955, मासिक, कलकत्ता, संपादक : कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
57. निकष : 1956, साप्ताहिक, इलाहाबाद, संपादक : धर्मवीर भारती
58. कृति : 1958, दिल्ली, संपादक : नरेश मेहता, श्रीकांत वर्मा
59. समालोचक : 1958, मासिक पत्र, आगरा से प्रकाशित, संपादक : रामविलास शर्मा
60. पहल : 1960, त्रैमासिक, जयपुर, संपादक : ज्ञानरंजन
61. क ख ग : 1963, त्रैमासिक, इलाहाबाद, संपादक : रघुवंश
62. माध्यम : 1964, मासिक, प्रयाग/इलाहाबाद, सं. : बालकृष्ण राव।
63. दिनमान : 1965, साप्ताहिक, दिल्ली, संपादक : रघुवीर सहाय
64. संचेतना : 1967, त्रैमासिक, दिल्ली, सं.: महीप सिंह; उच्च स्तरीय लघु पत्र।
65. समीक्षा : 1968, त्रैमासिक *(बाद में मासिक)*, पटना, सं. : देवेन्द्र नाथ शर्मा, गोपाल राय।
66. कथा : 1972, त्रैमासिक *(बाद में मासिक)*, इलाहाबाद, सं.: मार्कण्डेय।
67. पूर्वग्रह : 1974, मासिक, भोपाल, संपादक : अशोक बाजपेयी
68. साक्षात्कार : 1976, त्रैमासिक, भोपाल, सं. : ज्ञानी; म. प्र. साहित्य परिषद्, भोपाल का मुखपत्र।
69. दस्तावेज़ : 1978, गोरखपुर, सं. : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
70. अभिप्राय : 1981, इलाहाबाद, सं. : राजेन्द्र कुमार
71. समकालीन जनमत : 1981, पटना / इलाहाबाद, सं. : रामजी राय।
72. वर्तमान साहित्य : 1984, मासिक, इलाहाबाद, संपादक : विभूति नारायण
73. हंस *(पुनर्प्रकाशन)* : 1986, मासिक, दिल्ली, संपादक : राजेन्द्र यादव

74. वागर्थ : जून 1995, मासिक, कलकत्ता, सं. : प्रभाकर श्रोत्रिय।
75. साहित्य अमृत : अगस्त 1995, मासिक, नई दिल्ली, सं. : पं. विद्यानिवास मिश्र।
76. कथादेश : 1997, मासिक, दिल्ली, संपादक : हरि नारायण
77. तद्भव : मार्च 1999, लखनऊ, सं. : अखिलेश।
78. कसौटी : अप्रैल जून 1999, त्रैमासिक, पटना, सं. : नंदकिशोर नवल।
79. बहुवचन : अक्तू दिसम्बर 1999, त्रैमासिक, वर्धा, सं. : अशोक बाजपेयी; महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा का पत्र।
80. कथाक्रम : 2000, त्रैमासिक, लखनऊ, सं. : शैलेन्द्र सागर
81. परख : 2000, इलाहाबाद, सं. : कृष्ण मोहन
82. सधान : अप्रैल-जून 2001, त्रैमासिक, इलाहाबाद / दिल्ली, सं. : लाल बहादुर वर्मा
83. पुस्तक वार्ता : 2001, द्वैमासिक, वर्धा, सं.: राकेश श्रीमाल; महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा का पत्र।
84. नया ज्ञानोदय : 2002, मासिक, नई दिल्ली, सं. : रवीन्द्र कालिया; भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली का पत्र।
85. वाक् : 2007, त्रैमासिक, नई दिल्ली, सं. : सुधीश पचौरी।
86. पाखी : सितम्बर 2008, मासिक, नोएडा (उ. प्र.), सं. : अपूर्व जोशी।
87. पुस्तक संस्कृति : जनवरी-मार्च 2016, त्रैमासिक, नई दिल्ली से बलदेव भाई शर्मा, एन. बी. टी. नई दिल्ली की पत्रिका

प्रमुख स्थापनाएँ

फोर्ट विलियम कालेज, कलकता	4 मई, 1800 ई०
कवितावर्धिनी सभा, काशी	*1870 ई. (संस्थापक-भरतेन्दु हरिश्चन्द्र)*
हिन्दी (भाषा) संवर्द्धिनी सभा, अलीगढ	1874 ई० *(संस्थापक-भारतेन्दु मंडल के एक सदस्य बाबू तोताराम वर्मा)*
हिन्दी उद्धारिणी प्रतिनिधि मध्य सभा, प्रयाग	1884 ई०
नागरी प्रचारिणी सभा, काशी	16 जुलाई, 1893 ई० *(संस्थापक-श्याम सुंदर दास, राम नारायण मिश्र व शिव कुमार सिंह)*
सरस्वती (पत्रिका), काशी *(बाद में इलाहाबाद से प्रकाशन)*	1900 ई० *(संस्थापक-चिंतामणि घोष)*
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग	1910 ई० *(प्रथम सभापति-मदन मोहन मालवीय)*
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार संस्था, मद्रास	1915 ई० *(संस्थापक-महात्मा गाँधी)*
अखिल भारतीय संगीत परिषद	1919 ई०
प्रगतिशील लेखक संघ (प्रलेसं)	9 अप्रैल, 1936 ई० *(प्रथम अधिवेशन-लखनऊ, प्रथम सभापति-प्रेमचंद)*
इंडियन पीपुल्स थियेटर एसोसिएशन (IPTA)	25 मई, 1942 ई०
परिमल, इलाहाबाद *(नये लेखकों की संस्था)*	10 दिसम्बर, 1944 ई० *(संस्थापक-डॉ. रघुवंश, लक्ष्मीकांत वर्मा, विजयदेव नारायण साही, धर्मवीर भारती व जगदीश गुप्त) प्रलेसं के जवाब में स्थापित संस्था*
संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली	28 जनवरी, 1953 ई० *(भारत सरकार द्वारा)*
साहित्य अकादमी, नई दिल्ली	12 मार्च, 1954 ई० *(भारत सरकार द्वारा)*
राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (NSD), नई दिल्ली	1959 ई०
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा (उ प्र.)	1962 ई० *(भारत सरकार द्वारा)*
जनवादी लेखक संघ (जलेसं), नई दिल्ली	फरवरी, 1982 ई०
जन संस्कृति मंच (जसम), नई दिल्ली	26 अक्तूबर, 1985 ई०
महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा *(महाराष्ट्र)*	1997 ई०

प्रमुख वाद

वाद	प्रवर्तक
संस्कृत काव्यशास्त्र	
रस-संप्रदाय	भरत मुनि
अलंकार-संप्रदाय	भामह, मम्मट
रीति-संप्रदाय	दण्डी, वामन
ध्वनि-संप्रदाय	आनंदवर्धन
वक्रोक्ति-संप्रदाय	कुन्तक
औचित्य-संप्रदाय	क्षेमेन्द्र
हिन्दी काव्यशास्त्र	
रीतिवाद	केशवदास *(शुक्ल के अनुसार चिंतामणि)*
स्वच्छंदतावाद	श्रीधर पाठक
छायावाद	जय शंकर प्रसाद
हालावाद	हरिवंश राय 'बच्चन'
प्रयोगवाद	'अज्ञेय'
प्रपद्यवाद या नकेनवाद	नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार, नरेश रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'
मांसलवाद	ओंकार नाथ त्रिपाठी
कैप्सूलवाद	
पाश्चात्य काव्यशास्त्र	
औदात्यवाद	लोंजाइनस *(3री सदी ई०)*
अस्तित्ववाद	सॉरिन कीर्कगार्द *(1813-55)*
मार्क्सवाद	कार्ल मार्क्स *(1818-83)*
मनोविश्लेषणवाद	फ्रॉयड *(1856-1939)*
प्रतीकवाद	जीन मोरियस *(1856-1910)*
अभिव्यंजनावाद	बेनदेतो क्रोचे *(1866-1952)*
बिम्बवाद	टी०ई० ह्यूम *(1883-1917)*

प्रमुख दर्शन

दर्शन	प्रवर्तक
सांख्य	कपिल
योग	पतंजलि
न्याय	अक्षपाद गौतम
वैशेषिक	उलूक कणद
मीमांसा/पूर्व-मीमांसा	जैमिनी
वेदांत/उत्तर मीमांसा	बादरायण
लोकायत/बार्हस्पत्य	चार्वाक *(बृहस्पति का शिष्य)*
बौद्ध/क्षणिकवाद	गौतम बुद्ध
जैन/स्यादवाद	महावीर
अद्वैत मत *(स्मृति/स्मार्त संप्रदाय)*	शंकराचार्य *(भक्ति आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार करने वाला)*
विशिष्टाद्वैत मत *(श्री संप्रदाय)*	रामानुज आचार्य *(भक्ति आंदोलन का प्रारंभिक प्रतिपादक)*

दर्शन	प्रवर्तक
द्वैताद्वैत/भेदाभेद मत *(सनकादि/ नंबिक संप्रदाय)*	निम्बार्क आचार्य
द्वैत मत *(ब्रह्म संप्रदाय)*	मध्व आचार्य
शुद्धाद्वैत मत *(रूद्र संप्रदाय)*	विष्णु स्वामी
पुष्टिमार्ग/शुद्धाद्वैत मत *(रूद्र संप्रदाय)*	वल्लभ आचार्य
अचिंत्यभेदाभेद मत *(गौड़ीय वैष्णव संप्रदाय)*	चैतन्य
राधा वल्लभ संप्रदाय	हित हरिवंश
रामावत/रामानंदी संप्रदाय	रामानंद
कबीर पंथी संप्रदाय	कबीर
सिख मत *(नानक पंथी संप्रदाय)*	नानक
उदासी संप्रदाय	श्रीचंद *(गुरु नानक के पुत्र)*
बिश्नुई संप्रदाय	जंभनाथ
हरिदासी *(सखी)* संप्रदाय	स्वामी हरिदास

प्रमुख गुरु/ शिष्य

गुरु	शिष्य
गोविन्द योगी	शंकराचार्य
मत्स्येंद्रनाथ/मछंदर नाथ	गोरखनाथ
यादव प्रकाश	रामानुज आचार्य
नारद मुनि	निम्बार्क आचार्य
राघवानंद	रामानंद
रामानंद	12 प्रसिद्ध शिष्य—अनंतादास, सुखानंद, सुरसुरानंद, नरहयानंद, भावानंद, पीपा *(राजपूत राजा)*, कबीर *(जुलाहा)*, सेना *(नाई)*, धन्ना *(जाट किसान)*, रैदास *(चमार)*, पद्मावती, सुरसरी
विष्णु स्वामी	वल्लभाचार्य
वल्लभाचार्य	सूरदास
रैदास	मीराबाई
बाबा नरहरिदास	तुलसीदास
अग्रदास	नाभादास
शेख मोहिदी	जायसी
हाजी बाबा	उसमान
महावीर प्रसाद द्विवेदी	मैथिली शरण गुप्त, प्रेमचंद, 'निराला'

प्रमुख उपनाम

मूल नाम	उपनाम/लोकप्रिय नाम/छद्म नाम
वाल्मीकि	आदि कवि
स्वयंभू	अपभ्रंश का बाल्मीकि
सरहपा	हिन्दी का प्रथम कवि
अमीर खुसरो	हिन्दुस्तान की तूती/हिन्द-इस्लामी समन्वित संस्कृति का प्रतिनिधि
विद्यापति	मैथिल कोकिल/अभिनव जयदेव
असाइत	प्रथम सूफी कवि
मलिक मुहम्मद	जायसी
सूरदास	अष्टछाप का जहाज/पुष्टिमार्ग का जहाज/ खंजन नयन/भावाधिपति/वात्सल्य रस सम्राट
नंददास	जड़िया कवि
सैयद इब्राहिम	रसखान
तुलसीदास	कवि शिरोमणि/मानस का हंस/लोक नायक/हिन्दी का जातीय कवि
तुलसी और गंग	सुकविन के सरदार
अब्दुर्रहीम 'खानेखाना'	रहीम
नरहरि बंदीजन	महापात्र
महेश दास	ब्रह्म /बीरबल
केशवदास	कठिन काव्य का प्रेत
मतिराम	पुराने पंथ के पथिक
घनानंद	प्रेम की पीर का कवि/ साक्षात रसमूर्ति/ जबाँदानी का दावा रखनेवाला कवि
भिखारीदास	दास
सैयद गुलाम नबी	रसलीन
महाराज सावंत सिंह	नागरीदास
सदासुख लाल	नियाज
जगन्नाथ दास	रत्नाकर
राजा शिव प्रसाद	सितारे-हिन्द/भारतेन्दु के विद्यागुरु
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	हिन्दी नवजागरण का अग्रदूत/नवयुग के अग्रदूत/हिन्दी साहित्य में आधुनिकता के जन्मदाता/रसा
बदरी नारायण चौधरी	प्रेमघन
महावीर प्रसाद द्विवेदी	भुजंगभूषण भट्टाचार्य/सुकवि किंकर/कल्लू अल्हइत/नियम नारायण शर्मा
नाथूराम शर्मा	कविता-कामिनी कांत/भारतेन्तु-प्रज्ञेन्दु/ साहित्य-सुधाकर/शंकर
अयोध्या सिंह उपाध्याय	कवि सम्राट/हरिऔध
राय देवी प्रसाद	पूर्ण
गया प्रसाद शुक्ल	सनेही/त्रिशूल
मैथिलीशरण गुप्त	प्रथम राष्ट्रकवि/दद्दा
बाल मुकुंद गुप्त	शिवशंभु
लाला भगवानदीन	दीन
सत्य नारायण	कविरत्न
जयशंकर प्रसाद	झारखण्डी/कलाधर/आधुनिक कविता के सुमेरु
सूर्यकांत त्रिपाठी	निराला/महाप्राण
सुमित्रा नंदन पंत	प्रकृति का सुकुमार कवि/गोसाईं दत्त/ साईदा/नन्दिनी/एक निहत्था/सुधाकर प्रिय/ रावणार्यनुज/मोती/नंदनजी/नयन/लक्ष्मण/ मुकुल
महादेवी वर्मा	आधुनिक युग की मीरा
माखन लाल चतुर्वेदी	एक भारतीय आत्मा
मोहन लाल महतो	वियोगी
जनार्दन प्रसाद झा	द्विज
वैद्यनाथ मिश्र	नागार्जुन/यात्री/जनकवि
त्र्यंबक वीर राघवाचार्य	रांगेय राघव
रामधारी सिंह	दिनकर
बालकृष्ण शर्मा	नवीन
शिव मंगल सिंह	सुमन
गोपाल शरण सिंह	नेपाली
हरिवंश राय बच्चन	हालावादी कवि
सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन	अज्ञेय/कठिन गद्य का प्रेत/कुट्टि चातन
नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार व नरेश *(नाम के आदि अक्षर न के न से बनाया गया नामकरण)*	नकेन
शमशेर बहादुर सिंह	कवियों का कवि
फैंटसी का कवि/मुक्तिबोध	
सुदामा पांडे	धूमिल
कुमार विकल	धूम्रधर्मी कविताओं का कवि
धनपत राय	प्रेमचंद/उपन्यास सम्राट/कहानी सम्राट/ कलम का सिपाही/कलम का मजदूर/भारत का मैक्सिम गोर्की

मूल नाम	उपनाम/लोकप्रिय नाम/छद्म नाम
वृंदावन लाल वर्मा	बुंदेलखंड का चंदबरदाई
शिव पूजन सहाय	शिव
पाण्डेय बेचन शर्मा	उग्र
उपेन्द्र नाथ	अश्क
रामेश्वर शुक्ल	अंचल/मांसलवादी
विश्वंभर नाथ शर्मा	कौशिक
चण्डी प्रसाद	हृदयेश
फणीश्वर नाथ	रेणु
चन्द्रधर शर्मा	गुलेरी
राजेन्द्र बाला घोष	बंग महिला
शरतचंद्र	आवारा मसीहा
हरिकृष्ण	प्रेमी
विद्यानिवास मिश्र	भ्रमरानंद/परंपरा जीवी
वियोगी हरि	गद्य-काव्य का लेखक
गणेश बिहारी मिश्र, श्याम मिश्रबंधु	
बिहारी मिश्र व शुकदेव	
बिहारी मिश्र	
रामचंद्र शुक्ल	मुनि मार्ग के हिमायती
नंद दुलारे वाजपेयी	मौष्ठववादी/स्वच्छंदतावादी आलोचक
डॉ० नगेन्द्र	रसवादी आलोचक
नेमिचंद्र जैन	आलोचकों का आलोचक
किशोरीदास बाजपेयी	हिन्दी के पाणिनी
राम विलास शर्मा	अगिया वैताल/निरंजन
दुष्यंत कुमार	हिन्दी गजलों के राजकुमार

प्रमुख तिथि / वर्ष

ईस्वी पूर्व (ई.पू.)

750 *लौकिक संस्कृत* का क्रमिक विकास।

500 बौद्ध व जैन प्राकृत-ग्रंथों का उद्भव *(पूर्वी भारत)*।

400 *पाणिनी* द्वारा 'अष्टाध्यायी' *(संस्कृत व्याकरण)* का प्रचलन *(पश्चिमी भारत)*, जिसमें वैदिक संस्कृत से पाणिनीय संस्कृत (लौकिक संस्कृत) में स्वरूप परिवर्तन की झलक मिलती है।

322 मौर्य सम्राटों के प्राकृत *(पालि)* भाषा में उत्कीर्ण ब्राह्मी लिपि के शिलालेख।

ईस्वी (ई.)

320 गुप्त लिपि का उद्भव *(ब्राह्मी की उत्तरी शैली से)* जोकि 5वीं सदी ई. तक प्रयुक्त होती रही।

400 *कालिदास* प्रणीत ग्रंथ 'विक्रमोर्वशीयम्' में अपभ्रंश का प्रयोग।

550 *वल्लभी नरेश धरसेन* के शिलालेख में अपभ्रंश साहित्य *(विशेषतः प्रबंध रचना)* का उल्लेख।

769 *सिद्ध कवि सरहपा (जो हिन्दी के सर्वप्रथम कवि माने जाते हैं)* द्वारा 'दोहाकोश' की रचना।

779 *'कुवलयमालाकहा'* में *उद्योतन सूरि* द्वारा प्रांतीय भाषाओं का प्रयोग।

933 *जैन कवि देवसेन* द्वारा *'श्रावकाचार' (जिसे हिन्दी का प्रथम ग्रंथ माना जाता है)* की रचना।

1088-1172 *'शब्दानुशासन'* के रचयिता *आचार्य हेमचन्द्र* का जीवन-काल।

1100 प्राचीन नागरी लिपि का उद्भव *(15वीं-16वीं सदी से आधुनिक नागरी लिपि का उद्भव)*।

1168-92 *'पृथ्वीराजरासो'* के रचयिता *चंदबरदाई* का जीवन काल।

1253-1325 *अमीर खुसरो* का जीवन-काल। खुसरो ने अपनी भाषा के लिए *'हिन्दवी'* शब्द का प्रयोग किया।

1350-1450 *मैथिल कोकिल विद्यापति* का जीवन-काल।

1354 ब्रजभाषा के प्रथम ग्रंथ *'प्रद्युम्नचरित' (सुधीर अग्रवाल)* की रचना।

1368-1468 *आचार्य रामानंद* का जीवन-काल। आचार्य रामानंद के प्रभाव से सगुण भक्ति काव्य धारा का आरंभ *(1450)*।

1370 सूफी कवि *असाइत* द्वारा 'हंसावली' की रचना से सूफी प्रेमगाथा काव्य धारा का आरंभ।

1379 अवधी की प्रथम कृति 'चंदायन' या 'लोरकहा' *(मुल्ला दाउद)* की रचना।

1398-1518 संत कवि कबीर का जीवन-काल। कबीर की रचनाओं से निर्गुण भक्ति काव्य धारा का आरंभ।

1400-79 अपभ्रंश काव्य परम्परा के अंतिम कवि *रयधू* का जीवन-काल।

1479-1582 'सूरसागर' के रचयिता *सूरदास* का जीवन-काल।

1492-1542 'पद्मावत' के रचयिता *जायसी* का जीवन-काल।

1498-1562 *मीराबाई* का जीवन-काल।

1532-1623 'रामचरितमानस' महाकाव्य के रचयिता *तुलसीदास* का जीवन-काल।

1555-1617 *केशवदास* का जीवन काल।

1580 *बुरहानुद्दीन जानम* की 'कलमीत-उल-हकायत' प्रारंभिक दक्खिनी साहित्य रचना।

1585 भक्त कवि *नाभादास* कृत 'भक्तमाल' *(हिन्दी भक्त कवियों का परिचायत्मक ग्रंथ)* : हिन्दी की प्रथम जीवनी।

1595-1663 'बिहारी सतसई' के रचयिता *बिहारी* का जीवन काल।

1604 'आदि ग्रंथ' में सिक्खों के 5वें गुरु, *गुरु अर्जुनदेव* द्वारा अनेक कवियों की रचनाओं का संग्रह।

1609-85 *चिंतामणि* का जीवन-काल।

1623 *जटमल* रचित 'गोरा बादल की कथा' : खड़ी बोली का प्रथम गद्य ग्रंथ।

1613-1715 *भूषण* का जीवन-काल।

1617-93 *मतिराम* का जीवन-काल।

1641 *बनारसीदास* रचित 'अर्धकथानक' : हिन्दी की प्रथम आत्मकथा।

1643 आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार रीति-काव्य परंपरा का प्रारंभ।

1645 मुगल बादशाह शाहजहाँ द्वारा दिल्ली में लाल किले का निर्माण। स्थानीय भाषा को 'उर्दू' कहा जाने लगा।

1650 *सेनापति* का रचना-काल।

1667-1707 *वली दक्कनी* का जीवन-काल। दिल्ली के अभिजात वर्ग में फारसी का स्थान उर्दू ने लेना प्रारंभ किया, जिसे साधारणतः *सौदा, मीर* आदि द्वारा 'हिन्दी' कहा गया।

1673-1767 *देव* का जीवन-काल।

1689-1757 *घनानंद* का जीवन-काल।

1750 भिखारीदास का रचना-काल।

1753-1833 *पद्माकर* का जीवन-काल।

1796 प्राचीनतम मुद्राक्षर आधारित देवनागरी लिपि में मुद्रण *(जॉन गिलक्राइस्ट, 'हिन्दुस्तानी भाषा का व्याकरण', कलकत्ता)*।

1803 फोर्ट विलियम कॉलेज, कलकत्ता के लिए आधुनिक हिन्दी गद्यकार *लल्लूजी लाल* प्रणीत 'प्रेमसागर' *(श्रीमद्भागवत पुराण के दशम स्कंध का खड़ी बोली गद्य रूपान्तर)* का प्रकाशन।

1813-46 त्रावणकोर के महाराजा *स्वाति तिरूनल राम वर्मा* का जीवन-काल। वर्मा ने दक्षिण भारतीय भाषाओं के साथ हिन्दी में पद्य रचना की।

1826 कलकत्ता से हिन्दी के प्रथम समाचार-पत्र 'उदंत मार्तंड' *(सपादक : युगल किशोर शुक्ल)* का प्रकाशन आरंभ *(30 मई)*। 30 मई को 'हिन्दी पत्रकारिता दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

1833-86 गुजराती के महाकवि नर्मद का जीवन-काल। नर्मद ने हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाने का विचार रखा।

1837-81 'ओम जय जगदीश हरे ' *(भजन)* के रचनाकार *श्रद्धाराम फुल्लौरी* का जीवन-काल।

1839, 1847 फ्रांसीसी विद्वान *गार्सां द तासी* द्वारा फ्रांसीसी भाषा में हिन्दी साहित्य का इतिहास *('इस्तवार द ला लितरेत्यूर ऐन्दोई ऐ ऐन्दुस्तानी')* दो भागों में लिखा गया।

1850 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग उस भाषा के लिए समाप्त हो गया जिसे अब 'उर्दू' कहा जाता है।

1850-85 *भारतेन्दु हरिश्चन्द्र* का जीवन-काल *['भारत दुर्दशा' (नाटक)* : 1876, 'अंधेर नगरी' *(नाटक)* : 1881, नाटक *(आलोचना)* : 1883]।

1854 कलकत्ता से प्रथम हिन्दी दैनिक पत्र 'समाचार सुधावर्षण' *(संपादक : श्यामसुंदर सेन)* का प्रकाशन आरंभ।

1856-94 *प्रताप नारायण मिश्र* का जीवन-काल *['भारत दुर्दशा' (नाटक) : 1886]*।

1864-1938 *महावीर प्रसाद द्विवेदी* का जीवन-काल *['सरस्वती पत्रिका का संपादन : 1903-20, 'संपत्तिशास्त्र' (अर्थशास्त्र विषयक ग्रंथ) : 1907]*।

1873 'हरिश्चन्द्र मैग्जीन' का प्रकाशन आरंभ *(भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'हरिश्चन्द्र मैग्जीन' के प्रकाशन वर्ष को एक महत्त्वपूर्ण घटना माना और अपने इतिहास-जर्नल 'काल चक्र' में लिखा : 'हिन्दी नई चाल में ढली, सन् 1873 ई. में')*।

1875 *स्वामी दयानंद* के हिन्दी ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' का प्रकाशन।

1875-1945 *श्यामसुंदर दास* का जीवन-काल *('साहित्यालोचन' : 1912, 'हिन्दी कोविद रत्नमाला'— पहला भाग : 1909, दूसरा भाग : 1914)*

1877 *श्रद्धाराम फुल्लौरी* ने 'भाग्यवती नामक उपन्यास रचा। 'भाग्यवती' का प्रकाशन दस वर्ष बाद 1887 में।

1880-1936 *प्रेमचंद* का जीवन-काल *['सेवासदन' (उपन्यास) : 1918, 'गोदान' (उपन्यास) : 1936]*

1882 हिन्दी के प्रथम मौलिक उपन्यास 'परीक्षा गुरु' *(लाला श्रीनिवास दास)* का प्रकाशन।

1884-1941 *आचार्य रामचन्द्र शुक्ल* का जीवन-काल *[हिन्दी साहित्य का इतिहास : 1929, चिंतामणि— भाग एक : 1939]*

1886-1964 *मैथिली शरण गुप्त* का जीवन-काल *['भारत भारती' (काव्य) : 1912, 'साकेत' (काव्य) : 1932, 'यशोधरा' (काव्य) : 1962]*।

1888-1963 *बाबू गुलाब राय* का जीवन-काल *['मेरी असफलताएँ' (आत्मकथा) : 1941]*।

1889-1937 *जयशंकर प्रसाद* का जीवन-काल *['स्कंदगुप्त' (नाटक)* : 1932, *'कामयानी' (काव्य) : 1937]*।

1889-1968 *माखनलाल चतुर्वेदी ['हिमकिरीटनी' (काव्य) : 1941, 'हिमतरंगिनी' (काव्य) : 1948]*।

1889-1969 *वृंदावन लाल वर्मा* का जीवन-काल [झांसी की रानी (उपन्यास) : 1946]।

1891 'चंद्रकांता'—उपन्यास *(बाबू देवकी नंदन खत्री)* का प्रकाशन।

1893 नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की स्थापना *(संस्थापकत्रयीः बाबू श्याम सुंदर दास, पं. रामनारायण मिश्र और ठाकुर शिवकुमार सिंह)*

1893-1963 *राहुल सांस्कृत्यायन* का जीवन-काल।

1899-1961 *निराला* का जीवन-काल *['अनामिका' (काव्य) : 1923, परिमल (काव्य) : 1929, गीतिका (काव्य) : 1936, तुलसीदास (काव्य) : 1938, कुकुरमुत्ता (काव्य) : 1942, अणिमा (काव्य) : 1943, नये पत्ते (काव्य) : 1946]*।

1900-77 *सुमित्रानंदन पंत* का जीवन-काल *['उच्छवास' (काव्य) : 1920, 'युगांत' (काव्य): 1936, 'ग्राम्या' (काव्य): 1940, 'कला और बूढ़ा चाँद' (काव्य) : 1959, 'चिदम्बरा' (काव्य) : 1959]*

1900 प्रसिद्ध पत्रिका 'सरस्वती' का प्रकाशन आरंभ। *(संपादकः श्यामसुंदरदास व 4 अन्य)*। 'सरस्वती' पत्रिका में *किशोरी लाल गोस्वामी* की कहानी 'इंदुमती' का प्रकाशन *('इंदुमती' हिन्दी की पहली कहानी मानी जाती है।)*।

1902-82 *इलाचंद्र जोशी* का जीवन-काल।

1903-76 *यशपाल* का जीवन-काल *['दिव्या' (उपन्यास) : 1945, 'झूठा सच' (उपन्यास)—प्रथम भाग : 1958, द्वितीय भाग : 1960]*

1903-81 *भगवती चरण वर्मा* का जीवन-काल *['चित्रलेखा' (उपन्यास) : 1934]*

1905 'चंद्रकाता संतति'— उपन्यास *(बाबू देवकीनंदन खत्री)* का प्रकाशन।

1905-88 *जैनेन्द्र कुमार* का जीवन-काल *['त्यागपत्र' (उपन्यास) : 1937]*।

1906-67 *नंददुलारे बाजपेयी* का जीवन-काल।

1907-87 *महादेवी वर्मा* का जीवन-काल।

1907-89 *आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी* का जीवन-काल *['हिन्दी साहित्य की भूमिका' : 1940, 'कबीर' : 1940]*

1907-2003 *हरिवंश राय 'बच्चन'* का जीवन-काल *['मधुशाला' (काव्य) : 1935]*

1908-74 *रामधारी सिंह 'दिनकर'* का जीवन-काल *['कुरुक्षेत्र' (काव्य) : 1940, 'रश्मिरथी' (काव्य) : 1952, 'उर्वशी' (काव्य) : 1961; 'संस्कृति के चार अध्याय' (निबंध) : 1956]*

1909 'कविता क्या है ?' —निबंध *(रामचन्द्र शुक्ल)* का 'सरस्वती' में प्रकाशन।

1910-96 *उपेन्द्रनाथ अश्क* का जीवन-काल।

1910-98 *नागार्जुन* का जीवन-काल।

1911-87 *'अज्ञेय'* का जीवन-काल *[शेखर : एक जीवनी (उपन्यास) —प्रथम भाग : 1941, द्वितीय भाग : 1944, 'कितनी नावों में कितनी बार '(काव्य) : 1967]*

1912-2009 *विष्णु प्रभाकर* का जीवन-काल *['आवारा मसीहा' (जीवनी) : 1974, 'अर्द्धनारीश्वर' (उपन्यास): 1992]*

1912-2000 *राम विलास शर्मा* का जीवन-काल *[निराला की साहित्य साधना (आलोचना)— प्रथम भाग: 1969, द्वितीय भाग: 1972, तृतीय भाग: 1976]*

1913 दादा साहब फाल्के ने हिन्दी चित्रपट के इतिहास में 'राजा हरिश्चन्द्र' नामक प्रथम हिन्दी फिल्म (चलचित्र) का निर्माण किया।

1914 खड़ी बोली हिन्दी के प्रथम महाकाव्य 'प्रियप्रवास' *(अयोध्या सिंह आध्याय 'हरिऔध')* का प्रकाशन।

1915 *गाँधीजी* ने 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा' की स्थापना मद्रास में की। 'उसने कहा था'— कहानी *(चंद्रधर शर्मा गुलेरी)* का 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशन।

1916-90 *अमृत लाल नागर* का जीवन-काल।

1916 'जुही की कली'— कविता *(निराला)* का प्रकाशन।

1917-64 *मुक्तिबोध* का जीवन-काल *['चाँद का मुँह टेढ़ा है' (काव्य) : 1964]*।

1918 मराठी भाषी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने कांग्रेस अध्यक्ष की हैसियत से घोषणा की कि हिन्दी भारत की राजभाषा होगी।

1921 'हिन्दी व्याकरण' *(पं. कामता प्रसाद गुरु)* का प्रकाशन।

1921-77 *फणीश्वर नाथ 'रेणु'* का जीवन-काल *['मैला आँचल' (उपन्यास) : 1954]*

1922-90 रघुवीर सहाय का जीवन-काल *['आत्म हत्या के विरुद्ध' (काव्य) : 1967]*।

1925-2011 श्रीलाल शुक्ल का जीवन-काल *['राग दरबारी' (उपन्यास) : 1968]*।

1925-72 मोहन राकेश का जीवन-काल *[आषाढ़ का एक दिन (नाटक) : 1958, 'अंधेरे बंद कमरे' (उपन्यास) : 1961]*

1926-97 धर्मवीर भारती का जीवन-काल *[गुनाहों का देवता (उपन्यास) : 1949, 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' (उपन्यास) : 1952, अंधा युग (नाटक) : 1954]*

1927 नामवर सिंह का जन्म *['छायावाद' (आलोचना) : 1954, 'कविता के नये प्रतिमान' (आलोचना) : 1968, 'दूसरी परंपरा की खोज' (आलोचना) : 1982, 'वाद-विवाद-संवाद' (आलोचना) : 1989]*

1929–2005 निर्मल वर्मा का जीवन-काल *['वे दिन (उपन्यास) : 1964]*।

1929 'हिन्दी शब्द सागर' *(संपादकत्रयी : श्याम सुंदर दास, रामचन्द्र शुक्ल, रामचन्द्र वर्मा)* का प्रकाशन।

1930 का दशक हिन्दी टाइपराइटर का विकास *(शैलेन्द्र मेहता)*।

1931 हिन्दी की पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' *(निर्माता : आर्देशिर ईरानी)* पर्दे पर आई।

1934 'चित्रलेखा'—उपन्यास *(भगवती चरण वर्मा)* का प्रकाशन।

1935 'मधुशाला'— काव्य *('बच्चन')* का प्रकाशन। 'सरोज स्मृति'— कविता *(निराला)* का प्रकाशन। मद्रास राज्य के मुख्यमंत्री की हैसियत से सी. राजागोपालाचारी ने राज्य में हिन्दी शिक्षा को अनिवार्य किया।

1936 'गोदान'—उपन्यास *(प्रेमचंद)* का प्रकाशन। 'राम की शक्ति पूजा'— कविता *(निराला)* का प्रकाशन। 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना।

1937 'कामायनी'—काव्य *(प्रसाद)* का प्रकाशन वर्ष। 'त्यागपत्र'— उपन्यास *(जैनेन्द्र कुमार)* का प्रकाशन।

1943 'तार सप्तक' का प्रकाशन।

1944 'परिमल' की स्थापना।

1949 14 सितम्बर, 1949 ई. को संविधान सभा ने हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

1950 26 जनवरी, 1950 ई. को भारत का संविधान लागू। तदनुसार उसमें किए गए भाषाई प्रावधान *(अनुच्छेद 120, 210, 343 से 351 तक एवं 8वीं अनुसूची)* लागू।

1951 'आलोचना' *(पत्रिका)* का प्रकाशनारंभ। 'दूसरे सप्तक' का प्रकाशन।

1954 'मैला आँचल'—उपन्यास *(रेणु)* का प्रकाशन, 'अंधा युग'— नाटक *(धर्मवीर भारती)* का प्रकाशन।

1955 प्रथम राजभाषा आयोग/बाल गंगाधर *(बी.जी.)* खेर आयोग का गठन *(7 जून)*।

1957 प्रथम राजभाषा समिति/गोविन्द बल्लभ *(जी.बी.)* पंत समिति का गठन *(16 नवम्बर)*।

1958 *'हिन्दी शब्दानुशासन' (पं. किशोरीदास बाजपेयी)* का प्रकाशन।

1960 केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली की स्थापना।

1962 केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा (उ०प्र०) की स्थापना।

1963 राजभाषा अधिनियम, 1963 पारित *(1967 में संशोधन)*।

1966 *'आधा गाँव'*—उपन्यास *(राही मासूम रज़ा)* का प्रकाशन।

967 केन्द्रीय हिन्दी समिति, नई दिल्ली की स्थापना।

968 संसद द्वारा संकल्प *(resolution)* पारित। तदनुसार त्रिभाषा सूत्र *(Three-Language Formula)* लागू। 'राग दरबारी'— उपन्यास *(श्रीलाल शुक्ल)* का प्रकाशन।

1972 *'संसद से सड़क तक'*— काव्य *(धूमिल)* का प्रकाशन।

1975 नागपुर में प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन *(10 जनवरी से 14 जनवरी तक)*; *प्रत्येक वर्ष 10 जनवरी को* 'विश्व हिन्दी दिवस' (World Hindi Day) के रूप में मनाया जाता है। राजभाषा विभाग *(गृह मंत्रालय का अधीनस्थ विभाग)* की स्थापना। *'साये में धूप'*— हिन्दी ग़ज़ल संग्रह *(दुष्यन्त कुमार)* का प्रकाशन।

1976 भारत सरकार द्वारा राजभाषा नियम पारित (यथासंशोधित, 1987) जिनमें प्रधान राजभाषा हिन्दी एवं सहराजभाषा अंग्रेजी व अन्य प्रादेशिक भाषाओं के प्रयोग हेतु नियम दिए गए हैं।

1977 संयुक्त राष्ट्र संघ *(UNO)* में हिन्दी में पहली बार *अटल बिहारी बाजपेयी* ने भाषण दिया (4 अक्तूबर)।

1979 संघ लोक सेवा आयोग *(UPSC)* द्वारा आयोजित किए जाने वाले सिविल सेवा *(Civil Services)* परीक्षा में माध्यम के रूप में अभ्यर्थियों को अंग्रेजी भाषा के स्थान पर 8वीं अनुसूची में दर्ज भाषाओं *(जिनमें एक भाषा हिन्दी भी है)* में से किसी एक भाषा में उत्तर देने का विकल्प मिला। *(नोट : इससे पूर्व परीक्षा का माध्यम सिर्फ अंग्रेजी था।)*

1982 'जनवादी लेखक संघ' *(जलेस)*, नई दिल्ली की स्थापना।

1985 'जन संस्कृति मंच' *(जसम)*, नई दिल्ली की स्थापना।

1986 'हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास' *(राम स्वरूप चतुर्वेदी)* का प्रकाशन।

1996 हिन्दी के प्रथम समांतर कोश / थिसॉरस *(Thesaurus)*— 'समांतर कोश'— *(संपादक दंपती : अरविंद कुमार व कुसुम कुमार)* का प्रकाशन। 'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास' *(बच्चन सिंह)* का प्रकाशन।

1997 हिन्दी के प्रथम अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय —महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा *(महाराष्ट्र)*— की स्थापना।

2003 92वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2003 के द्वारा संविधान की 8वीं अनुसूची में हिन्दी की एक बोली— मैथिली— को स्थान दिया गया। मैथिली, हिन्दी क्षेत्र की बोलियों में से 8वीं अनुसूची में स्थान पाने वाली पहली बोली है।

2007 न्यूयार्क *(अमेरिका)* में आठवें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन *(13 जुलाई से 15 जुलाई तक)*।

2012 जोहान्सबर्ग *(दक्षिण अफ्रीका)* में नवें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन *(22 सितम्बर से 24 सितम्बर तक)*।

हिन्दी में सर्वप्रथम

अपभ्रंश के प्रथम महाकवि	स्वयंभू
अपभ्रंश का प्रथम कडवक बद्ध *(7 चौपाई के बाद 1 दोहा का क्रम)* रचना	पउम चरिउ *(स्वयंभू)*
अपभ्रंश के प्रथम ऐतिहासिक वैयाकरण	हेमचन्द्र
हिन्दी के प्रथम कवि	सरहपा *(9वीं सदी)*
हिन्दी में चौपाई-दोहा का सर्वप्रथम प्रयोग	सरहपा
हिन्दी की प्रथम रचना	श्रावकाचार *(देवसेन कृत)*
हिन्दी साहित्य की प्रथम रचना	पृथ्वीराज रासो *(चंदबरदाई)*
हिन्दी साहित्य का प्रथम महाकाव्य	पृथ्वी राज रासो
हिन्दी काव्य में बारहमासा वर्णन का प्रथम प्रयोग	बीसलदेव रासो *(नरपति नाल्ह)*
किसी भारतीय भाषा में रचित इस्लाम धर्मावलबी कवि की प्रथम रचना	संदेश रासक *(अब्दुर रहमान)*
अवहट्ट का सर्वप्रथम प्रयोग	विद्यापति ने 'कीर्तिलता' में
हिन्दी के सर्वप्रथम गीतकार	विद्यापति

मुकरियों की शुरुआत	अमीर खुसरो ने
भक्ति के प्रवर्तक	रामानुज आचार्य
हिन्दी के प्रथम सूफी कवि	असाइत
सूफी प्रेमाख्यान का प्रथम काव्य	हंसावली *(असाइत)*
हिन्दी का प्रथम बड़ा महाकाव्य	पद्मावत *(जायसी)*
हिन्दी का प्रथम वक्रोक्ति कथात्मक महाकाव्य	पद्मावत
हिन्दी की आदि कवयित्री	मीराबाई
कृष्ण-भक्ति काव्य का सबसे प्रसिद्ध काव्य	सूरसागर *(सूरदास)*
राम-भक्ति काव्य का सबसे प्रसिद्ध काव्य	रामचरित मानस *(तुलसीदास)*
भक्ति काल को 'हिन्दी काव्य का स्वर्ण युग' घोषित करनेवाला प्रथम व्यक्ति	जार्ज ग्रियर्सन
सतसई परंपरा का आरंभ	तुलसी सतसई *(कुछ कृपाराम की 'हिततरंगिनी को मानते हैं)*
रीति काव्य का सर्वप्रथम ग्रंथ	हिततरंगिनी (कृपाराम)
खड़ी बोली में लिखित सर्वप्रथम काव्य ग्रंथ	श्रीधर पाठक द्वारा अनूदित 'एकांतवासी योगी'
खड़ी बोली के प्रथम स्वच्छंदतावादी कवि	श्रीधर पाठक
'स्वच्छंदतावाद' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग	श्लेगर *(जर्मन आलोचक)*, मुकुटधर पाण्डेय *(हिन्दी में)*
खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य	प्रिय प्रवास *(हरिऔध)*
गीति काव्य शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग	लोचन प्रसाद पाण्डेय ने 'कुसुमन माला' की भूमिका में
छायावाद की प्रथम कृति	'झरना' *(1918 ई०)* प्रसाद
शुक्लानुसार छायावाद का प्रथम व प्रतिनिधि कवि	पंत
मुक्त छंद का प्रथम प्रयोगकर्ता	निराला *('जुही की कली' में)*
निराला की प्रथम कविता	जुही की कली *(1916 ई०)*
निराला की प्रथम काव्य कृति	जुही की कली *(1918 ई०)*
प्रसाद की प्रथम काव्य कृति	'उर्वशी' *(1909 ई०)*
प्रसाद की प्रथम छायावादी काव्य कृति	'झरना' *(1918 ई०)*
पंत की प्रथम कविता	गिरजे का घण्टा *(1916 ई०)*
पंत की प्रथम छायावादी काव्यकृति	'उच्छवास' *(1918 ई०)*
महादेवी की प्रथम काव्य कृति	'नीहार' *(1930 ई०)*
'प्रयोगवाद' शब्द का प्रथम प्रयोग	नंद दुलारे वाजपेयी
'नयी कविता' नाम दिया	'अज्ञेय' ने
'अज्ञेय' की प्रथम काव्य कृति	भग्नदूत *(1933 ई०)*
हिन्दी की प्रथम दलित रचना	'अछूत की शिकायत', *रचनाकार*–पटना (बिहार) के बासी हीरा डोम, प्रकाशन–'सरस्वती' पत्रिका के सितम्बर, 1914 अंक में
प्रेमचंद का प्रथम उपन्यास	प्रेमा अर्थात् दो सखियों का विवाह, *(1907 ई०) (हमखुर्मा व हम सवाब का हिन्दी रूपान्तर)*
हिन्दी का प्रथम उपन्यास	परीक्षा गुरु *(लाला श्री निवास दास)*
प्रेमचंद का मूल रूप से हिन्दी में लिखित प्रथम उपन्यास	कायाकल्प *(1926 ई०)*
जैनेन्द्र का प्रथम उपन्यास	परख *(1929 ई०)*
इलाचंद्र जोशी का प्रथम उपन्यास	घृणामयी *(1929 ई०)*
भगवतीचरण वर्मा का प्रथम उपन्यास	चित्रलेखा *(1934 ई०)*
अज्ञेय का प्रथम उपन्यास	शेखर एक जीवनी *(1941 ई०)*
रेणु का प्रथम उपन्यास	मैला आँचल *(1954 ई०)*
निर्मल वर्मा का प्रथम उपन्यास	वे दिन *(1964 ई०)*
हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी	इंदुमती *(किशोरी लाल)*
हिन्दी की प्रथम कहानी लेखिका	बंग महिला *(राजेन्द्र बाला घोष)*
प्रसाद की प्रथम कहानी	ग्राम *(1911 ई०)*
प्रेमचंद की प्रथम कहानी	पंच परमेश्वर *(1916 ई०)*
अज्ञेय का प्रथम कहानी संग्रह	विपथगा *(1937 ई०)*
'नयी कहानी' की प्रथम कृति	परिंदे *(निर्मल वर्मा)*
निर्मल वर्मा का प्रथम कहानी संग्रह	परिंदे *(1960 ई०)*
कमलेश्वर का प्रथम कहानी संग्रह	राजा निरबंसिया *(1957 ई०)*
हिन्दी का प्रथम मौलिक नाटक	नहुष *(गोपालचंद्र)*
हिन्दी का प्रथम अभिनीत नाटक	जानकी मंगल *(शीतला प्रसाद त्रिपाठी)*
प्रसाद का प्रथम ऐतिहासिक नाटक	राज्यश्री *(1915 ई०)*
हिन्दी का प्रथम एकांकी	एक घूँट *(प्रसाद)*
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की पहली सैद्धांतिक आलोचनात्मक कृति	काव्य में रहस्यवाद
रस-विवेचन को पहली बार मनोवैज्ञानिक आधार प्रदान किया	रामचन्द्र शुक्ल ने
हिन्दी में साधारणीकरण के संबंध में पहला चिंतन (साधारणीकरण का प्रथम प्रयोग कर्ता–भट्टनायक)	रामचन्द्र शुक्ल
पद्य में रचित हिन्दी की प्रथम आत्मकथा	अर्द्धकथानक *(1641 ई० बनारसीदास)*
गद्य में रचित हिन्दी की प्रथम आत्मकथा	स्वचरित आत्मचरित *(1879 ई., दयानंद सरस्वती)*
हिन्दी में प्रथम जीवनी	भक्त माल *(1585 ई०, नाभादास)*
हिन्दी में प्रथम संस्मरण	हरिऔधजी का संस्मरण *(बालमुकुन्द गुप्त)*
हिन्दी में प्रथम रेखाचित्र	पद्म-पराग *(1929 ई., पद्म सिंह शर्मा)*
हिन्दी में प्रथम यात्रा-वृतान्त	लंदन यात्रा *(1883 ई०, श्रीमती हरदेवी)*
हिन्दी में प्रथम रिपोर्ताज	लक्ष्मीपुरा *(1938 ई. शिवदान सिंह चौहान)*
हिन्दी गद्य-काव्य की प्रथम रचना	साधना *(रायकृष्ण दास)*
हिन्दी साहित्येतिहास का प्रथम ग्रंथ	इस्तवार द ला लितरेच्यूर ऐन्दुई ऐ ऐन्दुस्तानी *(गाँर्सा-द-तासी)*
हिन्दी साहित्येतिहास का हिन्दी भाषा में लिखा जानेवाला प्रथम ग्रथ	शिवसिंह सरोज *(शिव सिंह सेंगर)*
हिन्दी साहित्येतिहास का प्रथम वास्तविक ग्रंथ	द माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर आफ हिन्दुस्तान *(जार्ज ग्रियर्सन)*
हिन्दी साहित्य के कालविभाजन व नामकरण का प्रथम प्रयास करनेवाला	जार्ज ग्रियर्सन
हिन्दी साहित्येतिहास का प्रथम व्यवस्थित ग्रंथ	हिन्दी साहित्य का इतिहास *(रामचन्द्र शुक्ल)*
परंपरा की दृष्टि से रचित हिन्दी साहित्येतिहास का प्रथम ग्रंथ	हिन्दी साहित्य की भूमिका *(हजारी प्रसाद द्विवेदी)*
साहित्येतिहास का प्रथम मार्क्सवादी ग्रंथकार	राम विलास शर्मा
खड़ी बोली (पद्य) का प्रथम प्रयोगकर्त्ता	अमीर खुसरो
खड़ी बोली गद्य की प्रथम रचना	चंद छंद बरनन की महिमा *(गंग कवि)*

खड़ी बोली में साहित्यिक स्वरूप का सर्वप्रथम प्रयोग किया	राम प्रसाद निरंजनी ने 'योगभाषा वशिष्ठ' में
खड़ी बोली काव्य रचना के पक्ष में आंदोलन चलाने वाले इतिहास-पुरुष	अयोध्या प्रसाद खत्री
भारतीय द्वारा देशी भाषा में प्रकाशित प्रथम पत्र	संवाद कौमुदी *(1821 ई०, सं. : राजा राम मोहन राय)*
प्रथम हिन्दी पत्र	उदंत मार्तण्ड *(30— मई, 1826 ई०)*
प्रथम हिन्दी दैनिक	समाचार सुधा वर्षण *(1854 ई०)*
प्रथम हिन्दी वेबसाइट	वेबदुनिया *(1999 ई०)*
हिन्दी की प्रथम लघु पत्रिका	नये पत्ते *(लक्ष्मी कांत वर्मा)*
हिन्दी में प्रकाशित प्रथम ग्रंथावली	भारतेन्दु ग्रंथावली *(खड्ग विलास प्रेस, पटना)*
हिन्दी के लिए प्रथम साहित्य अकादमी पुरस्कार	हिमतरंगिनी *(माखनलाल चतुर्वेदी, 1954 ई० में)*
ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित प्रथम हिन्दी साहित्यकार	पंत *(चिदंबरा, 1968 ई०)*
ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित प्रथम हिन्दी महिला साहित्यकार	महादेवी वर्मा *(यामा, 1982 ई०)*
प्रथम व्यास सम्मान	भारत के भाषा-परिवार और हिन्दी *(डॉ० राम विलास शर्मा, 1991)*
प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन	नागपुर *(1975 ई०)*
एम० ए० (हिन्दी) का सर्वप्रथम शिक्षण प्रारंभ हुआ	काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में *(1921 ई० में)*
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रथम हिन्दी विभागाध्यक्ष	श्यामसुंदर दास
साहित्य अकादमी का प्रथम अध्यक्ष	पं० जवाहरलाल नेहरु
हिन्दी साहित्य परिषद् का प्रथम अध्यक्ष	पुरुषोत्तम दास टंडन
संयुक्त राष्ट्र संघ *(UNO)* में हिन्दी में भाषण देने वाला प्रथम व्यक्ति	अटल बिहारी बाजपेयी *(1977 ई.)*
हिन्दी भाषा का प्रथम वैज्ञानिक इतिहास	'हिन्दी भाषा का इतिहास' *(1933 ई., धीरेन्द्र वर्मा)*
विश्व का प्रथम व्याकरण-ग्रंथ	'अष्टाध्यायी' *(4थी सदी ई. पू., पाणिनी)*
हिन्दी का प्रथम वैयाकरण	जोहन जोशुआ केटलेर *[हालैण्ड निवासी केटलेर डच ईस्ट इंडिया कंपनी के एलची (राजदूत) के रूप में भारत में दो दशक (1696–1716) तक रहे; 'हिन्दुस्तानी ग्रामर' (1698 ई., डच भाषा में)]*
हिन्दी भाषा में हिन्दी का व्याकरण लिखने वाला प्रथम वैयाकरण	पादरी एम.टी. आदम *['हिन्दी भाषा का व्याकरण' (1827 ई., हिन्दी भाषा में, कलकत्ता से प्रकाशित)]*
हिन्दी का प्रथम भारतीय वैयाकरण	पं. श्रीलाल *(बिहार निवासी; 'भाषा चन्द्रोदय', 1855 ई.)*
हिन्दी के दो सर्वाधिक प्रसिद्ध वैयाकरण	पं. कामता प्रसाद गुरु *('हिन्दी व्याकरण', 1921 ई.; नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से प्रकाशित)* एवं पं. किशोरी दास बाजपेयी *('हिन्दी शब्दानुशासन', 1958 ई.; नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से प्रकाशित)*
विश्व का प्रथम कोशकार/शब्दकोशकार	महर्षि यास्क *('निरुक्त', 5वीं, सदी ई.पू.)*
हिन्दी के प्रथम कोशकार/शब्दकोशकार	अमीर खुसरो *('खलिक-ए-बारी'— द्विभाषी कोश / फारसी-हिन्दवी कोश)*
हिन्दी भाषा में हिन्दी का कोश/शब्दकोश संपादित करने वाला प्रथम कोशकार/ शब्दाकोशकार	पादरी एम.टी.आदम *('हिन्दी कोश', 1829 ई., कलकत्ता से प्रकाशित)*
हिन्दी का प्रथम मौलिक कोश/शब्दकोश	'हिन्दी शब्द सागर' *(1929 ई.; नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से प्रकाशित, संपादक त्रयी: श्याम सुंदर दास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल व आचार्य रामचंद्र वर्मा)*
हिन्दी का प्रथम समांतर कोश/थिसॉरस *(Thesauras)*	'समांतर कोश' *(1996 ई.; नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक दंपती: अरविन्द कुमार व कुसुम कुमार)*
हिन्दी का प्रथम भाषा सर्वेक्षक	अमीर खुसरो *(1317 ई. में भाषा सर्वेक्षण)*
हिन्दी का सर्वाधिक प्रसिद्ध भाषा सर्वेक्षक	जॉर्ज ए. ग्रियर्सन *(1894 ई. में भाषा सर्वेक्षण का कार्य आरंभ एवं 1927 ई. में भाषा सर्वेक्षण का कार्य संपन्न, संपादित ग्रंथ का नाम : 'ए लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' (भारतीय भाषा सर्वेक्षण)*
छपाई के लिए नागरी टाइपों का निर्माण करने वाला प्रथम व्यक्ति	चार्ल्स विल्किन्स *(1750–1836 ई.)*
हिन्दी माध्यम से सम्पूर्ण शिक्षा देने वाली देश की पहली संस्था	गुरुकुल काँगड़ी, हरिद्वार
हिन्दी का प्रथम अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय	महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा *(महाराष्ट्र)*
हिन्दी की प्रथम शोध कृति/हिन्दी साहित्य से संबद्ध प्रथम शोध कृति	डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल कृत *'निर्गुण स्कूल ऑफ हिन्दी पोएट्री' (अंग्रेजी भाषा में, 1934 ई., हिन्दी में अनुवाद—'हिन्दी काव्य में निर्गुण संप्रदाय' नाम से)*
हिन्दी भाषा से संबद्ध प्रथम शोध कृति	डॉ. धीरेन्द्र वर्मा कृत *'ला लाँग ब्रज' (फ्रेंच भाषा में, 1935 ई., हिन्दी में अनुवाद—'ब्रजभाषा' नाम से)*
हिन्दी माध्यम में प्रस्तुत हिन्दी की प्रथम शोध कृति	फ़ादर कामिल बुल्के कृत *'रामकथा : उत्पत्ति और विकास' (1949 ई.)*

पुरस्कार

साहित्य अकादमी (हिन्दी के लिए)

रचना	साहित्यकार	वर्ष
हिमतरंगिनी *(काव्य)*	माखनलाल चतुर्वेदी	1955 ई०
पद्मावत संजीवनी व्याख्या *(टीका/ व्याख्या)*	वासुदेवशरण अग्रवाल	1956 ई०
बुद्ध धर्म दर्शन	आचार्य नरेंद्र देव	1957 ई०
मध्य एशिया का इतिहास *(इ०)*	राहुल सांकृत्यायन	1958 ई०
संस्कृति के चार अध्याय *(नि०)*	'दिनकर'	1959 ई०

रचना	साहित्यकार	वर्ष
कला और बूढ़ा चाँद *(काव्य)*	पंत	1960 ई०
भूले-बिसरे चित्र *(उपन्यास)*	भगवतीचरण वर्मा	1961 ई०
कलम का सिपाही *(जीवनी)*	अमृतराय	1963 ई०
आँगन के पार द्वार *(काव्य)*	'अज्ञेय'	1964 ई०
रस-सिद्धांत *(समीक्षा)*	नगेंद्र	1965 ई०
मुक्तिबोध *(उपन्यास)*	जैनेंद्र	1966 ई०
अमृत और विष *(उपन्यास)*	अमृतलाल नागर	1967 ई०
दो चट्टानें *(काव्य)*	हरिवंशराय 'बच्चन'	1968 ई०
राग दरबारी *(उपन्यास)*	श्रीलाल शुक्ल	1969 ई०
निराला की साहित्य साधना *(आ०)*	रामविलास शर्मा	1970 ई०
कविता के नये प्रतिमान *(आ०)*	डॉ० नामवर सिंह	1971 ई०
बुनी हुई रस्सी *(काव्य)*	भवानीप्रसाद मिश्र	1972 ई०
आलोक पर्व *(निबंध)*	हजारीप्रसाद द्विवेदी	1973 ई०
मिट्टी की बारात *(काव्य)*	शिवमंगल सिंह 'सुमन'	1974 ई०
तमस *(उपन्यास)*	भीष्म साहनी	1975 ई०
मेरी तेरी उसकी बात *(उपन्यास)*	यशपाल	1976 ई०
चुका भी नहीं हूँ मैं *(काव्य)*	शमशेर	1977 ई०
उतना बस सूरज हूँ *(काव्य)*	भारतभूषण अग्रवाल	1978 ई०
कल सुनना मुझे *(काव्य)*	'धूमिल'	1979 ई०
जिंदगीनामा *(उपन्यास)*	कृष्णा सोबती	1980 ई०
ताप के ताये हुए दिन *(काव्य)*	त्रिलोचन शास्त्री	1981 ई०
विकलांग श्रद्धा का दौर (व्यंग्य)	हरिशंकर परसाई	1982 ई०
खूँटियों पर टँगे लोग *(काव्य)*	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना	1983 ई०
लोग भूल गए हैं *(काव्य)*	रघुवीर सहाय	1984 ई०
कव्वे और काला पानी *(क०सं०)*	निर्मल वर्मा	1985 ई०
अपूर्व *(काव्य)*	केदारनाथ अग्रवाल	1986 ई०
मगध *(काव्य)*	श्रीकांत वर्मा	1987 ई०
अरण्य *(काव्य)*	नरेश मेहता	1988 ई०
अकाल में सारस *(काव्य)*	केदारनाथ सिंह	1989 ई०
नीला चाँद *(उपन्यास)*	शिवप्रसाद सिंह	1990 ई०
मैं वक्त के हूँ सामने *(काव्य)*	गिरिजाकुमार माथुर	1991 ई०
ढाई घर *(उपन्यास)*	गिरिराज किशोर	1992 ई०
अर्द्धनारीश्वर *(उपन्यास)*	विष्णु प्रभाकर	1993 ई०
कहीं नहीं वहीं *(काव्य)*	अशोक वाजपेयी	1994 ई०
कोई दूसरा नहीं *(काव्य)*	कुँवर नारायण	1995 ई०
मुझे चाँद चाहिए *(उपन्यास)*	सुरेंद्र वर्मा	1996 ई०
अनुभव के आकाश में चाँद *(काव्य)*	लीलाधर जगूड़ी	1997 ई०
नये इलाके में *(काव्य)*	अरुण कमल	1998 ई०
दीवार में एक खिड़की रहती थी *(उपन्यास)*	विनोद कुमार शुक्ल	1999 ई०
हम जो देखते हैं *(काव्य)*	मंगलेश डबराल	2000 ई०
कलिकथा: वाया बाईपास *(उपन्यास)*	अलका सरावगी	2001 ई०
दो पंक्तियों के बीच *(काव्य)*	राजेश जोशी	2002 ई०
कितने पाकिस्तान *(उपन्यास)*	कमलेश्वर	2003 ई०
दुष्चक्र में स्रष्टा *(काव्य)*	वीरेन डंगवाल	2004 ई०
क्याप *(उपन्यास)*	मनोहर श्याम जोशी	2005 ई०
संशयात्मा *(काव्य)*	ज्ञानेंद्रपति	2006 ई०
इन्हीं हथियारों से *(उपन्यास)*	अमरकांत	2007 ई०
कोहरे में कैद रंग *(उपन्यास)*	गोविंद मिश्र	2008 ई०
हवा में हस्ताक्षर *(काव्य)*	कैलाश बाजपेयी	2009 ई०
मोहन दास *(कहानी)*	उदय प्रकाश	2010 ई०
रेहन पर रग्घू *(उपन्यास)*	काशीनाथ सिंह	2011 ई०
पत्थर फेंक रहा हूँ *(काव्य)*	चन्द्रकांत देवताले	2012 ई०
मिलजुल मन (उपन्यास)	मृदुला गर्ग	2013 ई०
विनायक *(उपन्यास)*	रमेश चंद्र शाह	2014 ई०
आग की हंसी *(काव्य)*	राम दरश मिश्र	2015 ई०

व्यास सम्मान

(हिन्दी की उत्कृष्ट साहित्यिक कृति हेतु के.के. बिड़ला फाउंडेशन द्वारा दिया जानेवाला सम्मान)

रचना	साहित्यकार	वर्ष
भारत के भाषा परिवार और हिन्दी	डॉ० रामविलास शर्मा	1991 ई०
नीला चाँद *(उपन्यास)*	शिवप्रसाद सिंह	1992 ई०
मैं वक्त के हूँ सामने *(काव्य)*	गिरिजा कुमार माथुर	1993 ई०
सपना अभी भी *(काव्य)*	धर्मवीर भारती	1994 ई०
आत्मजयी *(काव्य)*	कुँवर नारायण	1995 ई०
हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास *(साहित्येतिहास)*	रामस्वरूप चतुर्वेदी	1996 ई०
उत्तर कबीर व अन्य कविताएँ *(काव्य)*	केदारनाथ सिंह	1997 ई०
पाँच आंगनों वाला घर *(उपन्यास)*	गोविंद मिश्र	1998 ई०
विश्रामपुर का संत *(उपन्यास)*	श्री लाल शुक्ल	1999 ई०
पहला गिरमिटिया *(उपन्यास)*	गिरिराज किशोर	2000 ई०
आलोचना का पक्ष *(आलोचना)*	रमेश चंद्र शाह	2001 ई०
पृथ्वी का कृष्ण पक्ष *(काव्य)*	कैलाश वाजपेयी	2002 ई०
आवां *(उपन्यास)*	चित्रा मुद्गल	2003 ई०
कठगुलाब *(उपन्यास)*	मृदुला गर्ग	2004 ई०
कथा सतीसर *(उपन्यास)*	चंद्रकांता	2005 ई०
कवित का अर्थात् *(आलोचना)*	परमानंद श्रीवास्तव	2006 ई०
समय-सरगम *(उपन्यास)*	कृष्णा सोबती	2007 ई०
एक कहानी यह भी *(आत्मकथा)*	मन्नू भंडारी	2008 ई०
इन्हीं हथियारों से *(उपन्यास)*	अमरकांत	2009 ई०
फिर भी कुछ रह जाएगा *(काव्य)*	विश्वनाथ तिवारी	2010 ई०
आम के पत्ते *(काव्य)*	राम दरश मिश्र	2011 ई०
न भूतो न भविष्यति *(उपन्यास)*	नरेन्द्र कोहली	2012 ई०
व्योमकेश दरवेश (जीवनी)	विश्वनाथ त्रिपाठी	2013 ई०
प्रेमचंद की कहानियों का कालक्रमानुसार अध्ययन *(आलोचना)*	कमल किशोर गोयनका	2014 ई.
क्षमा *(काव्य)*	सुनीता जैन	2015 ई.

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हिन्दी साहित्यकार

रचना	साहित्यकार	वर्ष (क्रम)
चिदंबरा	पंत	1968 ई० (4था)
उर्वशी	'दिनकर'	1972 ई० (8वां)
कितनी नावों में कितनी बार	'अज्ञेय'	1978 ई० (14वां)
यामा	महादेवी वर्मा	1982 ई० (18वां)
सम्पूर्ण साहित्य	नरेश मेहता	1992 ई० (28वां)
सम्पूर्ण साहित्य	निर्मल वर्मा *(पंजाबी लेखक गुरदयाल सिंह के साथ संयुक्त रूप से)*	1999 ई० (35वां)
सम्पूर्ण साहित्य	कुँवर नारायण	2005 ई० (41वां)
सम्पूर्ण साहित्य	अमरकांत एवं श्रीलाल शुक्ल	2009 ई० (45वां)
सम्पूर्ण साहित्य	केदारनाथ सिंह	2013 ई० (49वां)

नोट : *वर्ष 1984 ई० के बाद यह पुरस्कार लेखक के समग्र योगदान पर दिया जाने लगा है।*

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. हिन्दी साहित्य के आरंभिक काल को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने क्या कहा है?
(a) आदि काल (b) चारण काल
(c) वीरगाथा काल (d) सिद्ध-सामंत काल

2. वीरगाथा काल का कवि नहीं है —
(a) चन्दबरदाई (b) नामदेव (c) जगनिक (d) मधुकर

3. वीरगाथा काल के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं—
(a) चन्दबरदाई (b) जगनिक
(c) दलपति विजय (d) विद्यापति

4. 'पृथ्वीराज रासो' के रचनाकार हैं—
(a) जयदेव (b) चन्दबरदाई (c) जगनिक (d) विद्यापति

5. कबीरदास की भाषा थी—
(a) ब्रज (b) कन्नौजी (c) सधुक्कड़ी (d) खड़ी बोली
(रेलवे, 1997)

6. कटकटान कपि कुंजर भारी।
दुहु भुजदंड तमकि महिमारी।।
डोलत धरनि सभापद खसे।
चले धाजि भय मारूत ग्रसे।।
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं—
(a) तुलसीदास (b) जायसी
(c) देव (d) नूर मोहम्मद *(रेलवे, 1997)*

7. नयन जो देखा कमल-सा निरमल नीर सरीर।
हंसत जो देखा हंस भा दसन ज्योति नगहीर।।
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं —
(a) तुलसीदास (b) जयशंकर प्रसाद
(c) जायसी (d) कबीरदास *(रेलवे, 1997)*

8. 'शिवा बावनी' के रचनाकार हैं —
(a) पद्माकर (b) भूषण (c) केशवदास (d) जगनिक
(रेलवे, 1997)

9. नर की और नल नीर की गति एके करि जोय।
जेतो नीचो हे चले तेतो ऊँचो होय।।
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं—
(a) तुलसीदास (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) बिहारीलाल (d) केशवदास *(रेलवे, 1997)*

10. सखि वे मुझसे कह कर जाते ।
प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं—
(a) अज्ञेय (b) मैथिली शरण गुप्त
(c) हरिऔध (d) जयशंकर प्रसाद
(रेलवे, 1997)

11. हिन्दी कविता को छंदों की परिधि से मुक्त करानेवाले थे—
(a) सुमित्रानंदन पंत (b) जयशंकर प्रसाद
(c) महादेवी वर्मा (d) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
(रेलवे, 1997)

12. 'तितली' किसकी रचना है ?
(a) जयशंकर प्रसाद (b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(c) श्याम सुन्दर दास (d) आचार्य महावीर प्र० द्विवेदी
(रेलवे, 1997)

13. 'अतीत के चलचित्र' के रचयिता हैं—
(a) जयशंकर प्रसाद (b) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
(c) महादेवी वर्मा (d) सुमित्रानंदन पंत
(रेलवे, 1997)

14. 'पल्लव' के रचयिता हैं—
(a) सुमित्रानंदन पंत (b) निराला
(c) जयशंकर प्रसाद (d) महादेवी वर्मा *(रेलवे,1997)*

15. 'चिन्तामणि' के रचयिता हैं—
(a) जयशंकर प्रसाद (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) हरिऔध *(रेलवे,1997)*

16. 'जनमेजय का नागयज्ञ' किसकी कृति हैं ?
(a) सेठ गोविन्द दास (b) जयशंकर प्रसाद
(c) लक्ष्मी नारायण लाल (d) गोविन्द वल्लभ पंत
(रेलवे,1997)

17. हम दीवानों की क्या हस्ती, हैं आज यहाँ कल वहाँ चले।
मस्ती का आलम साथ चला, हम धूल उड़ाते जहाँ चले।।
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं—
(a) सियारामशरण गुप्त (b) भगवती चरण वर्मा
(c) सुभद्रा कुमारी चौहान (d) रामधारी सिंह 'दिनकर'
(रेलवे, 1997)

18. निम्नलिखित में सबसे पहले अपनी आत्मकथा हिन्दी में किसने लिखी ?
(a) श्याम सुन्दर दास (b) सेठ गोविन्द दास
(c) जवाहर लाल नेहरू (d) राजेन्द्र प्रसाद
(ग्राम पंचायत परीक्षा, 1998)

19. अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।
उपर्युक्त पंक्तियाँ किस काव्य की हैं ?
(a) कामायनी (b) साकेत (c) यशोधरा (d) आँसू
(ग्राम पंचायत परीक्षा, 1998)

20. हिमालय के आँगन में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार,
उषा ने हँस अभिवादन किया और पहनाया हीरे का हार।
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं —
(a) रामधारी सिंह 'दिनकर' (b) माखन लाल चतुर्वेदी
(c) जयशंकर प्रसाद (d) मैथिली शरण गुप्त
(ग्राम पंचायत परीक्षा, 1998)

21. आंचलिक रचनाएँ किससे संबंधित होती हैं ?
(a) देश विशेष से (b) लोक विशेष से
(c) क्षेत्र विशेष से (d) जाति विशेष से
(बी० एड०, 1999)

22. निर्गुण भक्ति काव्य का प्रमुख कवि है ?
(a) सूरदास (b) तुलसीदास (c) कबीरदास (d) केशवदास
(बी०एड०, 2000)

23. 'श्रद्धा' किस कृति की नायिका है ?
(a) कामायनी (b) कुरुक्षेत्र (c) रामायण (d) साकेत
(बी० एड०, 2000)

24. तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियहिं न पान।
प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं—
(a) रहीम (b) कबीरदास (c) रसखान (d) बिहारी
(रेलवे, 2000)

25. तरनि-तनूजा-तट तमाल तरुवर बहु छाए।
प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं—
(a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (b) रामधारी सिंह 'दिनकर'
(c) माखनलाल चतुर्वेदी (d) राम नरेश त्रिपाठी
(रेलवे, 2000)

26. बुँदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं—
(a) सत्यनारायण पाण्डेय (b) मैथिलीशरण गुप्त
(c) सुभद्रा कुमारी चौहान (d) महादेवी वर्मा
(बी०एड०, 2000)

मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ में देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढाने जिस पथ जावें वीर अनेक ।।
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं—
(a) सत्यनारायण पाण्डेय (b) सोहन लाल द्विवेदी
(c) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (d) माखन लाल चतुर्वेदी
(बी०एड०, 2000)

दरवाजे से चंडालगढ़ी की तरफ नजर दौड़ाने पर एक अद्‌भुत दृश्य दिखाई देता था।— इस पंक्ति के रचनाकार हैं :
(a) राहुल सांकृत्यायन (b) रामचन्द्र शुक्ल
(c) जवाहर लाल नेहरू (d) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद
(रेलवे, 2000)

9. भूषण की कविता का प्रधान स्वर है —
(a) व्यंग्यात्मक (b) प्रशस्तिपरक
(c) शृंगारिक (d) कारुणिक
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

30. अपभ्रंश में कृष्ण काव्य के प्रणेता हैं—
(a) पुष्पदन्त (b) शालिभद्र सूरि
(c) स्वयंभू (d) हरिभद्र सूरि
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

31. प्रथम सूफी प्रेमाख्यानक काव्य के रचयिता हैं—
(a) नूर मुहम्मद (b) जायसी
(c) मुल्ला दाऊद (d) कुतबन
(व्याख्याता परीक्षा , 2001)

32. हिन्दी के प्रथम गद्यकार हैं—
(a) राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द'
(b) लल्लूलाल
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (d) बालकृष्ण भट्ट
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

33. हिन्दी के सर्वप्रथम प्रकाशित पत्र का नाम है—
(a) सम्मेलन पत्रिका (b) उतण्ड मार्तण्ड
(c) सरस्वती (d) नागरी प्रचारिणी पत्रिका
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

34. छायावाद के प्रवर्तक का नाम है —
(a) सुमित्रानंदन पंत (b) श्रीधर पाठक
(c) मुकुटधर पांडेय (d) जयशंकर प्रसाद
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

35. 'प्रगतिवाद उपयोगितावाद का दूसरा नाम है।'— यह कथन किसका है ?
(a) राम विलास शर्मा (b) प्रेमचंद
(c) नन्द दुलारे वाजपेयी (d) सुमित्रानंदन पंत
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

36. प्रेमचन्द के अधूरे उपन्यास का नाम है
(a) गबन (b) रंगभूमि (c) मंगलसूत्र (d) सेवासदन
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

37. रामधारी सिंह 'दिनकर' को भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ था—
(a) 'रश्मिरथी' पर (b) 'परशुराम की प्रतीक्षा' पर
(c) 'कुरुक्षेत्र' पर (d) 'उर्वशी' पर
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

38. हिन्दी साहित्य के इतिहास के सर्वप्रथम लेखक का नाम है—
(a) जार्ज ग्रियर्सन (b) शिवसिंह सेंगर
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (d) गार्सा द तासी
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

39. 'पद्मावत' किसकी रचना है ?
(a) नाभादास (b) केशवदास (c) तुलसीदास (d) जायसी
(रेलवे, 2001)

40. 'बैताल पचीसी' के रचनाकार हैं —
(a) लल्लूलाल (b) सदल मिश्र (c) नाभा दास (d) सूरति मिश्र
(रेलवे, 2001)

41. 'सुहाग के नूपुर' के रचयिता हैं —
(a) निराला (b) मोहन राकेश
(c) अमृत लाल नागर (d) प्रेमचन्द
(स्टेनोग्रफर परीक्षा, 2001)

42. 'संस्कृति के चार अध्याय' किसकी रचना है ?
(a) रामधारी सिंह 'दिनकर' (b) भगवती चरण वर्मा
(c) माखनलाल चतुर्वेदी (d) सुभद्रा कुमारी चौहान
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

43. 'अशोक के फूल' (निबंध-संग्रह) के रचनाकार हैं—
(a) कुबेरनाथ राय (b) गुलाब राय
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) हजारी प्र० द्विवेदी
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

44. 'झरना' (काव्य-संग्रह) के रचयिता हैं —
(a) सोहन लाल द्विवेदी (b) महादेवी वर्मा
(c) जयशंकर प्रसाद (d) सुभद्रा कुमारी चौहान
(लेखाकार परीक्षा, 2001)

45. 'भारत भारती' (काव्य) के रचनाकार है—
(a) गोपालशरण सिंह 'नेपाली' (b) नरेश मेहता
(c) मैथिलीशरण गुप्त (d) धर्मवीर भारती
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

46. 'दोहाकोश' के रचयिता हैं —
(a) लुइपा (b) जोइन्दु (c) सरहपा (d) कण्हपा
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

47. 'प्रेमसागर' के रचनाकार हैं —
(a) सदल मिश्र (b) उसमान (c) लल्लूलाल (d) सुन्दर दास
(रेलवे, 2001)

48. 'पंच परमेश्वर' (कहानी) के लेखक हैं—
(a) रामधारी सिंह 'दिनकर' (b) प्रेमचन्द
(c) मैथिलीशरण गुप्त (d) सुमित्रानंदन पंत
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

49. 'तोड़ती पत्थर' (कविता) के कवि हैं—
(a) सुभद्रा कुमारी चौहान (b) महादेवी वर्मा
(c) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (d) माखन लाल चतुर्वेदी
(लेखाकार परीक्षा, 2001)

50. 'हार की जीत' (कहानी) के कहानीकार हैं —
(a) सुदर्शन (b) यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'
(c) कमलेश्वर (d) रांगेय राघव
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

51. 'रानी केतकी की कहानी' के रचयिता हैं—
(a) वृन्दावन लाल वर्मा (b) किशोरी लाल गोस्वामी
(c) माधव राव सप्रे (d) इंशा अल्ला खाँ
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

52. 'शिव शंभु के चिट्ठे' से संबंधित रचनाकार हैं —
(a) बाबू तोता राम (b) केशव राम भट्ट
(c) अम्बिका दत्त व्यास (d) बाल मुकुन्द गुप्त
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

53. 'रसिक प्रिया' के रचयिता हैं—
(a) मलूक दास (b) बिहारी लाल
(c) दादू दयाल (d) केशव दास *(रेलवे, 2001)*

54. 'कुटज' के रचयिता हैं—
(a) शांति प्रिय द्विवेदी (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) कुबेरनाथ राय (d) विद्या निवास मिश्र
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

55. 'आँसू' (काव्य) के रचनाकार हैं—
(a) सुमित्रानंदन पंत (b) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
(c) जयशंकर प्रसाद (d) मैथिलीशरण गुप्त
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

56. चन्दन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग—
प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं—
(a) सूरदास (b) कबीर (c) बिहारी (d) रहीम
(लेखाकार परीक्षा, 2001)

57. अमिय हलाहल, मदभरे, सेत स्याम, रतनार।
जियत, मरत, झुकि-झुकि परत जेहि चितवत इक बार॥
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं—
(a) आलम (b) रसलीन (c) बिहारी (d) मतिराम
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

58. जब-जब होय धर्म की हानी, बाढ़ै असुर अधम अभिमानी।
प्रस्तुत पंक्ति के रचनाकार हैं—
(a) रसखान (b) तुलसी (c) बिहारी (d) कबीर
(पी० सी० एस०, 2001)

59. परहित सरिस धर्म नहि भाई, परपीड़ा सम नहिं अधमाई।
प्रस्तुत पक्ति किसकी है ?
(a) रसखान (b) तुलसी (c) बिहारी (d) मीरा
(लेखाकार परीक्षा, 2001)

60. रक्त है ? या है नसों में क्षुद्र पानी,
जाँच कर तू सीस दे देकर जवानी।
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं —
(a) माखनलाल चतुर्वेदी (b) रामधारी सिंह 'दिनकर'
(c) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (d) सुभद्रा कुमारी चौहान
(व्याख्याता परीक्षा, 2001)

61. दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या सुन्दरी परी सी
धीरे-धीरे-धीरे।
प्रस्तुत पंक्तियों के रचनाकार हैं —
(a) महादेवी वर्मा (b) सुमित्रानंदन पंत
(c) रामधारी सिंह 'दिनकर' (d) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

62. साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।
इस पंक्ति के रचयिता हैं—
(a) कबीर (b) जायसी (c) मीरा (d) रसखान
(पी० सी० एस०, 2001)

63. 'अष्टछाप' के सर्वश्रेष्ठ भक्त कवि के रूप में ..... का नाम लिया जाता है।
(a) कुंभनदास (b) सूरदास
(c) परमानंद दास (d) कृष्ण दास *(रेलवे, 2002)*

64. 'राम चरित मानस' की भाषा क्या है ?
(a) भोजपुरी (b) प्राकृत (c) ब्रजभाषा (d) अवधी
(बैंक परीक्षा, 2002, बी. एड., 2007)

65. भूषण किस रस के कवि थे ?
(a) रौद्र रस (b) करुण रस (c) वीर रस (d) शृंगार रस
(बैंक परीक्षा, 2002)

66. 'हिन्दी का आदि कवि' किसे माना जाता है ?
(a) अब्दुर रहमान (b) सरहपा
(c) स्वयंभू (d) पुष्पदंत
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

67. 'राम चरित मानस' में कितने काण्ड हैं ?
(a) 4 (b) 5 (c) 7 (d) 8
(बैंक परीक्षा, 2002)

68. निम्नलिखित में कौन-सा एक व्यंग्य लेखक है ?
(a) श्याम सुन्दर दास (b) विद्या निवास मिश्र
(c) राहुल सांकृत्यायन (d) हरिशंकर परसाई
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

69. 'आपका बंटी' रचना की प्रधान समस्या को उजागर करने वाले विकल्प को चुनिए—
(a) राजनीतिक समस्या (b) मनोवैज्ञानिक समस्या
(c) शिक्षा समस्या (d) तलाक से जुड़ी बाल समस्या
(रेलवे, 2002)

70. हिन्दी पत्रिका 'कादम्बिनी' के संपादक कौन हैं ?
(a) राजेन्द्र अवस्थी (b) रमेश बक्षी
(c) राजेन्द्र यादव (d) दुर्गा प्रसाद शुक्ल
(रेलवे, 2002)

71. 'दिनकर' किस रस के कवि माने जाते हैं ?
(a) रौद्र रस (b) करुण रस (c) वीर रस (d) शृंगार रस
(बैंक परीक्षा, 2002)

72. 'निराला' को कैसा कवि माना जाता है ?
(a) अवसरवादी (b) क्रांतिकारी
(c) पलायनवादी (d) भाग्यवादी *(बैंक परीक्षा, 2002)*

73. निम्नलिखित में कौन-सा एक उपन्यास जैनेन्द्र रचित है ?
(a) पुनर्नवा (b) परख
(c) सेवासदन (d) एकदा नैमिषारण्ये
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

74. हिन्दी गद्य का जन्मदाता किसको माना जाता है ?
(a) प्रताप नारायण मिश्र (b) महावीर प्र. द्विवेदी
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (d) बालकृष्ण भट्ट
(बैंक परीक्षा, 2002)

75. कवि कालिदास की 'अभिज्ञान शाकुन्तलम' का हिन्दी अनुवाद किसने किया ?
(a) सदासुख लाल (b) गोस्वामी विट्ठलनाथ
(c) राजा शिवप्रसाद (d) राजा लक्ष्मण सिंह
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

76. किस काल को स्वर्णकाल कहा जाता है ?
(a) रीति काल (b) भक्ति काल
(c) आदि काल (d) आधुनिक काल
(बैंक परीक्षा, 2002)

77. सूरदास के गुरु कौन थे ?
(a) रामानंद (b) मध्वाचार्य
(c) रामदास (d) बल्लभाचार्य
(बैंक परीक्षा, 2002)

78. 'कामायनी' किस प्रकार का ग्रंथ है ?
(a) खण्ड काव्य (b) मुक्तक काव्य
(c) महाकाव्य (d) चम्पू काव्य
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

79. 'गागर में सागर' भरने का कार्य किस कवि ने किया है ?
(a) बिहारी (b) रसखान (c) घनानंद (d) सूरदास
(बैंक परीक्षा, 2002)

80. 'महाभोज' रचना की प्रधान समस्या को उजागर करने वाले विकल्प को चुनिए—
(a) भ्रष्टाचार की समस्या (b) नारी समस्या
(c) राजनीतिक समस्या (d) मनोवैज्ञानिक समस्या
(रेलवे, 2002)

81. 'वापसी' किस विधा में रचित है ?
(a) आत्मकथा (b) कहानी (c) संस्मरण (d) यात्रा-वृत्त
(रेलवे, 2002)

82. 'तोड़ती पत्थर' कैसी कविता है ?
(a) व्यंग्यपरक (b) उपदेशात्मक
(c) यथार्थवादी (d) आदर्शवादी
(बैंक परीक्षा, 2002)

83. फणीश्वरनाथ 'रेणु' से संबद्ध सही प्रदेश का नाम चुनिए—
(a) महाराष्ट्र (b) बिहार (c) हिमाचल (d) उत्तरांचल
(रेलवे, 2002)

84. विद्यापति की 'पदावली' की भाषा क्या है?
(a) मैथिली (b) ब्रजभाषा (c) भोजपुरी (d) मगही
(बैंक परीक्षा, 2002)

85. .....को 'उग्र' कहते हैं ?
(a) रामेश्वर लाल दूबे (b) पाण्डेय बेचन शर्मा
(c) नरेश मेहता (d) अज्ञेय *(रेलवे, 2002)*

86. बिहारी किस राजा के दरबारी कवि थे ?
(a) महाराणा प्रताप (b) शिवाजी
(c) जय सिंह (d) तेज सिंह *(बैंक परीक्षा, 2002)*

87. 'शेष कादम्बरी' के रचयिता है ?
(a) नरेश मेहता (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) बाणभट्ट (d) अलका सरावगी
(यू० जी० सी०, 2002)

88. 'राग दरबारी' (उपन्यास) के रचयिता हैं ?
(a) राही मासूम रजा (b) श्रीलाल शुक्ल
(c) हरिशंकर परसाई (d) शरद जोशी *(रेलवे, 2002)*

89. 'पूस की रात' (कहानी) के रचनाकार हैं—
(a) प्रेमचन्द (b) शिवपूजन सहाय
(c) निराला (d) प्रसाद *(रेलवे, 2002)*

90. 'ध्रुव स्वामिनी' (नाटक) के रचयिता हैं—
(a) राम कुमार वर्मा (b) राम वृक्ष बेनीपुरी
(c) जयशंकर प्रसाद (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(बैंक परीक्षा, 2002)

91. 'आत्मनिर्भरता' (निबंध) के रचनाकार हैं—
(a) महावीर प्र.द्विवेदी (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) अजित कुमार
(बैंक परीक्षा, 2002)

92. 'गंगा छवि वर्णन' (कविता) के रचनाकार हैं—
(a) जयशंकर प्रसाद (b) मैथिलीशरण गुप्त
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (d) हरिऔध *(बैंक परीक्षा, 2002)*

93. 'अनामदास का पोथा' (उपन्यास) के रचयिता हैं—
(a) माखन लाल चतुर्वेदी (b) सोहन लाल द्विवेदी
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

94. 'भिक्षुक' (कविता) के रचयिता हैं—
(a) प्रसाद (b) पंत
(c) महादेवी वर्मा (d) निराला *(बैंक परीक्षा, 2002)*

95. 'भ्रमरगीत' के रचयिता हैं—
(a) सूरदास (b) घनानन्द (c) विद्यापति (d) शिवसिंह
(बैंक परीक्षा, 2002)

96. 'ईदगाह' (कहानी) के रचनाकार हैं—
(a) प्रेमचंद (b) अज्ञेय (c) प्रसाद (d) जैनेन्द्र
(बैंक परीक्षा, 2002)

97. 'वीरों का कैसा हो वसंत' (कविता) के रचयिता हैं—
(a) केदारनाथ सिंह (b) सुभद्रा कुमारी चौहान
(c) अज्ञेय (d) धर्मवीर भारती
(बैंक परीक्षा, 2002)

98. 'संदेश रासक' के रचयिता हैं—
(a) अमीर खुसरो (b) अब्दुर रहमान
(c) रासनिधि (d) रसलीन *(यू०जी०सी०, 2002)*

99. 'साखी' के रचयिता हैं—
(a) रसखान (b) सूरदास (c) कबीरदास (d) रहीम
(बैंक परीक्षा, 2002)

100. मसि कागद छुयो नहीं कलम गही नहिं हाथ।
प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं—
(a) दादू दयाल (b) कबीरदास (c) रैदास (d) सुन्दर दास
(रेलवे, 2002)

101. लोग हैं लागि कवित्त बनावत, मोहिं तो मेरे कवित्त बनावत।
प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं—
(a) केशवदास (b) घनानन्द
(c) भिखारी दास (d) पद्माकर *(यू०जी०सी०, 2002)*

102. अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा-लीन।
अधम व्यंजना रस-विरस, उलटी कहत प्रवीन॥
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं—
(a) भिखारी दास (b) बिहारी
(c) देव (d) चिन्तामणि
(यू० जी० सी०, 2002)

103. ले चल मुझे भुलावा देकर, मेरे नाविक धीर-धीरे।
प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं—
(a) नरेन्द्र शर्मा (b) जयशंकर प्रसाद
(c) राम नरेश त्रिपाठी (d) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

104. कविता का अंतिम लक्ष्य जगत् के मार्मिक पक्षों का प्रत्यक्षीकरण कर उनके साथ मनुष्य हृदय का सामंजस्य स्थापन है।
उपर्युक्त कथन किसका है ?
(a) महावीर प्रसाद द्विवेदी (b) रामचन्द्र शुक्ल
(c) नगेन्द्र (d) जयशंकर प्रसाद
(यू० जी० सी०, 2002)

105. केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए॥
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं—
(a) सुमित्रानंदन पंत (b) मैथिलीशरण गुप्त
(c) हरिऔध (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(यू० जी० सी०, 2002)

106. बैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है।
यह कथन किसका है—
(a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (b) मुक्तिबोध
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(रेलवे, 2002)

107. शब्दार्थौ सहितं काव्यम्।
यह उक्ति किसकी है ?
(a) मम्मट (b) भामह (c) कुन्तक (d) चिन्तामणि
(यू० जी० सी०, 2002)

108. ढाई अक्षर प्रेम के, पढ़ै सो पंडित होय।
प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं—
(a) मीराबाई (b) कबीर दास
(c) जायसी (d) तुलसी दास
(बैंक परीक्षा, 2002)

109. 'वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे' के रचयिता हैं—
(a) जगदीश गुप्त (b) बाल मुकुन्द गुप्त
(c) मैथिली शरण गुप्त (d) सियाराम शरण गुप्त
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

110. इनमें से कौन भक्ति काल का कवि नहीं हैं—
(a) नाभा दास (b) रसखान
(c) नंद दास (d) अमीर खुसरो
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

111. बिहारी ने क्या लिखे ?
(a) पद (b) दोहे (c) चौपाई (d) कवित्त
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

112. निम्नलिखित में से कौन-सा प्रबंध काव्य है ?
(a) रामचरित मानस (b) आँसू
(c) एक कंठ विषपायी (d) बिहारी रत्नाकर
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

113. निम्नलिखित में किन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है?
(a) प्रेमचन्द (b) नामवर सिंह
(c) निराला (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

114. 'पृथ्वीराज रासो' किस काल की रचना है—
(a) आदि काल (b) रीति काल
(c) भक्ति काल (d) आधुनिक काल
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

115. निम्नलिखित में से कौन छायावादी कवि हैं ?
(a) भारत भूषण अग्रवाल (b) तुलसीदास
(c) सुमित्रानंदन पंत (d) नागार्जुन
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

116. नामवर सिंह ने अधिकांश क्या लिखा है ?
(a) कविता (b) कहानी (c) संस्मरण (d) आलोचना
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

117. 'आत्मजयी' के रचयिता हैं—
(a) श्रीकांत वर्मा (b) नरेश मेहता
(c) कुँवर नारायण (d) मुक्तिबोध
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

118. 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' (काव्य) के रचयिता हैं—
(a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (b) भवानी प्र० मिश्र
(c) गजानन माधव 'मुक्तिबोध' (d) गिरिजा कुमार माथुर
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

119. 'राम लला नहछू' के रचनाकार हैं—
(a) रत्नाकर (b) रैदास (c) तुलसीदास (d) घनानंद
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

120. 'आषाढ़ का एक दिन' (नाटक) के रचयिता हैं—
(a) सेठ गोविन्द दास (b) भीष्म साहनी
(c) मोहन राकेश (d) लक्ष्मी नारायण लाल
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

121. 'यामा' के रचयिता हैं—
(a) सुमित्रानंदन पंत (b) सुभद्रा कुमारी चौहान
(c) महादेवी वर्मा (d) मीराबाई *(बी० एड०, 2003)*

122. 'संसद से सड़क तक' (काव्य) के रचनाकार हैं—
(a) श्रीकांत वर्मा (b) सुदामा पांडेय 'धूमिल'
(c) अज्ञेय (d) रघुवीर सहाय
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

123. 'चीफ की दवात' (कहानी) के रचनाकार हैं—
(a) डॉ० देवराज (b) राजेन्द्र यादव
(c) भीष्म साहनी (d) दुष्यंत कुमार
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

124. 'सर्कस' (उपन्यास) के रचनाकार हैं—
(a) यशपाल (b) अमृत लाल नागर
(c) मन्नू भंडारी (d) संजीव
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

125. 'रंगभूमि' (उपन्यास) के रचनाकार हैं—
(a) राजेन्द्र यादव (b) रांगेय राघव
(c) प्रेमचंद (d) अमरकांत
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

126. प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि, राजत लोचन लोल।
खेलत मनसिज मीन जुग, जनु बिधु मंडल डोल॥
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं—
(a) तुलसीदास (b) दादू (c) कबीरदास (d) रहीम
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2

127. प्रभुजी तुम चंदन हम पानी।
जाकी अंग-अंग बास समानी॥
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं—
(a) रैदास (b) मलूक दास
(c) गुरु नानक (d) कबीर दास
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2(

128. जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।
प्रस्तुत पंक्ति के रचयिता हैं—
(a) सूरदास (b) मीराबाई (c) तुलसीदास (d) गिरिधर
(बी० एड०, 20

129. 'प्रेम पचीसी' (कहानी-संग्रह) के रचनाकार हैं—
(a) प्रेमचंद (b) जयशंकर प्रसाद
(c) अज्ञेय (d) यशपाल *(रेलवे, 200*

130. ज्ञानपीठ पुरस्कार किस क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य के लिए दिया जाता ?
(a) सिनेमा (b) विज्ञान
(c) समाज सेवा (d) साहित्य *(रेलवे, 200*

131. 'प्रेमसागर' के लेखक कौन हैं ?
(a) इंशा अल्ला खाँ (b) लल्लू लाल
(c) मुंशी प्रेमचन्द (d) मुंशी सदासुख लाल
(बी० एड०, 2004,

132. तुलसीदासजी ने अपनी रचनाओं में किसका वर्णन किया हैं?
(a) शिव (b) कृष्ण (c) राम (d) विष्णु
(बी० एड०, 2004)

133. 'त्यागपत्र' (उपन्यास) किसकी रचना है?
(a) प्रेमचंद (b) जैनेन्द्र कुमार
(c) अज्ञेय (d) रेणु *(रेलवे,,2004)*

134. ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया जाता है—
(a) हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु
(b) भारतीय लेखकों की आर्थिक सहायता हेतु
(c) भारतीय भाषा में साहित्यकारों के रचनात्मक लेखन हेतु
(d) इनमें से कोई नहीं *(रेलवे, 2004)*

135. ज्ञानपीठ पुरस्कार पानेवाले हिन्दी के प्रथम साहित्यकार हैं—
(a) सुमित्रानंदन पंत (b) रामधारी सिंह दिनकर
(c) अज्ञेय (d) महादेवी वर्मा *(रेलवे, 2004)*

136. 'विनयपत्रिका' के रचयिता का नाम है—
(a) सूरदास (b) कबीरदास (c) तुलसीदास (d) केशवदास
(बी० एड०, 2005)

137. 'मानस का हंस' के लेखक का नाम है—
(a) जयशंकर प्रसाद (b) प्रेमचंद
(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी (d) अमृत लाल नागर
(बी० एड०, 2005)

138. 'मजदूरी और प्रेम' (निबंध) के रचनाकार हैं—
(a) सरदार पूर्ण सिंह (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) प्रताप नारायण मिश्र (d) रामचन्द्र शुक्ल
(बी० एड०, 2005

139. 'कलम का सिपाही' क्या है ?
(a) आत्मकथा (b) रेखाचित्र (c) संस्मरण (d) जीवनी
(बी० एड० 200

140. दुःख ही जीवन की कथा रही।
क्या कहूँ आज जो नहीं कही।।
प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता का नाम है—
(a) महादेवी वर्मा (b) जयशंकर प्रसाद
(c) सुमित्रानंदन पंत (d) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
(बी० एड०, 2005)

141. हिन्दी की पहली कहानी लेखिका का नाम है—
(a) बंग महिला (b) सत्यवती
(c) चन्द्र किरन (d) चन्द्रकांता *(बी० एड०, 2005)*

142. खड़ी बोली के सर्वप्रथम लोकप्रिय कवि कौन माने जाते हैं ?
(a) रामधारी सिंह 'दिनकर' (b) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
(c) मैथिली शरण गुप्त
(d) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' *(रेलवे, 2005)*

143. फणीश्वर नाथ 'रेणु' किसके लेखक हैं ?
(a) गबन (b) गीतांजलि
(c) मैला आँचल (d) कामायनी *(रेलवे, 2005)*

144. 'गोदान' किसकी कृति है ?
(a) फणीश्वर नाथ 'रेणु' (b) प्रेमचंद
(c) अज्ञेय (d) जयशंकर प्रसाद
(रेलवे, 2005)

145. 'कस्तूरी कुंडल बसै' आत्मकथा है—
(a) शीला झुनझुनवाला की (b) मैत्रेयी पुष्पा की
(c) कुसुम अंचल की (d) गोपाल प्रसाद व्यास की
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

146. 'चरणदास चोर' किसकी नाट्य कृति है ?
(a) मुद्राराक्षस (b) बलराज पंडित
(c) हबीब तनवीर (d) नाग बोडस
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

147. भूसन बिनु न विराजई कविता वनिता मित्त। यह कथन किसका है ?
(a) तुलसीदास (b) भिखारी दास
(c) केशवदास (d) मतिराम
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

148. ज्ञानमार्गी शाखा के कवियों को किस नाम से पुकारा जाता है ?
(a) सिद्ध कवि (b) नाथपंथी कवि
(c) भक्त कवि (d) संत कवि
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

149. इन मुसलमान हरिजनन पर कोटिक हिन्दुन वारिए
यह कथन किसका है ?
(a) रसखान का (b) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का
(c) परशुराम चतुर्वेदी का
(d) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का *(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)*

150. 'अपभ्रंश का वाल्मीकि' किसे कहा जाता है ?
(a) पुष्पदंत को (b) धनपाल को
(c) शालिभद्र सूरि को (d) स्वयंभू को
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

151. चंदबरदाई किसके दरबारी कवि थे ?
(a) महाराज हम्मीर के (b) महाराज बीसल देव के
(c) महाराणा प्रताप के (d) पृथ्वीराज चौहान के
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

152. मलिक मुहम्मद जायसी को 'जायसी' कहा जाता है क्योंकि वे—
(a) जायस गोत्र में पैदा हुए थे
(b) जायस मत को मानने वाले थे
(c) जायस नामक स्थान के निवासी थे
(d) इनमें से कोई नहीं
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

153. रीतिकाल का वह कौन-सा कवि है, जो अपनी मात्र एक कृति से हिन्दी साहित्य में अमर हो गया ?
(a) रहीम (b) मतिराम (c) बिहारी (d) देव
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

154. 'कठिन काव्य का प्रेत' किस कवि को कहा जाता हैं ?
(a) सेनापति को (b) चिन्तामणि को
(c) मतिराम को (d) केशवदास को
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

155. 'द्विवेदी युग' का नामकरण किसके नाम पर हुआ है ?
(a) शांतिप्रिय द्विवेदी (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी (d) राम अवध द्विवेदी
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

156. 'हिन्दी प्रदीप' के यशस्वी संपादक का नाम है—
(a) राधा कृष्ण गोस्वामी (b) बाल कृष्ण भट्ट
(c) अम्बिका दत्त व्यास (d) लाला भगवानदीन
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

157. निम्नलिखित में कौन 'सरस्वती' पत्रिका के संपादक नहीं रहे हैं ?
(a) श्याम सुन्दर दास (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) श्री नारायण चतुर्वेदी (d) शांति प्रिय द्विवेदी
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

158. 'उसने कहा था' के मुख्य पात्र का नाम है—
(a) खालसा सिंह (b) करतार सिंह
(c) लहना सिंह (d) परमिंदर सिंह
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

159. निम्नलिखित में से कौन-सा नाटक प्रसाद का नहीं है ?
(a) जनमेजय का नागयज्ञ (b) स्कंदगुप्त
(c) ध्रुवस्वामिनी (d) सिन्दूर की होली
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

160. हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल को इस नाम से भी अभिहित किया जाता है—
(a) जीवनी काल (b) पद्य काल
(c) संस्मरण काल (d) गद्य काल
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

161. हिन्दी साहित्य में प्रयोगवाद के प्रवर्तक का नाम है—
(a) निराला (b) अज्ञेय
(c) पंत (d) जयशंकर प्रसाद

162. 'मृगनयनी' उपन्यास के रचनाकार हैं—
(a) उपेन्द्र नाथ अश्क (b) यशपाल
(c) जैनेन्द्र कुमार (d) वृन्दावन लाल वर्मा

163. जायसी किस धारा के कवि हैं—
(a) ज्ञानमार्गी काव्यधारा (b) प्रेमाख्यानक काव्यधारा
(c) नाथपंथी काव्यधारा (d) रासक काव्य धारा

164. निम्नलिखित में से कौन-सी पुस्तक प्रेमचन्द द्वारा लिखित नहीं है ?
(a) कायाकल्प (b) जय पराजय
(c) रंगभूमि (d) प्रेमाश्रम

165. 'कितने पाकिस्तान' नामक उपन्यास के लेखक हैं—
(a) राजेन्द्र कुमार (b) कमलेश्वर
(c) सत्य प्रकाश मिश्र (d) खुशवन्त सिंह
(हरियाणा बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2007)

166. 'मैथिल कोकिल' किसे कहा जाता है ?
(a) विद्यापति (b) अमीर खुसरो
(c) चंदबरदाई (d) हेमचन्द्र
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

167. 'प्रकृति के सुकुमार कवि' किसे कहा जाता है ?
(a) जयशंकर प्रसाद (b) सुमित्रानंदन पंत
(c) महादेवी वर्मा (d) निराला
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

168. 'एक भारतीय आत्मा' किसे कहा जाता है ?
(a) जयशंकर प्रसाद (b) माखनलाल चतुर्वेदी
(c) रामधारी सिंह दिनकर (d) सुमित्रानंदन पंत
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

169. 'कथा सम्राट' किसे कहा जाता है ?
(a) प्रेमचंद (b) जैनेन्द्र कुमार
(c) अज्ञेय (d) फणीश्वरनाथ 'रेणु'
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

170. बाल चित्रण में कौन-सा कवि श्रेष्ठ है ?
(a) रसखान (b) मीराबाई (c) सूरदास (d) कबीरदास
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

171. निम्नांकित प्रश्न में दी गई रचना के रचनाकार के सही विकल्प का चयन कीजिए—
उर्वशी
(a) रामधारी सिंह 'दिनकर' (b) सुमित्रानंदन पंत
(c) निराला (d) अज्ञेय
(आर.आर.बी. इलाहाबाद एकाउन्टेन्ट, 2010)

उत्तरमाला

1. (c)	2. (b)	3. (a)	4. (b)	5. (c)	6. (a)	7. (c)	8. (b)	9. (c)	10. (b)	11. (d)	12. (a)
13. (c)	14. (a)	15. (c)	16. (b)	17. (b)	18. (d)	19. (c)	20. (c)	21. (c)	22. (c)	23. (a)	24. (a)
25. (a)	26. (c)	27. (d)	28. (a)	29. (b)	30. (a)	31. (c)	32. (b)	33. (b)	34. (d)	35. (c)	36. (c)
37. (d)	38. (d)	39. (d)	40. (d)	41. (c)	42. (a)	43. (d)	44. (c)	45. (c)	46. (c)	47. (c)	48. (b)
49. (c)	50. (a)	51. (d)	52. (d)	53. (d)	54. (b)	55. (c)	56. (d)	57. (b)	58. (b)	59. (b)	60. (a)
61. (d)	62. (a)	63. (b)	64. (d)	65. (c)	66. (c)	67. (c)	68. (d)	69. (d)	70. (a)	71. (c)	72. (b)
73. (b)	74. (c)	75. (d)	76. (b)	77. (d)	78. (c)	79. (a)	80. (c)	81. (b)	82. (c)	83. (b)	84. (a)
85. (b)	86. (c)	87. (d)	88. (b)	89. (a)	90. (c)	91. (b)	92. (c)	93. (c)	94. (d)	95. (a)	96. (a)
97. (b)	98. (b)	99. (c)	100. (b)	101. (b)	102. (c)	103. (b)	104. (b)	105. (b)	106. (c)	107. (b)	108. (b)
109. (c)	110. (d)	111. (b)	112. (a)	113. (b)	114. (a)	115. (c)	116. (d)	117. (c)	118. (c)	119. (c)	120. (c)
121. (c)	122. (b)	123. (c)	124. (d)	125. (c)	126. (a)	127. (a)	128. (c)	129. (a)	130. (d)	131. (b)	132. (c)
133. (b)	134. (c)	135. (a)	136. (c)	137. (d)	138. (a)	139. (d)	140. (d)	141. (a)	142. (d)	143. (c)	144. (b)
145. (b)	146. (c)	147. (c)	148. (d)	149. (b)	150. (d)	151. (d)	152. (c)	153. (c)	154. (d)	155. (b)	156. (b)
157. (d)	158. (c)	159. (d)	160. (d)	161. (b)	162. (d)	163. (b)	164. (b)	165. (b)	166. (a)	167. (b)	168. (b)
169. (a)	170. (c)	171. (a)									

★★★